

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176689

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 81.092**
K18M

Accession No. **P. G. H166**

Author **कारुणिक , उमरावसिंह .**

Title **महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य 1946**

This book should be returned on or before the date last marked below.

महाकवि अकबर

और
उनका उर्दू काव्य

लेखक

स्व० उमरावसिंह कारुणिक बी० ए०

सम्पादक

चौधरी शिवनाथसिंह शारिङल्य

ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर, माछरा जिला-मेरठ

प्रकाशक—गोकुलबास धूत
नवयुग साहित्य-सदन इन्दौर
ने ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर
के लिए प्रकाशित की ।

चतुर्थ संस्करण
मूल्य ढाई रुपया
सन् १९४६ ई०

मुद्रक
अमरचंद
राजहंस प्रेस,
दिल्ली ।

दो शब्द

प्रयाग निवासी 'अकबर', सैयद अकबर हुसैन, उर्दू कविता की जान थे । आप गम्भीर-से-गम्भीर बात को भी बहुत ही थोड़े शब्दों में बड़ी खूबसूरती के साथ कह देते थे । आपके शेरों के विषय में भी हिन्दी के महाकवि बिहारी को दोहों के समान, यह कहा जा सकता है:—

‘देखन में छोटे लगें घाव करें गम्भीर’

उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि हाली कह गये थे —“शाहरी मर गई जिन्दा न अब होगी यारो , ” किन्तु अकबर ने हाली साहब के इस कथन को असत्य प्रमाणित कर दिया था । उर्दू शायरी में एक नया ही जीवन फूंक दिया था । गुले-बुलबुल तथा जुल्फे इश्क को बीसवीं-सदी की ‘अपटूडेट’ (Up-to-date) पौशाक पहिना दी थी ।

उर्दू साहित्य में युगान्तर उपस्थित करने वाले इस महाकवि से हिन्दी पाठकों का परिचय कराने के लिये ही यह पुस्तक लिखी गई है । अकबर की कविताओं का संग्रह उर्दू में ‘कुल्लियाते-अकबर इलाहाबादी’ के नाम से तीन भागों में प्रकाशित हुआ है । इस पुस्तक में तीनों भागों में से चुनकर भिन्न भिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाले शेर दिये गये हैं । इन शेरों को देखने से पाठकों का ‘अकबर’ के कल्पना-चातुर्य का बहुत कुछ ज्ञान हो जायगा । किन्तु ‘अकबर’ का पूरा महत्त्व तो उनके सारे शेरों को देखने से ही मालूम हो सकता है, क्योंकि उनका प्रत्येक शेर एक नई अदा लिये हुए है । लेखक का इस संग्रह के लिये शेर चुनने में बड़ी कठिनता हुई है; क्योंकि प्रत्येक शेर को देखकर

दिले-शौदा मचलता था कि हम ता ये हा लेवंगे ।

अकबर का कहने का ढंग बहुत साफ था । उनके कलाम में ऐसे

शब्द बहुत कम आये हैं, जिन को हिन्दी पाठक न समझ सकें। इसके अतिरिक्त इस संग्रह में ऐसे शेर जान बूझ कर नहीं लिये हैं जिन में विशेष कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है। फिर भी पाठकों की सुगमता के लिये प्रत्येक शब्द के नीचे कठिन शब्दों का अर्थ दे दिया गया है।

यदि पाठकों ने इस पुस्तक को अपनाया तो शीघ्र ही हिन्दी प्रेमियों की सेवा में अकबर का सचित्र तथा विस्तृत जीवन-चरित्र उपस्थित करने का विचार है।

लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध प्रेमी चौधरी शिवनाथसिंह जी शाण्डिल्य का बहुत ही कृतज्ञ है, जिनकी उदारता के कारण इस पुस्तक को हिन्दी पाठकों के सम्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मेरठ	}	उमरावसिंह कारुणिक,
१-१-२२		सम्पादक—‘ललिता’।

भूमिका

लेखक

देश भक्त राजा महेन्द्रप्रताप जी

अकबर उर्दू के महाकवि थे । वह हिन्दुस्तान के रत्न थे । उनकी कविता मोहक और निराली है । उनके शब्दों में विशेष आकर्षण-शक्ति है । उनकी कविता का अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है । जो उनकी कविता को पढ़ेंगे वे आप ही उनके कलाम के कमाल पर आश्चर्य हो जायेंगे । मैं यहाँ अधिक लम्बा चौड़ी भूमिका न बांध कर प्रिय पाठकों से 'अकबर' का काव्य-बाटिका में भ्रमण करने के लिये आग्रह करता हूँ । आइये हम और आप बुलबुल बनें और कविता के पुष्पों पर जान दें और जान दे दे कर आनन्दित हो ।

पर हाँ, एक बात कहे बिना नहीं रह सकता । सर्व साधारण के विचारानुसार अकबर मुसलमान थे और इसलिए उनकी कविता को हिन्दी में छाप कर विशेषतः हिन्दू भाइयों के कर कमलों में भेंट करना न केवल सुन्दर, मोहिनी कविता की कद्र करना है; वरन् देश की जटिल राजनैतिक समस्या को सुलझाने में भी योग देना है । इसलिये हम सभी को, जो तैंतीस करोड़ हिन्दुस्तानियों का भला चाहते हैं, इस कार्य के लिये इस पुस्तक के प्रकाशक श्रीमान् चौधरी शिवनाथसिंह जी शांडिल्य का अनुगृहीत होना चाहिये कि उन्होंने इस पुस्तक को छपाने का यत्न किया ।

लगे हाथों इस विषय पर मैं यह कह भी देना चाहता हूँ कि मेरे विचारानुसार एक पूर्ण कवि अथवा एक ज्ञानी पुरुष साधारण जाति या धर्म इत्यादि के बन्धनों से परे होता है । तब ही तो कवि लोग बहुत

सी ऐसी बातें कह जाते हैं जो साधारण विचारों के विरुद्ध होती हैं । वे इस प्रकार—किसी हद तक डरते-डरते—सर्व साधारण के विचारों को उदार कर देते हैं—उनकी आँखें खोल देते हैं । इसका उदाहरण 'गालिब' का यह शेर है:—

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन

दिल के खुश रखने को 'गालिब' ये खयाल अच्छा है ॥

हम अच्छे कवियों के दिलदादा हैं । परन्तु यह बता देना आवश्यक है कि प्रत्येक अच्छा कवि भी ज्ञानी नहीं होता । उसे कभी-कभी ज्ञान का प्रकाश दीखता है । साधारणतः कविगण अपनी इच्छाओं के प्रभाव में बहने को आनन्द मान बैठते हैं । इसलिए कवि आदर्श पुरुष बहुत कम होते हैं । वे प्राकृतिक बाटिका का दृश्य दिखाते हैं विद्वान् को चाहिये कि फूलों से लाभ उठाये और कांटों से बचे । जो मनुष्य अथवा जन समूह इस बात का विचार नहीं रखता । वह कविता से लाभ के बजाय हानि उठाता है । बस, इतना ध्यान रखिये और फिर कविता के कुञ्जों में रासलीला कीजिये ।

बाग बाबर,

काबुल ।

१८-६-१९२४ ।

—महेन्द्रप्रताप

महाकवि अकबर

उर्दू कविता

प्रत्येक देश की कविता उस देश के भूगोल तथा इतिहास का चित्र तथा वहाँ के रस्मों रिवाज तथा निवासियों के स्वभाव का प्रतिबिम्ब होती है। अतएव किसी भाषा की कविता को भली भाँति समझने के लिए उस देश का इतिहास तथा वहाँ के रिवाजों को जानना अत्यन्त आवश्यक है। महाकवि गालिव का एक शेर है :—

क्या रहूँ गुरवत में खुश, जब हो हवादिस का ये हाल ।

नामा लाता है वतन से नामावर अक्सर खुला ॥

शेर साफ़ है, किन्तु अर्थ समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि फ़ारिस में यह दस्तूर है कि बुरी खबर का खत खुला भेजा जाता है।

यद्यपि उर्दू ब्रज-भाषा से निकली है तथा भारतवर्ष ही की गोद में पली है, किन्तु फिर भी उर्दू के कवियों ने फ़ारस तथा तुरकिस्तान के कवियों का अनुसरण किया है। उपरोक्त देशों के विचारों तथा उपमाओं ने उर्दू कविता में इतना जोर पकड़ा है कि उनसे समता रखनेवाली भारतीय उपमाओं को बिल्कुल भुला दिया गया है। हाँ, 'सौदा' तथा 'इन्शा' ने कहीं-कहीं भारतीय उपमाओं का प्रयोग अवश्य किया है। यद्यपि भारतवर्ष में बुलबुल नहीं होती है, किन्तु उर्दू कवि के कान में बुलबुल ही का राग गूँजता है। कोयल की कू-कू तथा पपीहे की पी-पी उसे मस्त नहीं कर सकती। उर्दू कविता में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो खास फ़ारिस तथा तुरकिस्तान से सम्बन्ध रखती हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से विचारों में इन देशों में प्रचलित कथाओं के संकेत भी आ गये हैं। उदाहरणतः शमशाद, नरगिस, सम्बुल, बनफ़शा तथा सरू की उपमायें; लैला, शीरी तथा शमश्र का सौन्दर्य; मजनूँ, फ़रहाद, बुलबुल

तथा परवाने का प्रेम; मानी तथा बहज़ाद की चित्रकारी तथा रुस्तम की बहादुरी । अस्तु, उर्दू कविता का पूर्ण रूप से रसास्वादन करने के लिये इस प्रकार की बातों का जानना अत्यावश्यक है । इन सब बातों की व्याख्या यहाँ नहीं की जा सकती । ऐसा करने से एक छोटी-सी पुस्तक अलग ही तय्यार हो जाय । अतएव इस लेख में हम हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिये उर्दू कविता में प्रयुक्त कतिपय विशेष शब्दों ही पर कुछ प्रकारा डालने का प्रयत्न करेंगे ।

शराब ।

प्रायः प्रत्येक फारसी के कवि ने शराब की प्रशंसा की है । उर्दू कविता भी शराब की प्रशंसा में मार्ग से पीछे नहीं है ।* किन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि ये सब कवि शराबी थे या शराब को बहुत अच्छा समझते थे । इनमें बहुत से कवि बड़े मदाचारी तथा ईश्वर-भक्त हुए हैं । उदाहरणतः फारसी के प्रसिद्ध कवि 'हाफिज़', जिनकी कविता आदि से अन्त तक शराब की प्रशंसा से भरी पड़ा है, बड़े महात्मा थे । मुलतान टीपू के पुस्तकालय के सूचीपत्र के सम्पादक चार्ल्स स्टुअर्ट ने लिखा है—“हाफिज़ परहेज़गारी में मशहूर है । उसका सारा समय ईश्वर-पूजन में जाता था । ईश्वर-भक्त इसके काव्य को बड़े प्रेम से पढ़ते हैं । इसके काव्य को कुरान के अतिरिक्त शेष सब पुस्तकों से ऊँचा स्थान दिया जाता है ।”

*मस्ती वो बेखुदा में आसूदगी बहुत थी ।

पया न चैन हमने तरके-शराब करके ॥

—मीर

लुत्फे-मय क्या कहूँ तुझसे जाहिद ।

हाय कम्बरल तूने पी ही नहीं ॥

—दाग

जात यह है कि फ़ारसी, अरबी तथा उर्दू के कवियों ने शराब की प्रेम से उपमा दा है। शराब पीने पर आदमी के होश हवास ठीक नहीं रहते। प्रेम में भी ऐसा ही होता है। प्रत्येक समय प्रेम-पात्र का चित्र आंखों के सम्मुख रहता है; उसके अतिरिक्त और किसी बात का ध्यान ही नहीं आता। कोई उपदेशक या मित्र कितना ही क्यों न समझाय, कुछ समझ ही में नहीं आता। उपदेशक के उत्तर में प्रेमोन्मत्त यह ही कहता है:—

इतना तो बतादे मुझे ए नासहे-मुशफ़िक ।

देखा है कि उस माहे-लक़ा को नहीं देखा ॥

प्रेम तथा शराब के प्रभाव में इतनी अधिक समता होने के कारण शराब प्रेम का ऐसा उपमान हो गया है कि जहां कहीं शराब की प्रशंसा है वहां शराब से प्रेम का मतलब है। केवल इतना ही नहीं वरन् शराब-सम्बन्धी अन्य पदार्थ भी प्रेम ही के द्योतक हैं। उदाहरणतः साक़ी (शराब पिलाने वाला) से माशूक का मतलब होता है। महाकवि गालिब ने एक स्थान पर साफ़ तौर से लिखा है:—

हरचन्द हो मुशाहदये-हक़ की गुफ़्तगू ।

बनती नहीं है बाद़ओ-माग़िर कहे बग़ैर ॥

अर्थात् चाहे ईश्वर-दर्शन ही का विषय क्यों न हो, किन्तु फिर भी कविता में इस विषय पर लिखने के लिये शराब और प्याले का वर्णन करना ही पड़ता है।

आकाश ।

उर्दू कवियों का विचार है कि आकाश सदैव धूमता रहता है। यह किसी मनुष्य को सुखी नहीं देख सकता। हमारे सारे दुःखों का कारण आकाश ही है। इस कारण प्रत्येक उर्दू कवि ने आसमान को दो चार जली कटी अवश्य सुनाई है:—

ये दो दिल को यकजा बिठाता नहीं ।

किसी का वस्ल इसको भाता नहीं ॥

महाकवि ज़ौक मार्ग न मिल सकने के कारण ही आकाश की सीमा से बाहर निकल जाने की इच्छा पूर्ण न कर सके थे ।

अहाते से फलक के हम तो कब के ।

निकल जाते मगर रस्ता न पाया ॥

महशर या अन्तिम न्याय का दिन ।

मुसलमानों का विश्वास है कि एक दिन ऐसा आने वाला है कि संसार का अंत हो जायगा । उस दिन सूर्य पूर्व के स्थान में पश्चिम से निकलेगा । संसार के आरम्भ से जितने मनुष्य मरे हैं सब ईश्वर के सम्मुख उपस्थित होंगे । फरिश्ते (देवदूत) सब मनुष्यों के अच्छे-बुरे कामों की सूची ईश्वर के सामने रखेंगे । ईश्वर सब मनुष्यों का न्याय करेगा । जिसके काम अच्छे होंगे उनको बहिश्त (स्वर्ग) भेजेगा जहां पर शराब की नदियाँ तथा अप्सरायें उनको मिलेंगी । जिन मनुष्यों के कर्म अच्छे न होंगे उनको दोज़ख (नर्क) में डाला जायगा जहां बड़ी तेज़ आग जलता है । इस दिन को मुसलमान लोग रोज़े-कयामत या रोज़े-महशर अर्थात् अन्तिम न्याय का दिन कहते हैं । मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर बड़ा दयालु है । वह बहुत से पापियों को क्षमा भी कर देगा । इसके अतिरिक्त उन लोगों के विचारानुसार जो मनुष्य तोबा (पश्चात्ताप) कर लेते हैं उनके अपराध भी क्षमा हो जाते हैं । उर्दू कविता में इन विचारों का बहुत उल्लेख है । प्रायः कवियों ने रोज़े-कयामत की दुहाई दी है :—

करीब है यार रोज़े-महशर छिपेगा कुशतों का खून क्योंकर ।

जो चुप रहेगी ज़बाने-खन्जर लहू पुकारेगा आस्ती का ॥

—दाग

हे ये जुल्म चन्द रोज़ा है एक दिन इन्तक़ाम का भी ।
अमीर हम्माम गर्म करलें गरीब का भोपड़ा जलाकर ॥

—अमीर

उर्दू कवियों को यह आशा रहती है कि महशर के दिन तो अवश्य ही उनका और उनके माशूक का इन्साफ़ हो जायगा । यही सोच कर अपने मन को समाभूते रहते हैं । महाकवि गालिब को सन्देह हो गया था कि स्यात् ऐसा न हो । देखिये कंसा खेद प्रकट किया है :—

वाये गर मेरा तेरा इन्साफ़ महशर में न हो ।

अब तलक तो ये तवक्के है कि वां हो जायगा ॥

शम्स लखनवी का भी इस विषय का एक बहुत अच्छा शेर है जिसकी शोर्खी तथा सादगी की प्रशंसा नहीं हो सकती :—

बरोजे-हश्र शहीदों को है बड़ा दावा ।

मज़ा तो है जो न साबित हो जुर्म क़ातिल पर ॥

बहुत से कवियों ने ईश्वर की दयालुता तथा क्षमा पर भरोसा करके परलोक-चिन्ता को पास नहीं फटकने दिया है :—

वो करीम क्या नहीं है वो रहीम क्या नहीं है ।

कभी 'दाग' भूलकर भी न ग़मे-निजात करना ॥

महाकवि आतश तो क्षमा की आशा न रखने वालों को काफ़िर ही बतला गये हैं :—

बरख़्शे जायेंगे गुनहगारे—मौहब्वत अय ज़ाहिद ।

रहमते-अल्लाह से काफ़िर है जो मायूस है ॥

इश्क़

इश्क़ अर्थात् प्रेम दो प्रकार का होता है—मजाज़ी और हकीक़ी । इश्क़े-मजाज़ी का अर्थ है सांसारिक वस्तुओं या माशूक से प्रेम । इश्क़े-हकीक़ी ईश्वर-प्रेम को कहते हैं । इश्क़े-हकीक़ी को इश्क़े-कामिल

भा कहा गया है। सासारिक माशूक को माशूके-मजाज़ी कहते हैं तथा ईश्वर को माशूके-हकीकी। बहुत से उर्दू कवियों का यह भी विचार है कि इश्के-मजाज़ी, इश्के-हकीकी की सीढ़ा है।

बुत

बुत का अर्थ है प्रतिमा। अकबर ने निम्न लिखित पद्य में बुत शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है:—

काबे से जो बुत निकले तो क्या,
काबा ही गया जब दिल से निकल।
अफसोस कि बुत भा हमसे छुटे,
कब्जे से खुदा का घर भा गया ॥

किंतु उर्दू काव्य में यह शब्द तथा इसका पर्यायवाचा अरबी शब्द 'सनम' अधिकतर माशूक के लिये आता है। माशूक के निवास-स्थान को 'बुतखाना' या 'दैर' कहते हैं। आशिक 'सनम परस्त' ता 'बुत परस्त' कहा जाता है। राज-कवि दारा के निम्न लिखित पद देखिये:—

कुछ और भी तुझे अय दारा बात आती है।
वही बुतों की शिकायत वही गिला दिल का ॥
जब 'दारा' का ढूँढा किसी बुतखाने में पाया।
घर में कभा उस मरदे-खुदा को नहीं पाया ॥

काफिर

कुरान के अनुसार वे लोग काफिर हैं जो ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे की प्रार्थना इस आशा से करते हैं कि उससे वह प्राप्त हो जो केवल ईश्वर के अधिकार में है। किंतु उर्दू-कवियों ने इस शब्द का प्रयोग अधिकतर अपने माशूक के लिये किया है:—

मौहब्बत में नहीं है फर्क जीने और मरने का।

उसी को देखकर जीते हैं जिस फाफिर पै दम निकले ॥

किसी २ स्थान पर कवियों ने अपने आपको भी 'इश्क का काफिर' कहा है:—

काफिरे-इश्कम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त ।

हर रंगे-मन तार गश्ता हाजते-जुन्नार नेस्त ॥

अर्थात् मैं तो प्रेम का काफिर हूँ । मुझे मुसलमान होने की आवश्यकता नहीं है । मेरी तो नस नस में तार गया हुआ है, मुझे जनेऊ पहनने की आवश्यकता नहीं है ।

वाइज़ या नासह

वाइज़ या नासह का अर्थ है धर्मोपदेशक, किंतु उदूँ कविता में यह शब्द उन मनुष्यों के लिये आता है जो ज़ाहिरी ढांग ही को धर्म समझते हैं तथा ज़ाहिरी ढांग को न मानने वाले ईश्वर भक्तों को पथ-भ्रष्ट समझ कर उनको उपदेश देते हैं । प्रायः प्रत्येक उदूँ-कवि ने वाइज़ या नासह की ग्लुश्की उड़ाई है:—

कहां मयग्वाने का दरवाज़ा 'गालिब' और कहां वाइज़ ।

पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले ॥

—गालिब

शेख तथा ज़ाहिद

शेख वजुग को कहते हैं । ज़ाहिद का वास्तविक अर्थ है परहेज़गार । किंतु उदूँ-कवियों ने अधिकतर पाग़ंडी मनुष्यों के लिये इन शब्दों का प्रयोग किया है । इसी कारण उदूँ-कविता में स्थान २ पर शेख तथा ज़ाहिद का हंसी उड़ाई गई है:—

हुआ है चार मिजदों पर ये दावा, ज़ाहिदों, तुमको ।

खुदा ने क्या तुम्हारे हाथ जन्नत बेच डाली है ॥

किसी की तो ज़ाहिद को होती मौहब्बत ।

बुतों की न होती, खुदा की तो होनी ॥

ये शेखजी जो मुसल्ला बिछाये बैठे हैं ।
 बुतों की याद में आसन जमाये बैठे हैं ॥
 किसी पर मर मिटे होंगे मये-गुलगूँ भी पी होगी ।
 जवानी में जनाबे शेख ने क्या कुछ न की होगी ॥
 शेख इस रेशे-मुक्तता पै ये भूठी बातें ।
 शर्म भी तुझको कुछ, अय मरदे-खुदा नहीं आती ॥
 अकबर ने 'शेख' शब्द का दोनों अर्थों में प्रयोग किया है ।

सूफी

सूफी शब्द स्यात् अरबी शब्द 'सूफ' से निकला है । 'सूफ' के अर्थ ऊन और पश्मीने के हैं । ईरान में साधु बहुधा ऊनी वस्त्र पहना करते हैं । यह भी सम्भव है कि यह शब्द फारसी शब्द 'सूफ' (साफ तथा दुष्प्राप्य) या यूनानी शब्द 'सूफिया' (बुद्धिमत्ता) से निकला हो । सूफियों का मत (तसव्वुफ) वेदान्त से बहुत कुछ मिलता है । सूफियों का कहना है कि सब आत्मायें ईश्वर से निकली हैं और अन्त में उसी की ओर फिर लौट जायेंगी । जो कुछ उसने बनाया है सब में उसी की आत्मा है और वही उसमें है । ईश्वर-प्रेम के अतिरिक्त सब बातें व्यर्थ हैं । संसारिक जीवन माशूक (ईश्वर) की जुदाई का जमाना है । कट्टर मुसलमान सूफियों को रिन्द—मजहबी बातों का न मानने वाला—कहते हैं । किंतु फारसी तथा उर्दू के पायः सभी कवियों ने सूफियों का अनुकरण करने ही में अपना गौरव समझा है और अपने लिये निर्भीक अर्थ में रिन्द शब्द का प्रयोग किया है ।

बिरहमन

बिरहमन शब्द का भी उर्दू कवियों ने बहुत प्रयोग किया है । उर्दू कविता में यह शब्द सौन्दर्योपासक या सूफी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

शीरीं और फरहाद

शीरीं अपने समय की ईरान की बहुत ही रूपवती महिला थी। फरहाद एक चीनी चित्रकार था। दोनों एक दूसरे पर मोहित थे। ईरान का बादशाह खुसरू भी शीरीं पर मोहित हो गया और ज़िम प्रकार बना उसको महल में ले आया। किंतु शीरीं सदैव फरहाद की याद में रोती रहती थी। एक दिन खुसरू ने शीरीं से कहा, “यदि फरहाद को तुझसे सच्चा प्रेम है तो मुझे उसकी परीक्षा करा दे।” शीरीं ने कहा, “किस प्रकार?” बादशाह ने कहा, “फरहाद से कह कि पहाड़ से महल तक एक नहर निकाल दे।” शीरीं ने कहा, यदि उसने ऐसा कर दिया तो क्या पुरस्कार?” बादशाह ने उत्तर दिया, “मैं तुझे ही पुरस्कार रूप में उसे दे दूंगा। शीरीं के कहने से फरहाद ने नहर खोद दी। अब तो बादशाह बहुत घबराया। उसने फरहाद के पास कहला भेजा कि शीरीं मर गई। यह सुनते ही फरहाद ने आत्म-हत्या कर ली। जब शीरीं को इस बात का पता चला तो उसने भी आत्म-हत्या कर ली।

कैस (मजनूँ) और लैला

कैस, जो मजनूँ के नाम से प्रसिद्ध है, अरब के नज्द नामक प्रांत का रहनेवाला था। वह लैला नामक एक अरब रमणी के प्रेम में इतना उन्मत्त था कि तन बदन की भी कुछ सुध न रखता था। उर्दू के अधिकांश कवियों ने फरहाद और मजनूँ की बराबरी की है या इनसे भी बढ़कर होने का दावा किया है:—

कैसो-फरहाद के किस्से तो सुना करते हो लेकिन।

दाद दो इसकी हमने तुम्हें चाहा कैसा ॥

यूसुफ और जुलैखा

यूसुफ मुसलमानों के एक पैगम्बर थे। आप किनान देश के रहने वाले थे। कहा जाता है कि संसार का तीन चौथाई सौन्दर्य आपके हिस्से

में आया था। आपके भाइयों ने ईर्ष्या के कारण आपको एक मिश्र के सौदागर के हाथ बेच दिया था। उस सौदागर ने मिश्र पहुँच कर आपको वहाँ के राजा के हाथ बेच दिया। उसकी स्त्री आपके सौन्दर्य पर आसक्त हो गई। उसने आपको वशीभूत करने का बहुत कुछ प्रयत्न किया किंतु आप उसकी बातों में क्या आने वाले थे। चिढ़ कर उसने आपको बन्दी-गृह में डलवा दिया और अनेक कष्ट दिये। अंत में राजा को सच-सच हाल मालूम हो गया। उसने आपको अपना युवराज बना लिया। कुछ दिनों बाद आप मिश्र के राजा हो गये। आपके विरह में रोते २ आपके पिता याकूब की आंखों की ज्योति जाती रही थी। यह समाचार सुनकर उनकी आंखों में फिर से ज्योति आ गई। उर्दू कवियों ने अपना काव्यता में मिश्र के बन्दीगृह, हजरते-याकूब की आंखों की ज्योति तथा यूसुफ के सौन्दर्य का बहुत वर्णन किया है और अपने माशूक को यूसुफ के नाम से पुकारा है:—

तुम वो यूसुफ हो कि अच्छा भी तमाशाई हो।

दीदये-हजरते—याकूब की बीनाई हो ॥

खिज़्र

हजरते-खिज़्र मुसलमानों के एक पैगम्बर थे। मुसलमानों का विश्वास है कि आप अब तक जीवित हैं और भूले-भटकों को रास्ता बताते हैं। महाकवि दाग का शेर है:—

हम एक रस्ता गली का उसकी दिखाके दिल को हुवे पशेमा

ये हजरते-खिज़्र को जिता दो किसी की तुम रहबरी न करना ॥

मन्सूर

मन्सूर ईरान देश का एक सूफा था। उसको “अहं ब्रह्म” का ज्ञान होगया था, और वह ‘अनल हक’ अर्थात् ‘मैं खुदा हूँ’ ‘या खुदा से मिल गया हूँ’ कहा करता था। उस समय के मौलवी इस तत्त्व

उदूँ कविता

को कहा समझ सकते थे । उस पर नास्तिकता का अभियोग लगाया गया और उसको फांसी दे दी ।

शैतान

जब खुदा ने आदम को पैदा किया तो फरिश्तों को हुक्म दिया कि इसको सिजदा करो । शैतान के अतिरिक्त सब फरिश्तो ने सिजदा किया । शैतान बोला, 'तूने मुझे आग से पैदा किया है । आदम को मिट्टी से बनाया है । मैं आदम को सिजदा क्यों करूँ ?' खुदा को शैतान का यह गर्व बुरा मालूम दिया । उसने शैतान को बहिश्त से निकल जाने की आज्ञा दी । शैतान ने अपनी पूजा का पुरस्कार मांगा । ईश्वर ने कहा, 'मांग क्या मागता है ?' शैतान ने जवाब दिया, 'मुझे कयामत के दिन तक का जीवन मिल जाय ।' खुदा ने यह बात स्वीकार कर ली । अब शैतान खुशी से उछला और बोला, 'अब मैं तेरे बन्दों को बहकाया करूँगा ।, खुदा ने कहा, 'जो मेरे भक्त हैं कदापि तेरे बहकाये मे नहीं आयेंगे ।'

आदम और हौवा

मुसलमानों के अनुसार आदम वह सबसे पहले मनुष्य हैं जिनको खुदा ने बिना मा बाप के पैदा किया था । हौवा उनकी स्त्री का नाम था । दुनिया में आने से पहले ये दोनों बहिश्त में रहते थे । ईश्वर ने इनको गेहूँ के पेड़ का फल खाने के लिये मना कर दिया था । शैतान ने अवसर पाकर हौवा को गेहूँ के वृक्ष का फल स्वयं खाने तथा अपने पति को खिलाने के लिये बहकाया । हौवा उसके बहकाये में आ गई । इस पर खुदा ने क्रुद्ध होकर उन्हें बहिश्त से निकाल दिया । महा कवि गालिले ने निम्न लिखित शेर में इसी घटना की ओर इशारा किया है:—

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन ।

बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले ।।

ईसा या मसीह

ईसाई धर्म के संचालक ईसा को मुसलमान भी एक पैगम्बर मानते हैं । ईसा के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह प्रत्येक प्रकार के रोगी को अच्छा कर देते थे, यहां तक कि मुर्दों को भी जिला देते थे । माशूक की कृपा-दृष्टि से आशिक का सारा रोग दूर हो जाता है । इस कारण उर्दू-कवियों ने अपने माशूक को ईसा या मसीह के नाम से पुकारा है ।

वादा है मेरे मसीहा से यहां आने का ।

एक दम और न आये जो अजल आई हो ॥

महाकवि अकबर

हैं और भी दुनिया में सखुनवर बहुत अच्छे ।

कहते हैं कि गालिब का है अन्दाजे-बयां और ॥

—गालिब ।

यों तो उर्दू में गालिब आदि अनेक एक से एक बढ़कर कवि हुवे हैं, किन्तु प्रयाग-निवासी स्वर्गीय अकबर भी अपने ढंग के अद्वितीय तथा अनुपम कवि थे । आपने उर्दू-कविता को गुलोबुलबुल तथा जुल्फों के फन्दे से निकालकर समय के अनुसार उसमें एक प्रकार का नया जीवन डाल दिया था । अकबर केवल कवि ही नहीं थे वरन् बड़े तत्त्ववेत्ता तथा धार्मिक पुरुष भी थे । आपके प्रत्येक शेर से सजीवता के साथ साथ सुधार तथा धार्मिक विचार टपकता है । जिस रङ्ग में आपने कविता की है, उस रङ्ग में उर्दू तो क्या अन्य किसी भी देशीय भाषा के किसी कवि ने नहीं की । आपने एक नई ही शैली की कविता की और स्यात् उस शैली को अपने ही साथ ले भी गये हैं ।

तेरे बाद 'अकबर' कहाँ ऐसी नजमें ।

वो दिल ही न होंगे कि ये आह निकले ॥

जो काम अच्छे २ वक्ताओं की लम्बी चौड़ी वक्तृताएं नहीं कर सकतीं, वह काम आपका शेर कर सकता है । सच तो यह है कि आपने गागर में सागर बन्द कर दिया है । आपको अपने समय का उर्दू का सबसे बड़ा कवि कहना अत्युक्ति न होगी ।

आपका जन्म सन् १८४६ ई० में प्रयाग से दस बारह कोस की दूरी पर बारा नामक कस्बे में हुआ था । आप सय्यद रिज़वी बन्श में से थे ।

आपके पिता सत्यदत्त फ़ज़ल हुसैन बड़े ही धार्मिक पुरुष थे। आप पर भी अपने पिता के धार्मिक जीवन का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

आपकी आरम्भिक शिक्षा बहुत ही साधारण हुई थी। आपके पिता का विचार था कि दो बातों की शिक्षा ही आवश्यक है; एक तो व्याकरण की तथा दूसरे गणित-शास्त्र की। इस कारण आरम्भ में आपको साधारण गणित सिखाया गया था तथा कुछ अरबी, फ़ारसी की पुस्तकें तथा व्याकरण पढ़ाया गया था। उस समय किसी को ध्यान भी नहीं हो सकता था कि यह लड़का एक दिन उर्दू का महाकवि हो जायगा। किन्तु कविता पुस्तकों के अध्ययन से नहीं आती। अंग्रेज़ी की कहावत ठीक ही है :—

Poets are born not made.

अर्थात् कवि उत्पन्न होते हैं, बनाये नहीं जाते।

चौदह वर्ष की अवस्था में आपको अंग्रेज़ी का भी शौक हुआ। घर पर ही आपने अंग्रेज़ी की अच्छी योग्यता प्राप्त करली। यह वह समय था जब अरबी, फ़ारसी जाननेवाले राह चलते मिलते थे, किन्तु अंग्रेज़ी जानने वाला कठिनता से कहीं दिखाई पड़ता था। सन् १८६७ ई० में आपने वकालत की परीक्षा पास करली। उन दिनों वकालत की परीक्षा में बैठने के लिये एन्ट्रेंस आदि किसी अन्य परीक्षा पास करने की क़ैद नहीं थी। परीक्षा पास करने के दो वर्ष बाद आप नायब तहसीलदार हो गये। इसके एक वर्ष पश्चात् ही आप हाईकोर्ट के मिस्टर पढ़ने वाले नियत कर दिये गये। सन् १८८१ ई० में आपको मुन्सिफ़ी का पद मिल गया। आप अपने कार्य को बड़ी योग्यता तथा ईमानदारी से करते थे। इस कारण आपकी ख्याति सरकार तक पहुँच गई थी। आप सन् १८८८ ई० में सदर उल्-सदूर हो गये। इसके पश्चात् शीघ्र ही सन् १८९२ ई० में आप अदालत खफ़ीफ़ा के जज नियत कर दिये गये। सन् १८९४ ई० में आपने डिस्ट्रिक्ट सेशन जज का भी काम किया। सन् १८९८ ई० में सरकार ने आपको 'खान बहादुर' की पदवी देकर अपनी गुण-ग्राहकता

का परिचय दिया। किन्तु सरकार से सम्मान पाने से आपको कुछ प्रसन्नता नहीं होती थी। एक स्थान पर आपने लिखा है :—

नेशनल वक्रग्रत के गुम होने का है 'अकबर' को गम।

आफिशल इज्जत का उसको कुछ मज़ा मिलता नहीं ॥

आप हाईकोर्ट के जज भी होने वाले थे। किन्तु सन् १९०२ ई० में आप 'रिटायर' होगये और पेन्शन ले ली। आपका कहना था :—

जज बनाकर अच्छे अच्छों का लुभा लेते हैं दिल।

हैं निहायत खुशनुमा दो 'जोम' उनके हाथ में ॥

किन्तु आप पहले ही से सचेत थे और इस जाल में नहीं फंसे। पेन्शन लेने के बाद आप प्रयाग में अपनी 'इशरत मञ्जिल' नामक कोठी में रहने लगे। परन्तु सुवर्ण-वर्षक जीवन व्यतीत करना आपके भाग्य में नहीं बड़ा था। आपको मांतिवाबिन्द का रोग हो गया।

सात वर्ष तक आप इस रोग से पीड़ित रहे। सन् १९०६ ई० में आपने कलकत्ते जाकर 'नशतर' लगवाया जिसके कारण आपकी आंखों में फिर ज्योति आगई। किन्तु काल-चक्र ने फिर भी चैन न लेने दिया। कोई दस ही महीने बाद २४ अक्टूबर सन् १९१० ई० को आपकी धर्म-पत्नी का स्वर्गवास हो गया। थोड़े ही दिनों बाद आपका जवान बेटा हाशिम, जिसे आप बड़ा प्यार करते थे, काल का ग्रास होगया।

आगोश से सिधारा मुक्त से ये कहने वाला।

अब सुनाइये तो क्या आपने कहा है ॥

अशआरे हसरत-आगीं कहने की ताब किसको।

अब हर नज़र है नौहा हर सांस मरसिया है ॥

१ आपने अपने बड़े लड़के सय्यद इशरत हुसैन वी० ए० (कैप्टन) के नाम पर अपनी कोठी का नाम 'इशरत मञ्जिल' रखा था।

आपने इन सब आपदाओं को अत्यन्त धैर्य-पूर्वक सहा और मृत्यु-पर्यन्त ईश्वराधना तथा कविता देवी की उपासना में लगे रहे । ६ सितम्बर सन् १९२१ ई० को ७५ वर्ष की अवस्था में उर्दू-साहित्य का यह सूर्य सदैव के लिये अस्त होगया ।

हक मगफ़रत करे अजब आज़ाद मर्द था ।

कविता

आरम्भ में अकबर प्राचीन शैली के अनुसार 'ग़ज़ल' ही लिखा करते थे । प्रयाग के एक उर्दू-कवि 'वहीद' आपके काव्य-गुरु थे । सबसे पहले २१ वर्ष की अवस्था में आपने मशायरे में ग़ज़ल पढ़कर अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय दिया । पाठकों के विनोदार्थ हम उस ग़ज़ल के पांच चार शेर नीचे देते हैं :—

समझे वही उसको जो हो दीवाना किसी का ।
 अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का ॥
 गर शेख़ो-बिरहमन सुनें अफ़साना किसी का ।
 माविद न रहे काब्यों बुतख़ाना किसी का ॥
 अल्लाह ने दी है जो तुम्हे चांद सी सूरत ।
 रोशन, भी करो जाके सियहख़ाना किसी का ॥
 अशक़ आंखों में आजाये एवज़ नींद के साहब ।
 ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसी का ॥
 हम जान से बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर' ।
 जब से दिले बेताब है दीवाना किसी का ॥

आठ दस वर्ष तक आप इसी रंग में कविता करते रहे । किन्तु आपकी प्रतिभा ग़ज़ल की चारदीवारी में कबतक बन्द रह सकती थी । महाकवि 'ग़ालिब' के कथनानुसार :—

बक्रद शौक नहीं जफें-तंगनाये-गज़ल ।

कुछ और चाहिये वसअत मेरे बयां के लिये ॥

अर्थात् जो कुछ मुझको लिखना है वह गज़ल में नहीं लिख सकता ।
अतएव अब कोई और शैली ग्रहण करनी चाहिये ।

सन् १८७६ ई० में लखनऊ से 'अवध-पंच' नामक पत्र प्रकाशित होना आरम्भ हुआ । इस पत्र में उस समय के प्रायः सभी विख्यात लेखक समाज, दर्शन, राजनीति आदि गूढ़ विषयों पर हास्य-रस-पूर्ण लेख लिखा करते थे । आपने भी अपना रंग बढला और अवध-पंच के लिये गद्यात्मक तथा पद्यात्मक लेख लिखने लगे । आपने अपनी एक नई शैली निकाली और उसमें प्रशंसनीय सफलता भी प्राप्त की । यद्यपि आपकी पुरानी शैली की गज़लें भी खूब हैं, किन्तु फिर भी आपका पुरानी शैली का काव्य आपके नई शैली के काव्य के सामने बिलकुल फीका है ।

अकबर ने प्रेम, धर्म, समाज-सुधार, राजनीति आदि सब ही विषयों पर कविता की है, स्यात् ही कोई ऐसी राजनैतिक या सामाजिक समस्या हो जिस पर आपने अपनी चित्ताकर्षक तथा अनुपम युक्तियों द्वारा यथोचित प्रकाश न डाला हो ।

१—हास्य तथा जिन्दा दिली ।

अकबर बड़े ही जिन्दा दिल मनुष्य थे । रोटों को हंसा देना और मुर्झाये हुवे दिलों को खिला देना इनके बांयें हाथ का काम था । आप इस बात के मानने वाले थे :—

जिन्दगी जिन्दा दिली का है नाम ।

मुरदा दिल खाक जिया करते हैं ॥

एक बार आप अपने लड़के इशरत अली से, जो सीतापुर में डिप्टी कलक्टर थे, मिलने गये थे । अकबर मादा कपड़े पहना करते थे । इस कारण डिप्टी साहब के मित्र आपको कोई साधारण मनुष्य समझ कर

आपकी ओर से उदासीन से रहे। उन मित्रों में एक अकबर को पहचानने वाले भी थे। उन्होंने चुपके से अपने साथियों को संकेत किया कि आप डिप्टी साहब के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर तो डिप्टी साहब के मित्र आपके साथ बड़े आदर-सत्कार के साथ बातें करने लगे। अकबर सब बातें ताड़ गये थे, किन्तु चुप रहे और कुछ न बोले। थोड़ी देर बाद बातों २ में आपने कहा—‘मियां! और भी कुछ मालूम है? सुना है योरप में अल्लाह मियां आये हैं। सब लोग अकबर की ओर आवाक़ दृष्टि से देखने लगे। आपने फिर कहा—“हां! मुझे बहुत ही विश्वासनीय सूत्र से पता चला है। और एक बात और मझे की हुई। योरप में किसी ने अल्लाह मियां की बात तक न पूछी। इतने में किसी आदमी ने बतलाया कि अल्लाह मियां खुदाघन्द यूसू मसीह के पिता हैं। यह बात मालूम होने पर अल्लाह मियां की बड़ी आवभगत हुई।”

अकबर ने उपरोक्त बातें बड़े गम्भीर भाव से इस प्रकार कहीं मानों किसी विश्वसनीय समाचार-पत्र का समाचार-कालम पढ़ रहे हों। किन्तु डिप्टी साहब के मित्र समझ गये कि संकेत हमारी ही ओर है और लज्जा के कारण सब की नीची निगाहें हो गईं।

एक और घटना सुनिये। प्रयाग की प्रदर्शनी में भारतवर्ष में पहले पहल वायुयान आये थे। जिस समय आकाश में वायुयान उड़ने का शब्द हुआ तो अकबर अपने मित्र श्रीयुत ख्वाजा हसन निजामी को साथ लेकर छत पर गये और वायुयान को उड़ता देखकर बोले—“तुम समझे भी अंग्रेज लोग क्या कहते हैं?” ख्वाजा साहब ने जवाब दिया कि मैं कुछ नहीं समझा। आपने कहा—‘अंग्रेज लोग कहते हैं अब हम उड़ते हैं।’ “भाई हम कब मना करते हैं। खुशी से उड़ो।”

इस प्रकार अकबर का सारा जीवन लतीफों से भरा पड़ा है। यदि सब लतीफों का वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक अलग तैयार हो जाय। अकबर की कविता की सर्वप्रियता का रहस्य ही यह है कि आपकी कविता के शब्द २ से रस निकलता है।

सन् १९२० की बात है। देश में असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। भारत-सरकार इस आन्दोलन को दबाने के लिए तरह-तरह की युक्तियों का काम ले रही थी। हजारों भारतीयों को जेलखानों में डाल दिया गया था। 'अमन सभाओं' के नाम से सरकार-परस्तों की सभायें कायम की गई थीं, जिनका उद्देश्य इस आन्दोलन के विरुद्ध काम करना था। संयुक्त प्रान्त में मिस्टर जे० ई० गौज, आई० सी० एस० नामक सज्जन पब्लिसिटी आफिसर थे।

असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार करना इस महकमे का खास काम था। मिस्टर गौज महाकवि अकबर और उनकी भावपूर्ण कविताओं से अच्छी तरह परचित थे। देशों के उत्थान और पतन में कवियों का बहुत बड़ा भाग रहा है। इस बात को भी वे अच्छी तरह जानते थे। अतः मिस्टर गौज ने सोचा कि कवि अकबर से कुछ ऐसी कवितायें लिखाई जाय, जिनसे असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध प्रचार करने में सहायता मिल सके।

अकबर राजनीति पर जो कुछ लिखते उसे प्रकाशित न कराते, बल्कि बहुत छिपाकर रखते थे। मिस्टर गौज को मालूम न था कि हजरत अकबर दिल से असहयोग के समर्थक बन चुके हैं।

कवि अकबर को सरकार से पेन्शन भी मिलती थी, इसलिये मिस्टर गौज को पूरी आशा थी कि वे (अकबर) उनकी बात न टाल सकेंगे। अतः उन्होंने अपना एक मुख्य कर्मचारी हजरत अकबर के पास भेजा। इन दिनों बुढ़ापे की कमजोरी के कारण अकबर का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। जिस वक्त सरकारी कर्मचारी उनके पास पहुँचा, वह चारपाई पर लेटे हुए थे। मिस्टर गौज की फरमायश का हाल सुनकर इन्होंने उस कर्मचारी की ओर आश्चर्य से देखा और कहा—

कहाँ के गौज कहां के गांधी।

आगई अब तो मौत की आंधी ॥

महाकवि अकबर का यह शेर सुन कर पास बैठे हुए लोग हंसने लगे,

और वह सज्जन वहां से भेंपकर चले गये। इस घटना की उसी दिन काफी चरचा होगई और मिस्टर गौज को बहुत लज्जित होना पड़ा।

एक और लतीफा सुनिये। महाकवि अकबर के साहबजादे मौलवी इशरत हुसेन साहब (रिटायर्ड कलक्टर) मुझसे फरमाते थे कि एकबार प्रयाग में कृषि प्रदर्शनी हुई थी। खान बहादुर मिस्टर मोहम्मद हादी डिप्टी कमिश्नर उक्त प्रदर्शनी के मुख्य प्रबन्धकों में से थे। वे वालिद साहब के वाकिफकार थे। जब एक दिन शाम को मैं नुमायश देखने जाने लगा और वालिद से इजाजत चाही, तो कुछ सोचकर वे मुस्कराये और कहा—“अच्छा, वहां तुम्हें हादी साहब मिलेंगे, मैंने एक शेर कहा है उन्हें सुना देना।

हादिये दीं तो नुमायश में कोई था ही नहीं,

हादिये दुनिया थे वह हल जोतना सिखला गये।

जब मैंने हादी साहब को यह शेर सुनाया तो वह बहुत हंसे और इसे पढ़ कर बहुत देर तक लुत्फ लेते रहे।

अकबर वास्तव में आशु-कवि थे। मौके २ पर हस्व हाल शेर कहने और चमत्कार पूर्ण उत्तर देने में उन्होंने कमाल हासिल किया था। उर्दू भाषा के धुरन्धर लेखक और हजरत अकबर के घनिष्ठ मित्र ख्वाजाहसन निजामी साहब मुझसे कहते थे कि एक बार हजरत अकबर मेरे मकान पर बैठे हुए थे। मेरी बच्ची हूरबानू आलुओं से खेल रही थी। हजरत अकबर ने पूछा—“हूर, यह आलू कौन लाया था?” हूरबानू ने जवाब दिया—“मेरे खालू लाये थे।” हजरत अकबर ने कहा :—

लाये हैं खरीद कर बाजार से आलू अच्छे,

इसमें शक नहीं है कि हैं हूर के खालू हैं अच्छे।

ख्वाजा साहब ने हजरत अकबर की हाजिर जवाबी का एक और मजेदार किस्सा सुनाया। ख्वाजा साहब एक मशहूर पीर हैं। उनके मुरीदों में सेठ साहूकार अमीर गरीब स्त्री पुरुष सभी तरह के लोग हैं।

एक दिन कुछ वैश्यायें उनकी जियारत के लिए आई हुई थी। इतिफाक से हजरत अकबर भी उस समय ख्वाजा साहब के पास बैठे थे। जब वे वैश्यायें चली गईं, तो हजरत अकबर ने व्यंग करते हुये फरमाया—“ख्वाजा साहब ! मेरा तो अब तक यही खयाल था कि जनाब के पास सिर्फ ‘जिन’ ही आते हैं, लेकिन आज मालूम हुआ कि हूरे भी हाजिरी देती हैं।

सन् १६११ की प्रयाग की नुमायश में कलकत्ते की प्रसिद्ध नर्तकी गौहरजान को भी बुलाया गया था। उन दिनों बोलते फिल्म और रेडियो नहीं थे, लेकिन गौहरजान की शोहरत सारे हिन्दोस्तान में फैली हुई थी। जब हजरत अकबर के एक दोस्त ने उनसे गौहरजान की नृत्य-कला और गायन-विद्या की तारीफ की, तो हजरत अकबर ने फरमाया :—

खश नसीब आज यहां, कौन है गौहर के सिवा,
सब कुछ अल्लाह ने दे, क्या है शौहर के सिवा।

जरा शौहर (पति) शब्द पर गौर कीजिए। कितना हास्य, व्यंग और चमत्कार भरा हुआ है ?

लार्ड कर्जन ने अपनी एक स्पीच में हिन्दोस्तानियों को भूठा बतलाया था। अकबर उस समय लखनऊ में थे। जब उन्होंने यह स्पीच सुनी, तो बोले—“भाई क्या बात है। तुम भी लार्ड करजन से जाकर कह दो :—

भूठे हैं हम तो आप हैं भूठों के बादशाह।”

महाकवि अकबर ने अपनी कविता में उर्दू लफ्जों के साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग इस खूबसूरती से किया है कि कविता में अपूर्व माधुर्य पैदा हो गया है। इस काम में उन्हें ऐसा कमाल हासिल था कि आज तक दूसरे कवि को नसीब नहीं हुआ। इस तरह के उनके अनेक शेर हैं। एक बड़ी मनोरञ्जक घटना है। अवध के एक मशहूर मुसलमान शिया अकीदा रखते थे, उसके बाद वे सुन्नी हो गये और फिर थोड़े दिनों बाद

अपने को शिया कहने लगे । इन हजरत के सम्बन्ध में अकबर ने कहा था :—

मुजक्कर के लिए ही (he) है,
मुअन्नस के लिए शी (she) है ।
मगर हजरत, मुखन्नस है,
न हीओं में, न शीओं में ।

अकबर साहब कहते हैं कि मुजक्कर (पुलिङ्ग, पुरुष) के लिए 'ही' (he) शब्द का प्रयोग होता है और मुअन्नस (स्त्रीलिंग, स्त्री) के लिये शी, (she) लपज इस्तेमाल होता है । लेकिन ये हजरत स्त्री या पुरुष किसी भी श्रेणी में नहीं आते, बल्कि मुखन्नस (नपुंसक) हैं ।

हजरत अकबर के रिश्तेदार मौलाना शौकत हुसैन साहब तहसीलदार कहते थे कि जिस समय मैं इलाहाबाद में था, हजरत अकबर कभी २ मेरे यहां आया करते थे । एक रोज इतवार की छुट्टी थी । मैं घर पर कुछ सरकारी कागजात देख रहा था । अकबर आये और कहने लगे—भाई तुम्हें छुट्टी के दिन भी फुरसत नहीं मिलती । मैंने जवाब दिया जी हा, एक जरूरी मिसल देखनी है ।' यह सुनकर हजरत अकबर ने फरमाया—

संडे को भी जाता हूँ तो फरमाती है वह मिस ।

क्या कहर है संडे को भी संडा नहीं टलता ॥

अलीगढ़ में मुसलमानों में सबसे पहले अब्दुल गफूर खा नामक एक रईस ने करजन फैशन रक्खा था । अब तो करजन फैशन साधारण सी बात ही होगई है, किन्तु उस समय नई बात होने के कारण लोगों को उज्जलियां उठती थीं । फिर अकबर तो धार्मिक मुसलमान थे । इन्हें डाढ़ी का मुंडवाना किस प्रकार पसन्द आता ? कहने से चूकने वाले न थे । महाकवि गालिब के अनुसार 'सर जाये या रहे, न रहे पर कहे बगेर' । एक दिन जब अब्दुल गफूरखां अपने मित्रों में बैठे थे तो आप बोले —

देख अब्दुल गफूर खां की तरफ । मर्दे-खुश-हाल इसको कहते हैं ॥

चार अबरु का यां सफाया है । फारिग-उल्-बाल इसको कहते हैं ॥

‘फ़ारिश-उल्-बाल’ शब्द विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। उर्दू महावरे में फ़ारिश-उल्-बाल उस मनुष्य को कहते हैं जिसे किसी प्रकार का फ़िक्र न हो। किन्तु ‘फ़ारिश-उल्-बाल’ का लफ्ज़ी तर्जुमा यह होता है कि जिसके बाल न हों।

बनारस कालिज से ओल्ड बाय मेगज़ीन निकलने पर आपने लिखा था :—

निकला ब-आबोताब बनारस से ओल्ड बाय।

अल्लाह उसको गोल्ड भी दे और पर्ल भी ॥

ख़व्वाहिश है अब ये बाज़ मुहिबबाने-क़ौम की।

निकले किसी तरफ़ से यूँही ओल्ड गर्ल भी ॥

लार्ड मिंटो के समय में अमीर काबुल के आने पर आपने लिखा था :—

जो सच्ची बात है कह दूँगा वे खोफ़ो खतर उसको।

नहीं रुकने का मैं हरगिज़ परी टोके कि जिन टोके ॥

अनार आते जो काबुल से तो पड़ते सब के हिस्से में।

अमीर आये तो हमको क्या मजे हैं लार्ड मिंटो के ॥

देखिये क़ाफ़िये ने उपरोक्त पद्य में कैसी जान डालदी है।

एक बार संयोगवश ‘अंजुमन तरक्किये-उर्दू’ का ज़िक्र आपके मित्रों ने छेड़ दिया। आप बोले—“ले देके एक ज़बान रह गई थी जिसे हम अपनी कह सकते थे। अब यह भी हमारे संभाले नहीं संभलती। इसके लिये भी एक अंजुमन (सभा) खड़ी की है। यह सब बनावट और दिखावे की बातें हैं।” इसके बाद आपने यह शेर पढ़ा :—

हम से छिन कर होगई बज्मे-तरक्की के सपुर्द।

सच कहा मिरज़ा ये अब उर्दू भी ‘कोरट’ हो गई ॥

‘कोरट’ का शब्द कैसा विनाद-पूर्ण है। जब कोई अपनी रियासत का प्रबन्ध करमे में असमर्थ होता है या कम उम्र होता है तो उसकी रियासत

का प्रबन्ध सरकार अपने हाथ में ले लेती है। इसी का रियासत का 'कोर्ट' हो जाना कहते हैं। इस अवसर पर 'कोर्ट' शब्द का प्रयोग कैसा उपयुक्त तथा शेर में जान डालने वाला है।

मन् १६२० ई० के प्रारम्भ में खिलाफत का एक डेपूटेशन विलायत गया था। इस डेपूटेशन में मौलाना मौहम्मद अली तथा इन्डिपैन्डेंट के भूतपूर्व सम्पादक सैयद हुसैन के साथ २ 'मैमरिफ' नामक मासिक पत्र के सम्पादक मौलाना सैयद मुलेमान नदवी भी थे। अकबर को मुसलमानी धर्म शास्त्र के एक विद्वान का राजनैतिक डेपूटेशन में जाना कुछ पसन्द न आया। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने अपना भाव किस अनोखे ढङ्ग से व्यक्त किया है :—

मुलेमान^१ की बात कैसी बनी।

कि नदवी से अब हो गये लंदनी ॥

रहे बादे-नोशों से बेशक खिंचे।

मगर चाय वालों से गाढ़ी छनी ॥

मुहम्मद अली की रिफाक़्त^२ में हैं।

खुदा ग़ैर से उनको करदे रानी^३ ॥

आज कल लोगों ने धर्म को अपने स्वार्थ साधन का ज़रिया बना लिया है। यह बात सब लोग जानते हैं। किन्तु एक स्थान पर इस एग़ाल में अकबर ने जो हास्य भर दिया है वह उन्हीं का किस्सा था। आप कहते हैं :—

फ़रमा गये हैं ये खूब भाई घृण।

दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन ॥

जब खाना अधिक खा लिया जाता है और हज़म नहीं होता तो चूर्ण की सहायता लीजाती है। इस ही प्रकार स्वार्थ-परायण लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए धर्म की आड़ ले लेते हैं जिससे कोई उनके मार्ग में रुकावट न डाले।

१. शराब पीने वालों। २. साथ। ३. कृत काये।

यूरुप की व्यवसायिक उन्नति का चित्र भी देखिये अकबर ने कैसी विनोद-पूर्ण भाषा में खेंचा है :—

यूरुप में गो है जंग की कुव्वत^१ बढ़ी हुई ।

लेकिन फिजू^२ है उस से तिजार्त बढ़ी हुई ॥

मुमकिन नहीं लगा वो सकें तोप हर जगह ।

देखो मगर 'पियर्स' का है सोप हर जगह ॥

सब पाठक जानते होंगे कि खिताब और सरकारी नौकरियों के उम्मेदवार अफसरों के पास जाकर कैसे २ घृणित कार्य करते हैं । अपने आत्म-सम्मान को तिताजलि दे देते हैं और अपने भाइयों की भूठी सच्ची बुराइयां करते हैं । ऐसे मनुष्यों को देश-घातक कहना बिलकुल सत्य है कटु सत्य है । नीतिकार कह गये हैं “सत्य वद प्रियं वद मा ब्रयताम् सत्यम प्रियम् ।” स्वयं आपका भी कहना था :—

कलई भी रियाकार की खुलली रहे 'अकबर' ।

तानों में मगर तर्जे-मुहज्जब भी न छूटे ॥

हसी ही कारण देखिये आपने हंसी २ खुशामदी लोगों पर कैसी चोट की है :—

अकल ने अच्छी कहा कल लाला मजलिस राय से ।

भुक के मिलना चाहिये हम सबको वायसराय से ॥

शेर कैसी ही हो लेकिन क्राफिये इसके हैं खूब ।

कौन ऐसा है जो हो मुखालिफ इस राय से ॥

आधुनिक सभ्यता से प्रभावान्वित होकर बहुत से युवक भोग-विलास में डूबे जा रहे हैं, और मद्यपान सीखते जा रहे हैं । ऐसे लोगों की ओर संकेत करके अकबर कहते हैं:—

फिक्र साढ़ी की है न कंगन की ।

अब तो धुन है उन्हें फिरंगन की ॥

निम्न लिखित पद्य में अकबर ने आधुनिक जमींदारों के जीवन का सच्चा तथा सजीव चित्र जिस विनोद-पूर्ण भाषा में खँचा है वह अकबर ही का हिस्सा है:—

मौहताजे दरे-वकीलों-मुख्तार हैं आप ।

सारे अमलों के नाज बरदार हैं आप ॥

आवारा वो मुन्तशिर^१ हैं मानिन्दे-गुबार ।

मालूम हुआ मुझे जमींदार हैं आप ॥

जो पाठक जमींदार हैं या जमींदारों के जीवन से भली भाँति परिचित हैं उपरोक्त उक्ति की यथार्थता तथा व्यङ्ग्य को भली भाँति अनुभव कर सकेंगे । वास्तव में आजकल के जमींदारों की ऐसी ही शोचनीय दशा है । महीने में बीस दिन कचहरी की खाक छाननी पड़ती है और चपरासियों तक को सलाम भुंकानी पड़ती है ।

काज कल बेचारे लेखकों की दशा भी बड़ी हृदय-विदारक है । मौखिक प्रशंसा ही यथेष्ट पुरस्कार समझा जाता है । विशेषतया प्रकाशक तथा साधारणतया जन साधारण यह समझते हैं कि लेखक एक प्रकार के विशेष प्राणी हैं जो बिना खाये पिये ही जी सकते हैं तथा साहित्य-सेवा कर सकते हैं । देखिये अकबर इस दशा का चित्र किन शब्दों में खँचते हैं:—

खुला दीवां मेरा तो शोरे तहसी^२ बज्म^३ में उठा ।

मगर सब होगये खामोश जब मतबे^४ का बिल आया ॥

अकबर को भी समाचचार-पत्रों के सम्पादक साधारण कवि समझ कर भिन्न २ विषयों पर क्रूरमायशी गज़लें लिखने की प्रार्थना करते रहते थे । अकबर ऐसी प्रार्थनाओं से तंग आकर कहते हैं:—

उशशाक को भी माले तिजारत समझ लिया ।

इस कदर को मुलाहज़ा लिह्लाह कीजिये ॥

भरते हैं मेरी आह को फोनोग्राफ में ।
कहते हैं फ्रीस लीजिये और आह कीजिये ॥

कहीं २ अकबर ने शब्दों का विशेष रूप से प्रयोग करके कविता में हास्य पैदा कर दिया है । इस विषय के भी आपके दो चार शेर सुन लीजिये:—

१. पाकर खिताब नाच का भी शौक होगया ।
सर^१ होगये तो बाल^२ का भी शौक होगया ॥
२. खाई मिज़गां^३ वो नज़र की जो कसम बोला वो शोख ।
आप अब कसमें भी खाते हैं छुरी कांटे से ॥
३. शेख जी घर से न निकले और मुझसे कह दिया ।
आप बी० ए० पास हैं और बन्दा बी०बी० पास है ॥
४. बोले चपराशी जो मैं पहुँचा ब-उम्मीदे-सलाम ।
फाकिये खाक आप भी साहब हवा खाने गये ॥
५. शैता ने किया हज़रते आदम को न सिजदा^४ ।
और उज़्र किया पेश कि मैं आग वो मिट्टी ॥
हरज़त को भी तकलीदे^५-नमाज़ी में है ये उज़्र ।
मसजिद का वो मुल्ला है मैं साहब का हूँ मुन्शी ॥

अधिक कहां तक उल्लेख किया जाय, अकबर की कविता आदि से अन्त तक हास्य रस से भरी हुई है । कठिनता से १० प्रतिशत ऐसे शेर होंगे जिनसे हास्यरस न टपकता होगा । कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो अकबर ने हास्य को हाथ से नहीं जाने दिया है । यही कारण है कि जो अकबर की कविता एक बार पढ़ लेता है, अकबर पर लट्टू हो जाता है । दो चार शुष्क हृदयों की और बात है ।

१ एक अंग्रेज़ी खिताब । २ अंग्रेज़ी नाच । ३ भृकुटी । ४ सर भुकाना । ५ अनुगमन, पीछे चलना ।

है बदगुमों जो वो बुत परवा नहीं कुछ इसकी ।
हर बिरहमन है शैदा^१ अकबर की काफिरी का ॥

प्रेम— ।

यद्यपि अकबर ने प्रेम-विषयक कविता अधिकतर प्राचीन शैली ही पर की है, किन्तु पूर्ववर्ती कवियों के समान ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाकर अपनी आह से 'उन्का' के वालों को नहीं जलाया है^२ । अकबर की प्रेम-विषयक कविता एक प्रेम के हार्दिक उद्गारों का सीधी सादी भाषा में जीता जागता चित्र है । इस बात की पुष्टि के लिए हम यहा पर अकबर के कुछ शेर उद्धृत करते हैं:—

जज़बये-दिल ने मेरे तासीर दिखलाई तो है ।
घुंघरुओंकी जानिबे-दर कुछ सदा आई तो है ॥
इश्क के हज़हार में हरचन्द रुसवाई तो है ।
परकरूं क्या अब तबीयत आप पर आई तो है ॥
आपके सर की कसम मेरे सिवा कोई नहीं ।
बे तकल्लुफ़ आइये कमरे में तन्हाई तो है ॥
जब कहा मैंने तड़पता है बहुत अब दिल मेग ।
हंसके फरमाया तड़पता होगा सौदाई तो है ॥
यों मुखवत से तुम्हारे सामने चुप हो रहे ।
कल के जलसों की ख़बर हमने मगग पाई तो है ॥
देखिये कब तक नहीं आती गुले-आरिज^३ की याद ।
सैंरे-गुलशन से तबीयत हमने बहलाई तो है ॥
मैं बला मे क्या फ़सूं दीवाना बनकर उसके साथ ।

१—आसक्त ।

२—मैं अदम से भी परे हूं वरना जालिम बारहा ।

आहे आतशी से मेरी वाले उनका जल गया ॥ —ग़ालिब

३. फूल के समान कपोल ।

दिल को वहशत हो तो कमबख्त सौदाई तो है ॥

जिसकी उल्फत पर बड़ा दावा था अकबर कल तुम्हें ।

आज हम जाकर उसे देख आये हरजाई तो है ॥

(२)

उन्हें पसन्द नहीं और इससे मैं बेज़ार ।

इलाही फिर ये दिले बेकरार क्या होगा ॥

अजीज़ो सादा ही रहने दो लौहे तुरबत^१ को ।

हमी मिटे तो ये नक़शो निगार क्या होगा ॥

(३)

अगरचे आशिक बुतों का हूँ मैं नजर खुदा से फिरी नहीं है ।

जो आँख रखते हैं जानते हैं कि आशिकी काफ़िरी^२ नहीं है ॥

जमाले-दिलकश^३ का महवू^४ होना नहीं है हरगिज खिलाफे-ताअत^५ ।

खुदा की कुदरत की कद्र करना सबाब^६ है काफ़िरी नहीं है ॥

(४)

क्या मौत है तवियत आगई उस आफते जां पर ।

जिसे इतना नहीं मालूम उल्फत क्या वफा क्या है ॥

उन्हें भी जोशे-उल्फत हो तो लुत्फ उठे मोहब्बत का ।

हमी दिन रात अगर तढ़पे तो फिर इसमें मजा क्या है ॥

मुशीबत ऐन राहत है अगर हो आंशिके सादिक^७ ।

कोई परवाने से पूछे कि जलने में मज़ा क्या है ॥

तबीबों से मैं क्या पूछूँ इलाजे दर्दे-दिल अपना ।

मर्ज जब जिन्दगी खुद हो तो फिर उसकी दवा क्या है ॥

(५)

इन बुतों के बाव में इतनी ही मेरी अज़ा है ।

कुफ़्र है इनकी परस्तिश प्यार करना फज़ा^८ है ॥

२. क़त्ल का पत्थर । २. नास्तिकता । ३. चित्ताकर्षक सौन्दर्य ।

४. लीन । ५. आशा-पालन के विरुद्ध । ६. पुण्य ७ सच्चा प्रेमी ।

३. धर्म ।

अकबर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि चाहे कैसा ही शुष्क विषय क्यों न हो उसे भी मनोरञ्जक तथा चित्ताकर्षक बना दिया है। दार्शनिक तथा धार्मिक तत्त्वों का समावेश अकबर ने अपनी कविता में कुछ इस प्रकार किया है कि देखते ही बनता है। देखिये ईश्वर का अस्तित्व आप किस प्रकार प्रमाणित करते हैं:—

गौर से देखो ज़मीनों-आस्मां को मुन्कियों^१ ।

चल भी सकता बे खुदा के इन्तज़ाम इतना ॥

संसार से मनुष्य को कितना सबन्ध रखना चाहिये इस बात को देखिये अकबर ने निम्न लिखित पद्य में किस ढङ्ग से बताया है:—

‘अकबर’ से मैंने पूछा, “अय वाइज़ो-तरीकत

दुनियाये-दूँ से रखूँ मैं किस क़दर ताल्लुक।”

उसने दिया बलागत से ये जवाब मुझको,

“अंग्रेज़ को है नेटिव से जिस क़दर ताल्लुक” ॥

मज़हब तथा साइन्स की तुलना भी देखने लायक है:—

सदाक़त^२ के निशां इस मिसरये-अकबर में मिलते हैं ।

कलें साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं ॥

ईश्वर की प्रार्थना से सबन्ध रखने वाली एक ग़ज़ल के भी शेर सुनाने लायक हैं ।

खुदा का नाम रोशन है खुदा का नाम प्यारा है ;

दिलों को इससे कुव्वत है ज़बानों को सहारा है ॥

उसी के हुकम से है रात दिन कि ये कमी-बेशी ।

उसीके हुकम का ताबे फ़लक पर हर सितारा है ॥

उसी के इन्तज़ामों-हुकम से मौसम बदलते हैं ।

वही है वक्त पर जिसने हवाओं को उभारा है ॥

उसी के हुक्म से फल और गल्ले की है पैदायश ।
जमीं पर बदलियों से उसने पानी को उतारा है ॥
ये जब तक साँस चलती है समझते हो हमीं हम हैं ।
अजल^१ जब सर पै आ पहुँची तो फिर क्या बस हमारा है ॥
अगर आमाल^२ अच्छे हैं तो पावोगे बड़े दर्जे ।
समझ लो इन्तहां इस 'दारे-फानी'^३ में तुम्हारा है ॥
बजुगों का अदब अल्लाह का डर शर्म आंखों में ।
इन्हीं औसाफ^४ की निस्वत मज़ाहिब में इशारा है ॥

उपनिषदों में ईश्वर को 'अज्ञेय' कहा गया है । हर्बर्ट स्पेंसर और उसके अनुयायी 'अज्ञेयवादियों' के अनुसार भी ईश्वर अज्ञेय है अर्थात् नहीं जाना जा सकता । आपका भी यही विचार था । आपके विचार में सर्वव्यापक ईश्वर का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की परिमित बुद्धि से बाहर था:—

किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिये ।

ख़िद^५ ख़ामोश है और दिल ये कहता है खुदा कहिये ॥

ईश्वर के विषय में तर्क से भी काम नहीं लिया जा सकता क्योंकि:—

क्यों कर दलील^६ देख सके उस जमाल^७ को ।

जिसका खयाल बर्क^८ गिराता है होश पर ॥

इस कारण आप धार्मिक शास्त्रार्थों को व्यर्थ समझते थे । देखिये निम्न लिखित पद्य में आपने यह भाव किस सुन्दरता से प्रगट किया है:—

फलसफ़ी तजरुबा करता था हुवा मैं रुख़सत ।

मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं ॥

कह दिया मैंने हुवा तजरुबा मुझको तो यही ।

तजरुबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं ॥

१. मृत्यु । २. कर्म । ३. नश्वर संसार ! ४. बुद्धि । ५. गुणों
६. युक्ति । ७. ज्योति । ८. बिजली ।

इसके अतिरिक्त:—

मजहब के ये मुवाहिस्^१ निकले हैं हिस्ट्री से ।

उनको है क्या तआल्लुक वहदत की मिस्ट्री^२ से ॥

अकबर अद्वैतवादी थे । किसी मजहब से तास्सुब नहीं रखते थे । आप कहते थे:—

आता है वज्द^३ मुझको हर दीन की अदा पर ।

मसजिद में नाचता हूँ नाकूस^४ की सदा पर ॥

किन्तु आप उन लोगों के विरुद्ध थे जो धर्म की आड़ में शिकार खेलते हैं । सुनिये क्या कहते हैं:—

किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस बाब में भगड़ा ।

करो बुम ध्यान परमेश्वर का दिल को उसका दर्शन हो ॥

मगर मुश्किल तो ये है नाम सब लेते हैं मजहब का ।

गरज लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो ॥

इस प्रकार का दिखावे का ढोंग आपको पसन्द नहीं ऐसे था मनुष्यों को आप दूर ही से प्रणाम करते थे:—

पंडित को भी मलाम है और मौलवी को भी ।

मजहब न चाहिये मुझे ईमान चाहिये ॥

मजहब और ईश्वर की ओर से लापरवाह रहने के कारण देखिये आपने कालिज के लड़कों के कैसी मीठी चुटकी ली है:—

मजहब का हो क्योंकिर इल्मो-अमल,

दिल ही नहीं भाई एक तरफ ।

किरकिट की खिलाई एक तरफ,

कालिज की पढ़ाई एक तरफ ॥

‘क्या जौफ़े-इबादत हो उनको,

जो मिस के लबों के शैदा हों ।

हलवे-बहिश्ती एक तरफ़

होटल की मिठाई एक तरफ़ ॥

ईश्वर को भूले हुवे आज कल के नौकरी के उम्मीदवारों के विषय में भी एक शेर सुन लीजिये:—

मुसीबत में भी अब यादे-खुदा आती नहीं उनको ।

दुआ मं'ह से न निकली पाठकों से अर्ज़ियां निकलीं ॥

यूरुप में वैज्ञानिक उन्नति के साथ २ नास्तिकता के भाव भी बढ़ते जाते हैं । अपने देशवासियों को नास्तिकता के फन्दे से बचने की चेतावनी आपने बड़े ही अनुपम ढङ्ग से दी है:—

भूलता जाता है यूरुप आसमानी बाप को ।

बस खुदा समझा है उसने बर्क^१ को और भाप को ॥

बर्क गिर जायगी एक दिन और उड़ जायगी भाप

देखा 'अकबर' बचाये रखना अपने आप को ॥

आप खुदा को खुश करना ही अपना सर्वोपरि कर्तव्य समझते थे । आपका कहना था कि यदि हम ईश्वर को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करेंगे तो आस्तिक अफसर स्वयं ही प्रसन्न हो जायेंगे ।

तुम खुदा को खुश करो 'अकबर' खुरामद छोड़ कर ।

बाखुदा हाकिम जो होगा खुद ही खुश हो जायगा ॥

आपके काव्य में नीति-विषयक शेर भी बहुत से हैं । यहां भी आपने 'हास्य' को हाथ से नहीं जाने दिया है । शराब की निन्दा में आप लिखते हैं:—

नफ्स^२ के ताबे हुवे ईमाव रुखसत हो गया ।

बो ज़नाने में घुसे महमान रुखसत हो गया ॥

मय^३ उन्होंने पो अब उनके पास ब्यांकर दिल लगे ।

जानवर इक रह गया इन्सान रुखसत हो गया ॥

ठीक है। मनुष्य और जानवर में यही भेद होता है कि मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान होता है और जानवर को नहीं। नशे की हालत में मनुष्य को भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता। इस कारण जानवर के समान ही हो जाता है।

देखिये आपने स्वार्थी वाक्-चतुर उपदेशकों के फन्दे से बचने की चेतावनी किन शब्दों में दी है:—

वो रोये बहुत स्पीचों में हिंमत इसको कहते हैं।

मैं समझा खरखाह उनको हिमाकृत इसको कहते हैं ॥

कभी २ शान्त मनुष्यों को भी क्रोध आ जाता है। क्रोध आना तो प्राकृतिक है। दिल में मैल नहीं रखना चाहिये:—

गुस्सा आना तो है नेचरल^१ 'अकबर'।

लेकिन है शदीद^२ ऐब कीना^३ रखना ॥

आजकल मैत्री दिखावे की रह गई हैं। अबसर आने पर मैत्री का लम्बा चौड़ा दम भरने वाले आखे फेर लेते हैं। इस साधारण बात को अकबर ने निम्न लिखित शेर में प्रकट किया है, किन्तु फोनोग्राफ की उपमा देकर शेर में एक अजीब लुत्फ पैदा कर दिया है:—

क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज^४ जुदा ।

दौरे-फौनो में गले से हुई आवाज जुदा ॥

देखिये अकबर का निम्न लिखित शेर कैसा सारगर्भित है:—

सवाब^५ कहता है मिल जाऊंगा कर उनकी मदद

झिपा हुआ मैं गरीबों की भूख प्यास में हूँ ॥

उपरोक्त शेर में अकबर ने धर्म का सार रख दिया है साधारण शब्दों में ऐसी गूढ़ बात कह जाना अकबर ही का हिस्सा था:—

तरे बाद 'अकबर' कहां ऐसी नज्में ।

वो दिल ही न होंगे कि ये आह निकले ॥

४. समाज-सुधार ।

यद्यपि अकबर पश्चिमी शिक्षा के विरोधी नहीं थे और अपने लड़के को भी विलायत पढ़ने के लिये भेजा था, किन्तु योरप की नास्तिकता तथा 'मैटीरियलिज्म' (Materialism) के बिल्कुल विरुद्ध थे । आप इस बात के भी पक्ष में नहीं थे कि भारतीय अपनी चाल ढाल तथा रीति रस्म भूल जायें और सोलहों आने अंग्रेजी चाल ढाल पर चलने लगें । आपने अपनी कविता में योरोपीय सभ्यता की उन बातों की, जिन्हें वे दूषित समझते थे, खूब खुशकी उड़ाई है । योरोपीय सभ्यता पर लट्टू नये ढङ्ग के बाबू लोगों की भी आपने खूब खबर ली है । कहीं २ तो अकबर ने एक २ शेर में पूरे लेखक का मजमून बन्द कर दिया है ।

परदा

अकबर परदे के रिवाज के पक्ष में थे । देखिये आपने नीचे के दो शेरों में अपने पक्ष का किस निराले ढङ्ग से समर्थन किया है तथा विपक्षियों के कैसी चुटकी ली है:—

बेपरदा नज़र आई जो कल चन्द बीबियां,

'अकबर' ज़मी में गैरते-कौमी से गढ़ गया ॥

पूछा जब उनसे आपका परदा वो क्या हुआ,

कहने लगीं कि अक्ल पै मरदों की पड़ गया ॥

स्त्री-शिक्षा

अकबर स्त्री-शिक्षा के विरोधी नहीं थे, किन्तु आप अंग्रेजी ढङ्ग की शिक्षा लड़कियों के लिए उचित नहीं समझते थे । आपका विचार था कि अंग्रेजी ढङ्ग की शिक्षा लड़कियों के आचार पर बुरा प्रभाव डालती है और उनको घरेलू काम काज तथा पति की ओर से उदासीन

बना देती है। निम्न लिखित पद्य में आपने आधुनिक शिक्षा-प्रणाली से शिक्षित लड़कियों का चित्र खींचा है:—

घर से जब पढ़ लिख के निकलेंगीं कुंवारीं लड़कियां ।
 दिलकशो^१-आजादो-खुशरू^३ साख्ता^३ परदाख्ता^४ ॥
 ये तो क्या मालूम क्या मौके अमल^४ के होंगे पेश ।
 हां निगाहें होंगी मायल^४ उस तरफ वेसाख्ता^६ ॥
 मशरबीं तहज़ीब आगे चलके जो हालत दिखाये ।
 एक मुद्दत तक रहेंगे नौजवां दिल-वाख्ता^७ ॥
 औजे^८ कौमी से शराफत का हुमा^९ गिर जायगा ।
 माकियां^{१०} से पस्ततर^{११} दिखाई देगी फ़ाख्ता ॥
 डाल देगा सीनये-ग़ैर^{१२} सितपर^{१३} मैदान में ।
 तेरी^{१४} अबरू^{१५} ही नज़र आयगी हरसू आख्ता^{१६} ॥

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

१. तहज़ीबे-मशरबीं में है बोसा तलक मुआफ ।
 इससे अगर बढ़ो तो शरारत की बात है ॥
२. रुकिये अगर तो हंस के कहे एक मिसे-हसीं ।
 घैल मौलवी ये बात नहीं है गुनाह की ॥

अब ज़रा घरेलू काम-काज से उदासीनता के विषय में भी दो एक शेर सुन लीजिए:—

१. उनसे बीबी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की ।
 ये न बतलाया कहाँ रक्खी है रोटी रात की ॥

१. चित्ताकर्षक २. सुन्दर ३. दुरुस्त ४. सुसज्जित ५. आकर्षित
 ६. आप ही आप ७. जिनका दिल पर से काबू जा चुका है ८. आकाश
 ९. एक जानवर का नाम है जो केवल हड्डी खाता है । कहा जाता है कि
 जिस आदमी पर इसका साया पड़ जाता है वह बादशाह हो जाता है ।

१०. घर की पला हुई मुर्गी ११. ज्यादा नीची १२. लज्जा १३. डाल १४.
 तलवार १५. भृकुटी १६. लटकी हुई ॥

२. बीबी में जो तरङ्गे-मगरबी हो तो कहो ।

अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो ॥

अकबर के उपरोक्त पद्य पढ़कर स्वर्गीय सर सैयद अहमद का कथन याद आजाता है । एक बार आपने बातों २ में कहा था कि यदि अपनी पत्नी को प्रसन्न रखना चाहो तो दो बातों का ध्यान रखो । यदि पत्नी नई रोशनी की है तो उसके आचार पर आक्षेप न करो । वह जो करे करने दो । सदैव सन्तुष्ट रहेगी । और यदि पत्नी पुरानी रोशनी की है तो अपना आचार ठीक रखो ।

अकबर का विचार था कि स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये जिससे वे अपनी गृहस्थी के काम काज अच्छी तरह कर सकें । उन्होंने लिखा है:—

तालीम लड़कियों की ज़रूरी तो है मगर ।

‘खातूनेखाना’^१ हों वो सभा की ‘परी न हों ॥

जीइल्मो^२ मुत्तकी^३ हों वले उनके मुन्तज़िम ।

उस्ताद अच्छे हों मगर उस्तादजी न हों ॥

देखिये आपने अपनी सम्मति किस अनुपम सुन्दरता के प्रगट की है । “उस्तादजी” का शब्द कैसा “विनोदपूर्ण” है

आधुनिक शिक्षा ।

आजकल सरकारी स्कूलों में जिस प्रकार की शिक्षा लड़कों को दी जाती है उससे भी अकबर सन्तुष्ट न थे । असन्तुष्ट होने का सबसे बड़ा कारण यह था कि धार्मिक शिक्षा के सर्वथा अभाव के कारण आधुनिक स्कूलों तथा कालिजों में शिक्षित विद्यार्थी अपने धर्म तथा ईश्वर से विमुख होजाते हैं ! विद्यार्थियों को सम्बोधन करके अकबर लिखते हैं:—

नये गमलों में पड़ कर फूल जाना ।

खुदाओ-आखिरत^४ को भूल जाना ॥

बहुत बेजा है ये वल्लाह 'अकबर' ।

ज़रा सुन लो तो फिर स्कूल जाना ॥

आधुनिक शिक्षा से प्रभावान्वित होकर बहुत से लड़के बड़ों का अदब लिहाज बिलकुल छोड़ देते हैं । इस विषय में भी एक शेर सुनिये :—

हम ऐसी सब किताबें काबिले-ज़बती समझते हैं ।

जिन्हें पढ़ २ के लड़के बाप को ख़बती समझते हैं ॥

आधुनिक कालिजों में शिक्षा प्राप्त युवकों पर सोलहों आने विदेशी सभ्यता का रङ्ग चढ़ जाता है । और क्यों न चढ़े:—

तिफ़ल में बू आये क्या मां बाप के अतवार की ।

दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की ॥

कुछ स्कूलों तथा कालिजों में धार्मिक शिक्षा देने का भी प्रबन्ध होता है । किन्तु अकबर इस प्रबन्ध को यथेष्ट नहीं समझते थे । आपका कहना था :—

नई तहज़ीब में भी मज़हबों तालीम शामिल है ।

मगर य़ुंही कि जैसे आबे^१ ज़मज़म^२ मय में दाख़िल है ॥

भारतीय युवकों के जीवन का बड़ा भाग इस ही प्रकार को दूषित शिक्षा प्राप्त करने में नष्ट हो जाता है:—

बहारे-उम्र गुजरी सालहाये-इम्तहानी में ।

हमें तो पास ही की फ़िक्र ने पीसा जवानी में ॥

इतना बहुमूल्य समय तथा धन-व्यय किसलिये किया जाता है ? यथार्थ ज्ञान या कोई बड़ा औहदा पाने के लिये नहीं । बड़े औहदे तो अधिक संख्या में विदेशियों ही के लिये सुरक्षित हैं । हम तो क्लर्की पाना ही अहोभाग्य समझते हैं ! साधारण क्लर्कों के लिये इतनी मुसीबत !

^१. पानी ^२ गङ्गा के समान मुसलमानों की एक पवित्र नदी

मज़हब छोड़ो मिल्लत छोड़ो सूरत बलो उम्र गंवावो ।
सिर्फ क्लर्कों की उम्मीद और इतनी मुसीबत तोबा तोबा ॥
खेद की बात तो यह है कि इतनी आराधना करने पर भी क्लर्की
रूसी ही रहती है:—

हैं अमल अच्छे मगर दरवाजये-जन्नत^१ है बन्द ।
कर चुके हैं पास लेकिन नौकरी मिलती नहीं ॥

अतएव—

ख्वाहाने-नौकरी न रहें तालिबाने-इल्म ।
कायम हुई है राय ये अहले-शऊर की ॥
कालिज में धूम लच रही है पास पास की ।
औहदों से सदा आ रही है दूर दूर की ॥

किन्तु नौकरी न करें तो क्या करें? आधुनिक शिक्षा तो क्लर्की
के सिवाय और किसी काम का बनाती ही नहीं। एकमात्र साहित्यिक
शिक्षा से रोटी का प्रश्न हल नहीं हो सकता। संसार शिल्प-वाणिज्य
के मैदान में कुलाचे मारता चला जाता है, किन्तु हम अपनी पुरानी
ही डगर पर हैं:—

डार्विन के वही मकतब का सबक है अब तक ।
वही बन्दर वही लंगूर चला जाता है ॥

अब तो हमको समझ आनी चाहिये तथा शिल्प-वाणिज्य की शिक्षा
की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। देखिये इस प्रकार की शिक्षा
का समर्थन अकबर निम्न लिखित शेर में किस अनुपम सुन्दरता के
साथ करते हैं:—

हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यों कर ।
ये बहस अच्छी है इससे हजरते आदम बने क्योंकर ॥
आपका विचार था कि आधुनिक योरोपीय सभ्यता में बाहरी टीप

दाप ही अधिक है। देखिये आपने इस भाव को निम्न लिखित शेर में किस उत्तमता से प्रकट किया है:—

हमको नईरविश^१ के हलके^२ जड़क रहे हैं।

बातें तो बन रही हैं और घर बिगड़ रहे हैं ॥

तर्जें-मगरिव में नहीं है शर्तें-दिल बहरे-अमल।

चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो ॥

स्टीमर का उदाहरण कितना उपयुक्त है। एक और स्थान पर आप लिखते हैं:—

कमैटियों से सदा उठी है ज़माना बदला है तुम भी बदलो।

मगर हमारा तो कौल ये है खुदा वही है तो हम वही हैं ॥

किन्तु उपरोक्त पद्य से अकबर का यह आशय नहीं समझना चाहिये कि समय के साथ २ हम कुछ भी परिवर्तन न करें:—

तुम शौकसे कालिज में फलो पार्क में फूलो,

जायज़ है गुबारों पै चढ़ो चर्ख^३ पै भूलो।

पर एक सनखु बन्दये-आजिज़ का रहे याद,

अल्लाह को और अपनी हकीकत को न भूलो।

अकबर उन आदमियों में नहीं थे जो किसी बात का इस ही कारण विरोध करते हैं कि वह नई है। आपने एक स्थान पर लिखा है:—

शेख साहब का तास्सुब^४ है जो कहते हैं।

ऊंट मौजूद है फिर रेल पै क्यों चढ़ते हो ॥

आपने अपने लड़के को विलायत पढ़ने के लिये भेजा था। किन्तु इस ही बात से डरा करते थे कि कहीं लड़का बलायत जाकर सरस्वती की आराधना करने के स्थान में कामदेव की आराधना न करने लगे।

कमरे में जो हंसती हुई आई मिसे-रैना,

टीचर ने कहा इल्म की आफ़त है तो ये है।

पेचीदा मसायल के लिए जाते हैं इंग्लैण्ड,
जुल्फों में उलझ आते हैं शामत है तो ये है ॥

४. राजनिति ।

अकबर सरकारी नौकर होने के कारण देश के राजनैतिक कार्यों में भाग नहीं लेते थे । स्पष्ट रूप से विवादग्रस्त समस्याओं पर अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकते थे । किन्तु उन के पास 'ज़राफ़त' का नुस्खा ऐसा था कि हंसी दिल्लगी के बहाने बाण मार जाते थे । कड़वी से कड़वी दवा दे देते थे और उस पर हास्य-रस का इतना मीठा चढ़ा देते थे कि खाने वाला कड़वी गोलियों को निगल जाने पर भी होंठ चाटता रह जाता था । एक स्थान पर आपने स्पष्ट रूप से लिखा है:—

लगज़िशें मददे-ज़राफ़त में जो कुछ आयें नजर ।

दोस्तों से इलतजा ये है करें उनको मुआफ़ ॥

सद मौसम था हवाएं चल रहीं थी बर्फ़-बार ।

शाहिदे मानी ने ओढ़ा है ज़राफ़त का लिहाफ़ ॥

उपरोक्त पद्य का भावार्थ यह है कि 'ज़राफ़त' में जो कुछ कमी या अपूर्णताये रह गई हों उनके लिये मित्रगण क्षमा करें । बात यह है कि मौसम जाड़े का था अर्थात् राजनैतिक समस्याओं ने विकट रूप धारण कर रक्खा था और ठण्डी हवाएं चल रही थीं अर्थात् सरकारी पकड़-धकड़ ज़ोरों पर थी । इस कारण अर्थ रूपी 'माशूक' या 'नायिका' को 'ज़राफ़त' या 'हास्य' का लिहाफ़ ओढ़ना पड़ा है । आशय यह कि सारी बातें हास्य के परदे में कही गई हैं । यही कारण था कि अकबर सरकारी नौकर होते हुए भी सत्य के पक्ष में तथा सरकार के विपक्ष में ऐसी २ बातें कह गये हैं जिनका कहने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता है ।

मेरा ये शेर 'अकबर' एक दफ़्तर है मझानी का ।

कोई समझे न समझे हम तो सब कुछ कह गुजरते हैं ॥

अर्थात् अय अकबर मेरा यह पद गूढ़ रहस्यों की एक पुस्तक है । चाहे कोई समझे या न समझे किन्तु हम तो सब कुछ कह डालते हैं ।

अकबर का अधिकांश जीवन सरकारी नौकरी में बीता। साधारण-तया सरकारी नौकरों में—विशेषतया उच्च पदाधिकारियों में—मानसिक गुलामी आ जाती है। किन्तु आप इस रोग से सर्वथा मुक्त थे :—

शागिर्दे-डारविन तो खुदा ही ने कर दिया।

‘अकबर’ मगर नहीं है मदारी के हाथ में ॥

अकबर का विचार था कि भारतवर्ष के लिए अंग्रेजों का राज्य हित-कर नहीं हो सकता। अंग्रेजी राज्य से देश-वासियों का शासन-चाहे हिन्दुओं का हो या मुसलमानों का—कहीं अच्छा है। देखिये आपने इस विचार को किस मजे के साथ व्यक्त किया है :—

धुन देश की थी जिसमें गाता था एक दिहाती।

बिसकुट से है मुलायम पूरी हो या चपाती ॥

बिसकुट, पूरी तथा चपाती से अंग्रेज, हिन्दू तथा मुसलमानों के शासन का अभिप्राय है।

राजनैतिक अधिकार पाने के लिए आप माडरेटों के समान खुशामद या शिकायत से काम लेना समय का वृथा नष्ट करना समझते थे। आप एक प्रसिद्ध अंग्रेज राजनीतिज्ञ के निम्नलिखित कथन को यथार्थता को पूर्णरूप से अनुभव करते थे—

In politics from a promise it is meant that it will not be fulfilled, unless pressed.

अर्थात् राजनीतिमें वादे का यह मतलब है कि ‘वादा उस समय तक पूरा न किया जायगा जब तक पूरा करने के लिए विवश ही न हो जायें।’ इस ही कारण आपने लिखा है :—

निहायत काबलियत से मुझे साबित किया मुरदा।

मुनासिब दाद देना है मुझे यारब कि रोना है ॥

निदा आई मुनासिब है कि जीना अपना साबित कर।

खुशामद या शिकायत दोनों ही में वक्त खोना है।

राजनैतिक क्षेत्र में केवल जिह्वा घनना व्यर्थ है यहां तो हाथ बनने से काम चलता है—

कोरे-बाजू नहीं तो क्या स्पीच ।

हाथ भी दे खुदा ज़बां के साथ ॥

जब तक हाथ में शक्ति नहीं, व्यर्थ के आलाप से क्या लाभ ? रकाबियों की झुंकार उम्र भर सुनते रहिये । किन्तु इससे कहीं भूख मिट सकती है ?

रिजोल्यूशन की शोरिश^१ है मगर उसका असर गायब ।

प्लेटों की सदा सुनता हूं और खाना नहीं आता ।

आप नाम-मात्र के सुधारों से—जैसे कौंसिलों में भारतीय सभासदों की संख्या कुछ बढ़ा दी या भारतीयों को दो चार ऊंचे पद और दे दिये—सन्तुष्ट नहीं थे । आपके विचारानुसारः—

हमदर्द हों सब ये लुत्फे आबादी है ।

हमसाया भी हो शरीक तब शादी है ॥

तसकीन है जब कि खुदा पर हो तर्किया ?

कानून बना सकें तब आजादी है ॥

अंग्रेजों के बङ्गलों की खाक छानना भी आप जातीय उन्नति की दृष्टि से व्यर्थ समझते थेः—

कौम के हक में तो उलभन के सिवा कुछ भी नहीं ।

सिर्फ आनर के मजे उनकी मुलाकात में हैं ॥

ठीक भी है । खिताब के सिवा और मिलता भी क्या है ?

स्वराज्य

स्वराज्य-आन्दोलन की आरम्भिक अवस्था में आपने लिखा थाः—

जब ये समझे थे गरहेज जरूरी है इन्हें ।

वादा वच्चों से मिठाई का पुनासिब ही न था ॥

आप ही ने तो किया 'केक' का जिक्रे-शीरी,
वरना इस चीज का इनमें कोई तालिब ही न था ॥

उपरोक्त पद्यों का अर्थ साफ है। 'परहेज' शब्द से कवि ने प्रकट किया है कि अधिकारीवर्ग नहीं चाहते कि भारतवासियों को 'होमरूल' अर्थात् 'स्वराज्य' मिले। 'बच्चों से मिठाई के वादे' की उक्ति बहुत ही व्यङ्ग्यपूर्ण है। स्वराज्य-आन्दोलन की प्रारम्भिक अवस्था में स्वराज्य के अर्थ में होमरूल शब्द ही का प्रयोग किया जाता था। 'होमरूल' अंग्रेजी शब्द है। इस ही कारण कवि ने 'होमरूल' के लिये 'केक' शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु साथ ही साथ 'जिक्रे' के साथ 'शीरी' लगाकर इस बात को भी प्रकट कर दिया है कि 'होमरूल' देश के लिये आवश्यक है।

देखिये भारतवर्ष की दशा का आपने कैसा वास्तविक तथा मार्मिक चित्र खींचा है—

ये बात गलत कि दौरे-इस्लाम है हिन्द,
ये झूठ कि मुल्के-लख्मनो-राम है हिन्द।
हम सब हैं मुती वो खैरखाहे-इङ्गलिश,
यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द ॥

भावार्थ यह कि न तो अब भारतवर्ष इस्लाम का घर है और न राम-लक्ष्मण ही का देश है। अब तो यहां अंग्रेज जाति के आदमी और उनके शुभचिन्तक रहते हैं और भारतवर्ष यूरुप का गोदाम बना हुआ है।

अकबर ऐसे नेताओं को बिलकुल पसन्द न करते थे जो ऊपर से तो क्रांती खिदमत का ढोंग रचते रहते हैं; किन्तु वास्तविक उद्देश्य यह होता है कि कौन्सिलों के मेम्बर हो जायें; खिताब हासिल करलें या अपने संबन्धियों को सरकारी नौकरियां दिला दें। ऐसे नेताओं को संबोधन करके आप कहते हैं:—

गुम की थी मैंने राह मुसीबत यही थी सख्त ।
इस पर हुआ ये क्रहर तुम ऐसे खिज़र मिले ।
बातें भी मुझसे कीं मेरी खातिर भी की बहुत ।
लेकिन मजाल क्या जो नज़र से नज़र मिले ॥
किससे मैं पूछता गुलो-बुलबुल की सरगुज़स्त ।
दो चार वर्ग खुशक तो दो चार तर मिले ॥

देखिये निम्न लिखित शेर में आपने एकमात्र नाम के इच्छुक लीडरों के कैसी चुटकी ली है:—

कौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ ।

लीडर को ग़म बहुत है मगर आराम के साथ ॥

बहुत से वकील वकालत में अकृतकाये होकर उदर-पूर्ति के लिये लीडरी के मैदान में आ जाते हैं । ऐसे लीडरों के विषय में भी कुछ सुन लीजिये:—

मवक्किल छुटे उनके पञ्जे से जब ।

तो बस कौम-मरहूम के सर हुवे ॥

पर्पाहे पुकारा किये 'पी' कहां ।

मगर वो तो प्लीडर (Pleader) से (Leader) लीडर हुवे ।

पर्पाहा, पी, प्लीडर तथा लीडरशब्दों ने उपरोक्त शेर में अजब जान डाल दी है । अंग्रेजी शब्द Pleader (वकील) में से जब 'P' निकाल लेते हैं तो Leader (नेता) बाकी रह जाता है ।

उस समय की कांग्रेस को लक्ष्य में रख कर, जब वह कामरेडों के हाथ में थी, आप लिखते हैं:—

हो दिसम्बर में मुबारिक ये उछल कूद आपको ।

खून मुझ में भी है लेकिन मुझको फागन चाहिये ॥

आज कल की कौन्सिलें एक प्रकार से खिलौना-मात्र हैं । गवर्नर या वाइसराय को अधिकार है कि सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुवे महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण प्रस्ताव को रद्द करते:—

एक दिलगी है वक्त गुज़रने के वास्ते ।
 देखो तो मैम्बरो के ज़रा हेर फेर को ॥
 ऐसी कमैटियों से है फल का उमीदवार ।
 अकबर दरख्त समझा हैं पत्तोंके ढेर को ॥

आप कौन्सिलों को व्यर्थ ही नहीं प्रत्युत् गुलामी को जंजीर और
 शिकारी का फन्दा समझते थे:—

क्रौम के दिल में खोट है पैदा ।
 अच्छे अच्छे हैं वोट पै शैदा ॥
 भाई भाई में हाथापाई ।
 सैल्फ गवर्नमेंट आगे आई ॥
 पांव का होश अब फिर न सर की ।
 वोट की धुन में बन गये फिरकी ॥

निम्न लिखित शेरों में तो अकबर ने आधुनिक कौंसिलों का खोखला-
 पन बिल्कुल ही स्पष्ट रूप से प्रगट कर दिया है:—

नेटिव है नमूद ही का मौहताज ।
 कौंसिलतो है उनकी जिनका है राज ॥
 कहते जाते हैं या इलाही ।
 सोशल हालत की है तबाही ॥
 हम लोग जो इसमें फंस रहे हैं ।
 अग्यार भी दिल से हंस रहे है ॥
 दरअसल न दीन है न दुनिया ।
 पिंजरे में फुदक रही है मुनिया ॥
 स्कीम का भूलना वो भूलें ।
 लेकिन ये क्यों अपनी राह भूलें ॥

सन् १९१४ ई० में योरोपीय महायुद्ध आरम्भ हुआ । आपने
 समाचार पाते ही एक राजल लिखी जिसका एक मिसरा यह था:—

बहम्द अल्लाह ! अब खूने शहीदां रंग लाया है ।

जिस समय यह गज़ल लिखी गई थी अङ्गरेज़ लोग लड़ाई में सम्मिलित नहीं हुवे थे। इस कारण प्रत्यक्ष है कि कवि का संकेत अङ्गरेज़ों की ओर नहीं हो सकता था। किन्तु 'चोर की डाढ़ी में तिनका' की कहावत के अनुसार अफसरों ने यह समझा कि अकबर का इशारा अङ्गरेज़ों ही की ओर है। इस कारण अकबर पर कड़ी दृष्टि पड़ने लगी। अकबर ने इस बात की घोषणा कर दी कि अब मैं काशता नहीं लिखंगा। किन्तु शराबी की तोबा के समान प्राकृतिक कवि की तोबा कभी अधिक काल तक नहीं ठहर सकती। महाकवि गालिब के कथनानुसार 'छुटती नहीं है मुंह से यह काफ़िर लगी हुई'। ज़ाहिर में तो अकबर ने शेर कहना छोड़ दिया, किन्तु चुपके २ शेर लिखते रहे और अपने अभिन्न-हृदय मित्रों को सुनाते रहे। इस समय के लिखे हुए दो एक शेर भी सुन लीजिये:—

[१]

हुकम अकबर को मिला है कि न लिखूँ अशआर !

ख्वाजा हाफ़िज़ भी निकाले गये मयखाने से ॥

[२]

सीने इधर ऐसे कि सहैं जोरे-रफ़ल भी ।

कान उनके वो नाजुक कि गरां मेरी गज़ल भी ॥

महात्मा गांधी के असहयोग (Non Co-operation) के सिद्धान्त से आप की पूर्ण सहानुभूति थी। आपकी ताड़नेवाली निगाह बहुत पहिले ही ताड़ गई थी कि शिक्षा तथा सभ्यता के नाम पर जितनी सरकारी संस्थाएँ हैं सब का यही आशय है कि हम में से जातीयता के भाव जाते रहें और उन्हीं के इशारों पर नाचने लगें:—

उन्हीं के मतलब की कह रहा हूँ, ज़वान मेरी है बात उनकी ।

उन्हीं की महफ़िल संवारता हूँ, चिराग़ मेरा है रात उनकी ॥

फ़क़त मेरा हाथ चल रहा है, उन्हीं का मतलब निकल रहा है ।

उन्हीं का मज़मून उन्हीं का काराज़, कलम उन्हीं का दवात उन्हीं की ॥
 आपका विचार था कि यदि यही दशा रही तो जिनके अन्दर
 जातीयता के भाव बने हुवे हैं उनके अन्दर से भी शीघ्र ही लुप्त
 हो जायेंगे:—

वो इसको महवे-कलीसा बनाके छोड़ेंगे ।

इस ऊंट को खरे-इसा बनाके छोड़ेंगे ॥

करेंगे शौक़ से मुसलिम गिज़ा मय दाखिल ।

शराब को भी हरीसा बनाके छोड़ेंगे ॥

कहा ये शेख़ से अकबर ने रोक अपनी ज़बान ।

कि तुझको भी वे मुझीसा बनाके छोड़ेंगे

अंग्रेजी शिक्षा के विषय में आपका विचार था:—

सय्याद हुनर दिखलाये अगर सब मुमकिन हैं ।

बुलबुल के लिए क्या मुशकिल है उल्लू भी बने और खुश भी रहे ॥

बहुत से लोगों का विचार है कि अंग्रेजों शिक्षा के कारण हिन्दू-
 मुसलमानों की पारस्परिक फूट बढ़ती जाती है । आपका भी यही विचार
 था । देखिये आपने इस विचार को किस अनुपम ढंग से व्यक्त किया है:—

नज्द में भी मगरिबी तालिम जारं हो गई ।

लैलओ-मजनू में आखिर फौजदारी हो गई ॥

आपका विश्वास था कि भारतवर्ष की अधोगति का दायित्व
 सरकार ही पर है—

लेगये घसीट के मुझ को परेड पर ।

तैयार हो रहा था मैं जन्नत के वास्ते ॥

आप यह भी जानते थे कि जब तक भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी
 में रहेगा उन्नति नहीं कर सकता:—

दस्तो-पा-बस्ता^१ हूँ मैं जाहिर कोई गुन क्या करूँ ।

दूसरों के बम में हूँ फिकरे-तमद्दुन^२ क्या करूँ ॥

एक और स्थान पर आपने लिखा है:—

दाने का है हके^१ नश्वोनुमा,^२ इससे तों मुझे इंकार नहीं ।
लेकिन ये बताओ मुझको जरा, वो खेत में है या पेट में है ॥

महात्मा गांधी के अनुसार आप कौन्सिलों से बिल्कुल दूर रहने के पक्ष में थे । स्वराज्य-वादियों का यह विचार, कि कौन्सिलों को तोड़ने के लिये कौन्सिलों में जाना चाहिये, आप को पसन्द न था । सुनिये आप क्या कहते हैं:—

माना कि पढ़ोगे वां पहुँच कर लाहौल^३ ।
जाना ही जरूर क्या है शैतां की तरफ ॥

महात्मा गान्धी के समान आप ईश्वर के न्याय, तथा दया पर भी पूर्ण विश्वास रखते थे । इस विषय को लेकर आपने एक पूरी गज़ल कह डाली है:—

मसजिद में खुदा खुदा किये जावो ।
मायूस न हो दुआ किये जावो ॥
हरगिज़ न 'कजा करो'^४ नमाजें, ।
मरते मरते अदा किये जावो ॥
समझो ये वक्ते-इस्तहां है ।
हों भी जो सितम बफा किये जावो ॥
कितना ही हो वक्ते-बेहिजाबी^५ ।
तुम पैरविये^६-हया^७ किये जायो ॥
उम्मीदे-शफा^८ खुदा से रखो ।
क्यों तर्क^९ करो दवा किये जायो ॥

१. अधिकार । २. विकास । ३. भाग शैतान । ४. छोड़ो ।

५. बेशर्मी का वक्त । ६. अनुगमन । ७. शर्म । ८. आराम ।

९. छोड़ना ।

आपके विचारानुसार तो अंग्रेजों के साथ सहयोग हानिप्रद ही नहीं यरन् एक प्रकार से असंभव था—

क्या हो बिनाये-उल्फत आखिर मुनासबत क्या ।

मैं खाके-बेकसी पर वो तरुते-सलतनत पर ॥

किन्तु आप दिखावे का असहयोग पसन्द नहीं करते थे । आपका कहना था कि यदि पब्लिक में आने जाने के लिये गाढ़े के कपड़े बनवा लिये और दिल में पश्चिमीय सभ्यता का दम भरते रहे तो इस से कुछ लाभ न होगा:—

हुस्ने-बुत दैर^१ में लिये जाता है ।

क्या नतीजा है बिरहमन से खिंचे रहने का ॥

इसही प्रकार असहयोग के समर्थन में आपके बहुत से शेर उद्धृत किये जा सकते हैं । मरने से कुछ दिन पहिले आपने एक पूरा रिसाला 'गान्धी नामा' के नाम से कह डाला था । महात्मा गान्धी के विषय में आपकी सम्मति थी:—

गांधी में सब भलाई लेकिन वो महज बे बस ।

साहब में सब बुराई लेकिन वो खूब चौकस ॥

महात्मा गान्धी से एक बात में आपका मत-भेद था । महात्मा जी केवल आत्मबल पर भरोसा रखते थे किन्तु आप शारीरिक बल को काम में लाने के भी विरुद्ध नहीं थे । आपके निम्न लिखित शेरों से यही बात झलकती है:—

खूब ये बात कही उनसे पुकारो उसको ।

बददुआ सांप को क्या देते हो मारो उसको ॥

एक और स्थान पर इससे भी साफ़ शब्दों में लिखते हैं:—

कसीदे से न चलता है न ये दोहे से चलता है ।

समझलो खूब कारे-सलतनत लोहे से चलता है ॥

फिर भी आप असहयोग रूपी अस्त्र पर बहुत कुछ भरोसा रखते थे:—

जो पूछा 'क्यों कमर इस मनज़िले तारीक में बाँधी।'

जबाने हज़रते-शौकत से बोले हज़रते-गाँधी ॥

'मवाशा अय रह-नवरदे-इश्क गाफिल अज तपीदन हा ।

कि दर आखिर बजाय मी रसद अज खुद रमीदन हा ॥

अर्थात् यह पूछने पर कि आप इस अन्धकारमय पथ पर चलने के लिये क्यों कटिवद्ध हो गये हैं, महात्मा गांधी जी ने मौलाना शोकतअली के शब्दों में यह उत्तर दिया, 'ए, प्रेम-पथ के पथिक तू तड़पने से मत चूक क्यों कि इस पथ पर अपने आपको बिल्कुल भूल जाने वाला ही अन्त में अपने इष्ट स्थान पर पहुँच जाता है ।

पाठक शायद प्रश्न करेंगे कि जब अकबर सत्याग्रह के सिद्धान्त के इतने अधिक पक्ष में थे तो फिर आपने सत्याग्रह-संग्राम में भाग क्यों नहीं लिया ? रण क्षेत्र में क्यों नहीं कूदे ? केवल मौखिक सहानुभूति ही क्यों प्रकट करते रहे ? इस प्रश्न का उत्तर हम अकबर ही के शब्दों में देना चाहते हैं:—

उधर है जेल की जहमत^१ इधर है क़ौम की लानत ।

उधर आराम जाता है इधर ईमान जाता है ॥

ब मजबूरी वो माजूरी^२ शरीके-कैम्प है 'अकबर' ।

मगर जिसको बसीरत^३ है उसे पहचाना जाता है ॥

इन सब बातों पर ध्यान रखते हुवे आपका सत्याग्रह-संग्राम में प्रत्यक्ष रूप से भाग न लेना क्षम्य समझा जा सकता है । किन्तु ऐसा हंते हुवे भी आप सत्याग्रह का विरोध करने वाले सरकार के खुशामि-मिदियों को चेतावनी दे गये हैं:—

कम्पू का जो साथी हो तो घर उसका मिटेगा ।

बङ्गले में हैं वो और ये मौहल्ले में पिटेगा ॥

अकबर का विचार था कि देश के नेता राजनीति के विद्वान् ही होने चाहियें । ऐरे गैरे नत्थू खैरे का नेता बन जाना आपको नहीं भाता था । इस ही कारण आप थह उचित न समझते थे कि मौलवी लोग राजनैतिक विषयों पर भी 'फूतवे' देने लगें । मौलवियों को धार्मिक क्षेत्र में काम करना चाहिये और राजनीतिज्ञों को राजनीति के क्षेत्र में । देखिये इस भावको आपने निम्न लिखित पद्य में किस सुन्दरता के साथ प्रगट किया है: —

नई रोशनी का हुवा तेल कम ।

हकूमत ने उससे किया मेल कम ॥

इधर मौलवी 'कस-म-पुरसी में थे' ।

न आफिस में थे और न कुरसी में थे ॥

ये ठहरी कि आपस में मिल जाइये ।

सयासी^१ कमैटी में पिल जाइये ॥

इसी रोशनी का है बस ये जहूर ।

खुदाजाने जुल्मत^२ है इसमें कि नूर^३ ॥

भावार्थ यह कि एक ओर तो नई रोशनी वाले अर्थात् अंग्रेजी परीक्षा पाये हुवे नौकरियां न मिलने के कारण रुष्ट थे । दूसरी ओर मौलवी भी नाराज़ थे क्यों कि सरकार में उनकी कोई बात न पूछता था । अन्त में दोनों ने मिल कर यही ठानी कि सरकार के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया जाय । ईश्वर ही जाने इस मेल का क्या परिणाम निकलेगा ?

१. कोई पूछने वाला न था । २. राजनैतिक । ३. अन्धकार ।

हिन्दू-मुस्लिम-एकता

अकबर देश के हित के लिये हिन्दू-मुसलमानों की एकता को बहुत आवश्यक समझते थे। हिन्दू तथा मुसलमानों को चाहिये कि आपका निम्न लिखित उपदेश सदैव ध्यान में रखें:—

कहता हूँ हिन्दू वो मुसलमानों से यही ।

अपनी अपनी रविश^१ पै तुम नेक रहो ॥

लाठी है हवाये-दहर^२ पानी बन जाओ ।

मौजों^३ की तरह लड़ो मगर एक रहो ॥

कैसे मार्मिक शब्द हैं। उपमा कैसी अनुपम है। हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्षपाती होने के कारण अकबर कुरबानी तथा हिन्दी-उर्दू का भगड़ा उठाने वालों के विरुद्ध रहते थे। देखिये निम्न लिखित पद्य में अकबर ने इस प्रकार का भगड़ा उठाने वालों के कैसी चुटकी ली है:—

हम उर्दू को अरबी क्यों न करें, वो उर्दू को भाषा क्यों न करें ।

भगड़े के लिये अखबारों में, मजमून तराशा क्यों न करें ॥

आपस में अदावत^४ कुछभी नहीं, लेकिन एक अखाड़ा कायम है ।

जब इससे फलक का दिल बहले, हम लोग तमाशा क्यों न करें ॥

अकबर न तो मुसलमान मौलवियों के समान उर्दू में बड़े बड़े अरबी फ़ारसी शब्द ठूसने के पक्ष में थे और न आर्यसमाजियों के समान उर्दू में कठिन संस्कृत शब्दों का प्रयोग ही उचित समझते थे। आप चाहते थे कि उर्दू उर्दू ही रहे। इसी विषय से सम्बन्ध रखने वाला एक और पद्य भी सुनने लायक है:—

भगड़ा कभी गाय का जवां की कभी ब्रह्म ।
है सख्त मुज़िर ये नुसखये गावज़बां ॥

भावार्थ यह है कि आज कल जहां देखो हिन्दू-मुसलमानों में भगड़े ही दीखते हैं । कहीं कुरबानी का भगड़ा है, कहीं हिन्दी-उर्दू का भगड़ा है । किन्तु यह गावज़बां का नुसखा अर्थात् गाय तथा भाषा के भगड़े दोनों के लिये हैं बहुत अहितकर । दूसरे मिसरे के 'गावज़बा' शब्द ने शेर में विशेष चमत्कार पैदा कर दिया है । गावज़बा के अर्थ गाय तथा भाषा के हैं, किन्तु साथ ही साथ गावज़बां एक प्रसिद्ध यूनानी औषधि का भी नाम है ।

गतवर्षों में दशहरा और मौहरम एक साथ होने पर पण्डित मदन-मोहन मालवीय जी के कहने से आपने जो पद्य लिखे थे वे भी सुनने योग्य हैं:—

मुहरम और दशहरा साथ होगा ।
निर्वाह उसका हमारे हाथ होगा ॥
खुदा ही की तरफ़ से है ये संजोग ।
तो बाहम क्यों न रखें सुलह हम लोग ॥

संजोग को ईश्वर की ओर से बताकर अकबर ने आस्तिक हिन्दू मुसलमानों को आपस में मेल रखने के लिये कैसा प्रबल कारण दिया है ।

अब तक भारतवर्ष की राजनैतिक समस्याओं पर ही अकबर के विचार प्रगट किये गये हैं, किन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि अकबर की दृष्टि भारतवर्ष की चार दीवारी से बाहर नहीं गई थी । आपने अन्तर्जातीय समस्याओं पर भी बहुत कुछ लिखा है ।

अंग्रेज़ ऐतिहासिक इतिहास लिखते समय बहुधा उन घटनाओं को छिपा जाते हैं या बदल देते हैं जिनसे अंग्रेज़ों की क्रूरता प्रगट होती है और अन्य जातिवालों पर ऐसी घटनाओं का, जिनका अस्तित्व केवल उनके मस्तिष्क ही में होता है, उत्तर-दायित्व डाल देते हैं। काल कोठरी की घटना इसी प्रकार की घटनाओं में है। अस्तु । अंग्रेज़ ऐतिहासिकों का मत है कि इसलाम धर्म तलवार के ज़ार से फैला है। देखिये इस इलज़ाम का जवाब अकबर ने किस मज़े से दिया है:—

अपने ऐबों की न कुछ फिक्र न परवा है ।

गलत इलज़ाम बस औरों पै लगा रक्खा है ॥

यही फरमाते रहे तेरा' से फैला इसलाम ।

ये न इरशाद हुवा तोप से क्या फैला है ॥

अर्थात् अपने अवगुणों पर भी दृष्टि डालिये । या दूसरों ही पर झूठा अभियोग लगाना आता है। आप यह तो कहते रहे कि इसलाम धर्म तलवार से फैला है किन्तु यह न बताया कि तोप से क्या क्या फैला है । निर्बल जातियों की स्वतन्त्रता हरण करने का भी तो कुछ वर्णन कीजिये ।

पश्चिमीय जातियाँ पहिले तो अस्त्र-शस्त्र द्वारा निर्बल जातियों की स्वतन्त्रता छीन लेती हैं और फिर शिक्षा देने तथा सभ्यता सिखाने के बहाने उनके अन्दर से जातीयता के भाव मिटाने की चेष्टा करती हैं। इस भाव को देखिये अकबर ने किस सुन्दरता से तथा कितने थोड़े शब्दों में व्यक्त कर दिया है:—

तोप खिसकी प्रोफेसर पहुँचे ।

जब बिसोला हटा तो रन्दा है ॥

यदि कोई पूर्वीय जाति अपनी उन्नति करना चाहती है तो वह जाति यूरोप की दृष्टि में कांटे के समान खटकने लगती है । उसके मार्ग में अनेकों रुकावटें डालने का प्रयत्न किया जाता है । पूर्वीय जातियों की इस हृदय-विदारक दशा का अकबर ने ऐसा विनोद-पूरण चित्र उतारा है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है सुनिये क्या कहते हैं:—

सर-अफ-राज़ी^१ हो ऊंटों की तो गरदन काटिये उनकी ।

अगर बन्दर की बन आये तो फैजे-^२ इरतफा^३ कहिये ॥

अकबर के राजनैतिक विचारों को पाने से मालूम होता है कि आप बड़े ही निर्भीक वक्ता थे । सरकारों नौकर होते हुये भी इस प्रकार के विचार प्रगट कर जाना आपही का काम था:—

जब आँख को खुलने में हो झपक, जब मुँह में जवां जविश^४ से डरे ।
इस कैद में क्यों कर जीना हो, अल्लाह ही अपना फज़ल करे ॥
क्या नाज़ हो ऐसी साअत^५ पर, अफसोस है ऐसी हालत पर ।
या झूठ कहे या कुछ न कहे, या कुफ़ करे या कुछ न करे ॥
क्रातिल को भरोसा कुब्वत का, और हम को खुदा की रहमत^६ का ।
होना था जो कुछ हो ही लिया, वो भी न रुका हम भी न डरे ॥

अकबर के पत्र

इस छोटी सी जीवनी को समाप्त करने से पहिले अकबर के पत्रों से भी पाठकों का परिचय करा देना उचित प्रतीत होता है । यूं तो स्यात् ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे कभी पत्र लिखने या लिखवाने का काम न पड़ता हो, किन्तु साधारण मनुष्यों के पत्रों तथा साहित्यशौं के पत्रों में आकाश-पाताल का अन्तर होता है । अंग्रेजी आदि उत्तम भाषाओं

१. बढ़ती । २. प्रसाद । ३. विकाश । ४. हिलना । ५. समय ।
६. क्षमा ।

में तो उपन्यास आदि के समान पत्र-लेखन भी साहित्य की एक महत्वपूर्ण शाखा समझी जाती है। खेद का विषय है कि हिन्दी वालों का साहित्य के इस अङ्ग की पूर्ति की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। एक भी हिन्दी लेखक या कवि ऐसा नहीं है जिसके पत्र साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण ठहराये जा सकें। और हा भी कहाँ से ?

हम लोग तो हिन्दी में पत्र लिखना अपमान-सूचक तथा अंग्रेजी से अनभिज्ञ होने का कारण समझते हैं। अस्तु। यद्यपि उर्दू में भी साहित्य की दृष्टि से अच्छे पत्र लिखने वाले बहुत कम साहित्यसेवी हुवे हैं, किन्तु फिर भी गालिब, आज़ाद (शम्सुल उल्मा मौलवी मौहम्मद हुसैन आज़ाद) और अकबर—इन तीन लेखकों—के पत्र ऐसे हैं जो साहित्य-सेवियों में आदर की दृष्टि से देखे जा सकते हैं।

अकबर के पत्रों की भाषा बहुत ही सरल तथा सारगर्भित है। दार्शनिक समस्याओं को भी बहुत ही साधारण शब्दों में हल कर दिया है। बड़े बड़े भावों को दो शब्दों में व्यक्त कर दिया है। यदि किसी के विरुद्ध भी लिखा है तो इस ढङ्ग से कि उसको किंचित् भी बुरा न मालूम हो। आपके पत्र पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आप सामने खड़े बात कर रहे हैं। पाठकों के मनोरंजन के लिये यहां पर आपके तीन छोटे छोटे पत्र उद्धृत किये जाते हैं। इनमें से पहिले दो पत्र देहली-निवासी ख्वाजा हसन निजामी के नाम हैं और तीसरा पत्र मौलाना अब्दुल माजिद के नाम है:—

[१]

‘ मुकर्रमी दाम मजद कुम ’ !

मुद्दत से आपका खत नहीं आया। हूरबानू कैसी है ? मेरे खतूत

१. मान्यवर ! आप हमेशा बुजुर्ग होवें ।

पहुँचे होंगे ? अपना हाल क्या लिखूँ ? मेरी दुनिया हो चुकी है । जिन्दगी ब्रक्ती रह गई है । उसका बसर करना दुशवार हो रहा है ।

बहे जाते हैं बेमकसूद^१ बहरे-जिन्दगानी^२ में ।

अमराज से तकलीफ़ एक तरफ़ । दुनिया की सर्द महरी का आलम एक तरफ़ । याराने-मुवाफ़िक़ का साथ नहीं । खुदायेकरीम नदारद । इशरत मंजिल की बीरानी और अपनी माजूरी पेशे-नज़र । माजिद मियां ज़लाई में आने वाले हैं । मैं तो खुद ही यहां इशरत मियां का महमान हूँ । महमां-नवाज़ी क्या करूंगा ।

एक ख़त में एक फ़िक़रा लिख गया हूँ । इख़्तसार और मानी को देखिये । इशरत मियां चाहते हैं कि आराम से रहूँ, खुश रहूँ । लेकिन आराम की उम्र नहीं, खुशी की अमलदारी नहीं । ग़ालिबन इस फ़िक़रे को आप लिट्टेरी और पब्लिक माल करार दें ।

अकबर-प्रतापगढ़, १६ जून, सन् १९२१ ई० ।

(२)

मुकरमी^३ ! फ़तवाये-फ़ितरत यही है कि देहली में रहिये । तकलीफ़ें उठाइये । बा-सलीका नौकर हम लोगों के लिये उनका होते जाते हैं । फ़ारसी भूल जाइये, गुस्ता कम हो जाय । मेरठ का सफ़र भी इस मौसम में ज़हमत^४ से ख़ाली न हुवा होगा । नवाब साहब के मोटर से गिरने का अफ़सोस हुवा । अपना शेर याद आया:—

अजम^५ कर तकलीदे-मगरिब^६ का हुनर के ज़ोर से ।

लुफ़ क्या है लद लिये मोटर पै ज़र के ज़ोर से ॥

नवाब साहब को आपने फ़रिश्ता-सिफ़त लिखा है । मैं कहता हूँ इससे भी ज्यादा । फ़रिश्ते सिर्फ़ नेक और मुक़द्दस^७ होते हैं । आक़ल

१ बिना उद्देश्य । २ जीवन रूपी समुद्र । ३ मान्यवर । ४ कष्ट ।

५ इरादा । ६ पश्चिम का अनुगमन । ७ पवित्र ।

की उनको ज़रूरत नहीं क्यों कि सिर्फ हुक्मेखुदा की तामील कर देते हैं । नवाब साहब अक्लमन्द भी हैं । मेरे कदीम इनायत-परमा हैं । दूर को फिर बुला लीजियेगा । उदू^१ आजाय मजहब से वाकिफ हो जाय । बस काफी है । बहुत प्यारी लड़की है और वाजिब-उल्-रहम है ।

अकबर—इलाहाबाद, २२ मई, सन् १६६२ ई०

[३]

इलाहाबाद—२८ अगस्त सन् १६१७ ई०

अजीज मुकर्रम सलमा अल्लाह ताला ! आपने खूब लिखा^१ की निस्वत । भला देखिये तो जो शख्स हाफिज^२ को बद कहे उसको क्या कहूँ ? मगर मजबूरी है ।

अफसोस है कि आप से मुझ से कबल-रवानगी हैदराबाद मुलाकात न होगी । खैर, अल्लाह आपको कामयाब करे । मैं क्या ? मेरी जिन्दगी क्या ?

फलक^३ मशशाक है पैहम^४ नया जलवा दिखाने में ।

जमी को देर क्या गुज़रेहुओं को भूल जाने में ॥

लखनऊ पहुँचा तो आपके वगैर सूना नज़र आयगा । ख़तीब मेजता हूँ । बाद मुलाहज़ा वापिस फ़रमाइये । हैदराबाद से ख़त लिखियेगा । ख्वाजा गुलाम हुसैन साहब का इन्तक़ाल इब्रत-अंगेज़ है । वह मुझ से भी मिले थे । लेकिन भूल जाने में दुनिया को देर न लगेगी । क्या राज़े-हस्ती है । खुदा शीर की फुरसत दे । मालूम हुवा कि आपके दोस्त ख्वाजा साहब का चीफ़ कमिश्नर ने अपने सूबे में

१ ख्वाजा साहब की लड़की का नाम है । २ फारसी का प्रसिद्ध कवि । ३ आकाश । ४ लगातार ।

कैदे-निगरानी से बरी कर दिया । काश यहां भी ऐसा हो । बर्न साहब लखनऊ कब आयेंगे ? कब तक रहेंगे ?

—अकबर ।

निस्सन्देह अकबर अपने समय के उर्दू के सब से बड़े तथा अनुपम कवि थे । आपकी मृत्यु से उर्दू-साहित्य को जो हानि पहुंची है उसका अनुमान नहीं किया जा सकता । खेद की बात तो यह है कि शीघ्र ही आपके स्थान की पूर्ति की कोई आशा नहीं दिखाई देती । आपके स्वर्गवास ने बहुत दिनों के लिये उर्दू-समाज को सूना कर दिया है—

कोई बैठ के लुत्फ उठायेगा क्या ।

कि जो रौनके- बज्म तुम्हीं न रहे ॥

—अकबर ।

महाकवि अकबर का उर्दू-काव्य

धर्म, तत्त्वज्ञान तथा उपदेश

- १—कमशिन हो अभी तजरुवा दुनिया का नहीं है ।
तुम खुद ही समझ जाओगे खुदा भी है कोई चीज़ ॥ १ ॥
तदबीर सदा रास्त जो आती नहीं अकबर ।
इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज़ ॥ २ ॥
मैंने कहा क्यों लाश पै आक्रा की है मरता ।
होटल की तरफ़ जा कि गिज़ा भी है कोई चीज़ ॥ ३ ॥
कुत्ते ने कहा कि हो ये जहालत की तास्सुब ।
लेकिन मेरे नज़दीक बफ़ा भा है कोई चीज़ ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—कमसिन-कम उम्र रास्त न आना-ठीक न पढ़ना, आक्रा-
स्वामी जहालत-मूर्खता, तास्सुब-पक्षपात ।

- २—जो मिल गया वो खाना दाता का नाम जपना ।
इसके सिवा बताऊँ क्या तुम को काम अपना ॥ १ ॥
रोना है तो इसका कोई नहीं किसी का ।
दुनिया है और मतलब मतलब है और अपना ॥ २ ॥
अय बिरहमन हमारा तेरा है एक आलम ।
हम खाब देखते हैं तू देखता है सपना ॥ ३ ॥
बे इश्क के जवानो कटनी नहीं मुनासिब ।
क्योंकर कहूँ कि अन्ध्रा है जेठ का न तपना ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—आलम-दशा ।

३—अजल से वो डरें जीने को जो अच्छा समझते हैं ।

यहां हम चार दिन की ज़िन्दगी को क्या समझते हैं ॥ १ ॥

यकी कुफ़्फ़ार को आता नहीं रोजे-क़यामत का ।

इसे भी वो तुम्हारा वादये-फ़रदा भमझते हैं ॥ २ ॥

मैं अपने नक़्द दिल से जिन्से-उल्फ़ल मॉल लेता हूँ ।

अतिब्बा को ज़रा देखो इसे सौदा समझते हैं ॥ ३ ॥

इसे हम आख़िरत कहते हैं जो मशगूले-हक़ रक्खे ।

खुदा से जो करे शाफ़िल उसे दुनिया समझते हैं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—कुफ़्फ़ार-नास्तिक, क़यामत-ईश्वरीय न्याय का दिन, फ़रदा-कल, उल्फ़त-प्रेम, अतिब्बा-वैद्य, सौदा-पागलपन, आख़िरत-परलोक, मशगूले हक़-ठीक मार्ग पर ।

४—मुश्ताक़ नहीं ज़िन्दगी के ।

मरना है तो क्या करेंगे जी के ॥ १ ॥

पाई न किसी में बू बफ़ा की ।

चाहा था कि हो रहें किसी के ॥ २ ॥

तौहीद का मसला है असली ।

बाक़ी हैं शगूफ़े हिस्ट्री के ॥ ३ ॥

रिन्दी किस काम की ये अक़बर ।

मिलते ही नहीं जब किसी से पीके ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—मुश्ताक़-इच्छुक तौहीद-अद्वैत, मसला-सिद्धान्त, शगूफ़े-समस्यायें, हिस्ट्री-इतिहास, रिन्दी-मस्ती ।

५—हो मुझे पेंबुतों की चश्मे-करम दिल को ये तलब अस्ला न रही ।

मुझको भी खुदा ने ग़ैरत दी उनको जो मेरी परवा न रही ॥ १ ॥

दुनिया का तरद्दुद जब तक था जब तक कि हम उसके तालिब थे ।

फेरी जो नज़र ग़म हो गये कम रग़बत न रही दुनिया न रही ॥ २ ॥

सच पूछिये तो राहत ही मिली दुनिया से जुदा हो जाने में ।
थोड़ी सी उदासी है भी तो हो आफत तो मगर बरपा न रही ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—चश्मे करम-कृपा की दृष्टि, तलब-इच्छा, अस्ला-बिल्कुल
गैरत-लज्जा तरदुद-दुःख, तालिब-इच्छुक, रग़बत-प्रवृत्ति, राहत-आराम ।

६—फलरुफ़ी को बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं ।
डोर को सुलभा रहे हैं और सिरा मिलता नहीं ॥ १ ॥
मारफ़त ख़ालिक की आलम में बहुत दुशवार है ।
शहरे-तन में जब कि खुद अपना पता मिलता नहीं ॥ २ ॥
शाफ़िलों के लुफ़ को काफ़ी है दुनियावी खुशी ।
आक़िलों को बेग़मे-उक़बा मज़ा मिलता नहीं ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—मारफ़त-ज्ञान, ख़ालिक-विधाता, आलम-संसार, उक़बा-
परलोक ।

७—सब जानते हैं इल्म से है ज़िन्दग़ाये-रूह ।
बेइल्म है अगर तो वो इन्सां है नातमान ॥ १ ॥
बे इल्म बे हुनर है जो दुनिया में कोई क़ौम ।
नेचर का इक़तज़ा है रहे बनके वो गुलाम ॥ २ ॥
तालीम अगर नहीं है ज़माने के हस्ब हाल ।
फिर क्या उम्मीदे-दौलतो-आरामो-अहतराम ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—इक़तज़ा-तक़ाज़ा, हस्ब हाल-समय के अनुसार,
अहतराम-मान ।

८—कुछ ग़र्ज़ और है अहबाब न इस शक में रहें ।
बस ये है शौक़ कि पन्चिलक की भकभक में रहें ॥ १ ॥
नहीं मंज़ूर नमाज़ों में गुज़ारें रातें ।
हां कमैटी हो तो उलफ़े हुये भकभक में रहें ॥ २ ॥

नगमये-मुर्गों-सहर से नहीं अंजन को गरज ।

पेट अङ्गारों से भर दीजिये भकभक में रहें ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—अहवाच-मित्रगण, नगमये, मुर्गें सहर-प्रातःकाल के मुर्गों की आवाज ।

६—बस यही काम सबको करना है ।

यानी जीना है और मरना है ॥ १ ॥

अब रही ब्रह्म रंजो राहत की ।

ये फलन वक्त का गुजरना है ॥ २ ॥

सब से बदतर बुतों से है उम्मीद ।

सब से बेहतर खुदा से डरना है ॥ ३ ॥

१०—ये शेख अकबर से इतना क्यों खफा है ?

ये क्यों गैजो-गजब जोरो जफा है ॥ १ ॥

है नहीं भगड़े की इस में कोई बात ।

ये एक कौले-हकीमे-बाशफा है ॥ २ ॥

न हो मजहब में जब जोरे-हकूमत ।

तो वो क्या है फलत एक फलसफा है ॥ ३ ॥

११—आफिशल आमालनामे की न होगी कुछ सनद ।

हथ में तो नामये-आमाल देखा जायगा ॥ १ ॥

बच रहे ताऊन से तो अहले-शफलत बोल उठे ।

अब तो मौहलन है फिर अगले साल देखा जायगा ॥ २ ॥

तह करो साहब नसबनामे वो वक्त आया है अब ।

वे असर होगी शराफत माल देखा जायगा ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—नामये आमाल-कर्मों का लेखा । नसबनामा-वंशावलि ।

१२—क्या है मजहब एक मुल्की और सोशल इन्तज़ाम ।
 ये नहीं पहचान हरगिज़ काफ़िरो-दींदार की ॥ १ ॥
 सूरतो-अलफ़ाज का अकसर नहीं है ऐतबार ।
 हैं फ़कत ये आदतें रफ़तार की गुफ़तार की ॥ २ ॥
 हैं हर एक मजहब में कुछ काफ़िर भी कुछ दींदार भी ।
 याद रख तू बात ये एक महरमे-इसरार की ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—सोशल-सामाजिक रफ़तार-चलन, गुफ़तार-बातचीत महरमे
 इसरार-रहस्य जानने वाला ।

१३—फ़िलसफ़ी तजरुबा करता था हुवा मैं ख़ुसत ।
 मुझ से वो कहने लगा आप किधर जाते हैं ॥ १ ॥
 कह दिया मैंने हुवा तजरुबा मुझको तो यही ।
 तजरुबा हो नहीं चुकता है कि मर जाते हैं ॥ २ ॥

१४—हर खाक के पुतले को उभारा है फ़लक ने ।
 यकताई के इज़हार में मस्त अहले-ज़मीं हैं ॥ १ ॥
 हर एक को ये दावा है कि हम भी हैं कोई चीज़ ।
 और हम को ये नाज़ कि हम कुछ भी नहीं हैं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—फ़लक-आकाश, यकताई-आद्वितीयता अहले-ज़मीं-पृथ्वी
 वाले नाज़-गर्व ।

१५—किसी को भी किसी से कुछ नहीं इस बाब में भगवा ।
 करो तुम ध्यान परमेश्वर का दिल को उसका दर्शन हो ॥ १ ॥
 मगर मुश्किल तो है ये नाम सब लेते हैं मजहब का ।
 गरज़ लेकिन ये होती है जथा हो और भोजन हो ॥ २ ॥

१६—मैं तो हमदर्द हूँ बस उनकी ग़िरफ्तारी का ।
 कैदे-हस्ती से जो मुश्ताक है आज़ादी के ॥ १ ॥

ढूँढना चाहिये था अकबरे-बेकस को वहां ।

एक वीराना भी है मुत्तसिल आबादी के ॥ २ ॥

शब्दार्थ—हस्ती-अस्तित्व, मुश्ताक-इच्छुक, मुत्तसिल-निकट ।

१७—पेच मज़हब का किसी साहब ने ढीला कर दिया ।

सादा तबश्चों को भी रंगीला कर दिया ॥ १ ॥

शौक पैदा कर दिया बंगले का और पतलून का ।

वो मसल है मुफलिसी में आटा गोला कर दिया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—सादा तबश्चों-सीधे स्वभाव वालों ।

१८—जनाबे-शेख से जाकर ज़ग लिल्लाह कह देना ।

कि गुमराही थी मुझ से रिन्द को गुमराह कह देना ॥ १ ॥

बहुत मुश्किल है वचना बादये-गुलगू से खिलवत में ।

बहुत आसान है यारों में मअ्राज़-अल्लाह कह देना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लिल्लाह-ईश्वर के लिये, रिन्द-मस्त, खिलवत-एकान्त, गुमराह-भ्रष्ट, बादये गुलगू-सुख शराब, मअ्राज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण ।

१९—मुनकिर है रूह के जो ये अहले-ज़रूर ।

एक अमर है पूछना हमें उनसे ज़रूर ॥ १ ॥

है फहमो-ख़िर्द का तुम को दावा ये कहो ।

पैदा हुवा मादे में क्यों कर ये शऊर ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मुनकिर-इंकार करने वाले, फहम-समझ, ख़िर्द-बुद्धि, मादा-प्रकृति ।

२०—चाल दुनिया की तुम्हें महसूस हो दुश्धार है ।

ये ज़मीं चलती है तेज़ी से मगर हिलती नहीं ॥ १ ॥

दिल के जो दुश्मन हैं उनके शौक में रहती है आँख ।

जान का मालिक जो है उससे नज़र मिलती नहीं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—महसूस-अनुभव दुश्वार-कठिन ।

२१—खाने से अगर जीना होता मरते न कभी जीने वाले ।

खाना भी खुदा के हुक्म से है जीना भी खुदा के हुक्म से है ॥ १ ॥

ईमान से उलफत रखता हूँ शैतान को दुश्मन जानता हूँ ।

उल्फत भी खुदा के हुक्म से है कीना भी खुदा के हुक्म से है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—उल्फत-प्रेम, कीना-द्वेष ।

२२—दिल मेरा जिस से बहलता कोई ऐसा न मिला ।

बुत के बन्दे मिले अल्लाह का बन्दा न मिला ॥ १ ॥

सय्यद उठे जो गज़ट लेकर तो लाखों लाये ।

शेख कुरआन दिखाते फिरे पैस न मिला ॥ २ ॥

२३—इनकलाबे-जहां को देख लिया ।

हुब्बे-दुनिया से कलब पाक हुवा ॥ १ ॥

फल कली खिल के होगई थी फूल ।

फूल कुम्हला के आज खाक हुवा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—इनकलाब-परिवर्तन, हुब्बे दुनिया-संसार का प्रेम,
कलब-दिल ।

२४—हे सबो-कनाअत एक बड़ी चीज ।

लज्जत अभी उसकी तूने चक्खी है कहां ॥ १ ॥

दुनिया-तलबी के बाज़ में महु है तू ।

ये तो ज़रा समझ कि रखी है कहाँ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—कनाअत-संतोष, बाज़-उपदेश महु-निमग्न ।

- २५—कहा बुक्रात से दुनिया में क्यों आया तू ए, दाना ।
 कहा उसने कि मैं लाया गया मुझको पढ़ा आना ॥ १ ॥
 कहा क्योंकर बसर की उम्र बोला साथ हैरत के ।
 'कहा क्या जाना' ? बोला 'कुछ नहीं जाना यही जाना' ॥ २ ॥

शब्दार्थ—बुक्रात-यूनान का प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी, हैरत-आश्चर्य ।

- २६—'अकबर' से मैंने पूछा अय वाइजे-तरीकत ।
 दुनियाये-दूँ से रक्खूँ मैं किस क़दर तअल्लुक ॥ १ ॥
 उसने दिया बलागत से ये जवाब मुझको ।
 अंगरेज़ को है नेटिव से जिस क़दर तअल्लुक ॥ २ ॥
 शब्दार्थ—वाइजे तरीकत धर्मोपदेशक । दुनियाये दूँ-कमीनी दुनीया ।

- २७—इल्मो-हिकमत में हो गर ख्वाहिशे-फेम ।
 सरकार की नौकरी को हरगिज न कर एम' ॥ १ ॥
 शादी न कर अपनी क़ब्ले-तहीसले-अलूम ।
 बुत हो कि परी हो ख्वाह बो हो कोई मेम ॥ २ ॥
 शब्दार्थ—एम-उद्देश्य, फेम-ख्याति, क़ब्ल-पूर्व, तहसोले अलूम-बिदा
 प्राप्त करना ।

- २८—कुछ सनअतो-हिरफत पै भी लाजिम है तवज्जो ।
 आख़िर ये गवन्मैन्ट से तनख्वाह कहां तक ॥ १ ॥
 मरना भी ज़रूरी है खुदा भी है कोई चीज़ ।
 अय हिर्स के बन्दे हविसे-जाह कहां तक ॥ २ ॥

शब्दार्थ—सनअतो हिरफत—शिल्प, जाह—पद, औहदा ।

२६—गफलत की हंसी से आह भरना अच्छा ।

अफआले-मुज़िर से कुछ न करना अच्छा ॥ १ ॥

‘अकबर’ ने सुना है अहले-गैरत से ये ही ।

जीना ज़िल्लत से हो तो मरना अच्छा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अफआल-कार्य, मुज़िर-हानिकारक, अहले गैरत- आत्म-सम्मान का ख्याल रखने वालो ।

३०—जो अपनी जन्दगानी को हुवाब-आसा समझते हैं ।

नफस की मौज को मौजे-लबे दरिया समझते हैं ॥१॥

जो हैं अहले-बसीरत इस तमाशागाहे-हस्ती में ।

तिलस्मे-जिन्दगी को खेल लङ्कों का समझते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—हुवाब आसा-बुलबुले के समान, नफस-सास, अहले-बसीरत-ज्ञानी, तमाशागाहे हस्ती-संसार,

३१—जब लुत्फो-करम से पेश आये महबूब ।

अगले रजों को भूल जाना अच्छा ॥१॥

जब मिस्ले-नसीम वो गले से लग जाये ।

मानिन्द कली के फूल जाना अच्छा ॥२॥

शब्दार्थ—लुत्फो करम-मेहरबानी, महबूब-प्यारा, नसीम-प्रातःकाल की वायु ।

३२—क्या तुम से कहें जहा को कैसा पाया ।

गफलत ही में आदमी को डूबा पाया ॥१॥

आँखें तो बेशुमार देखीं लेकिन ।

कम थीं बखुदा कि जिनको बीना पाया ॥२॥

शब्दार्थ—बीना-वास्तविकता को देखने वाली ।

३३—हर एक को नौकरी नहीं मिलने की ।

हर बाग में ये कली नहीं खिलने की ॥१॥

कुछ पढ़के तू सनअतो-ज़राअत को देख ।

इज्जतकेलिये काफी है अय दिल नेकी ॥२॥

शब्दार्थ—सनअत-शिल्प. ज़राअत-कृषि ।

३४—आला मकसद चाहिये पेशे-नज़र ।

कोशिश तेरी गो हो लुत्फे-ज़ाती के लिये ॥१॥

फ़रहाद पहाड़ पर अमल करता था ।

शीरी के लिये कि नाशपाती के लिये ॥२॥

शब्दार्थ—आला-उच्च, मकसद-उद्देश्य, पेशे नज़र-आंखों के सामने ।

३५—नफ़स के ताबअ हुवे ईमान रखसत हो गया ।

वो जनाने में घुसे मेहमान रखसत हो गया ॥१॥

मय उन्होंने पी अब उनके पास क्योंकर दिल लगे ।

जानवर इक रह गया इन्सान रखसत होगया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नफ़स-वासना, ताबअ-अनुयायी, मय-शराब ।

३६—ऊंचा नीयत का अपनी ज़ीना रखना ।

अहबाब से साफ़ अपना सीना रखना ॥ १ ॥

गुस्सा आना तो नेचरल^१ है अकबर ।

लेकिन है शदीद ऐब कीना रखना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण, नेचरल-प्राकृतिक, शदीद-शरत, कीना-द्वेष ।

३७—औरों की कही हुई जो दोहराते हैं ।

वो फ़ोनोग्राफ़ की तरह गाते हैं ॥ १ ॥

खुद सोच के हस्ब-हाल मजमूं निकाल ।

इन्सान यूँही तरक्कियां पाते हैं ॥ २ ॥

३८—शफलत को छोड़ दीजिये कुछ काम कीजिये ।

इल्मो-हुनर से नाम का अंजाम कीजिये ॥ १ ॥

गर कुछ नहीं तो हजरते-अकबर का कौल है ।

मुरदों के साथ कब्र में आराम कीजिये ॥ २ ॥

३९—हासिल करो इल्म तबअ को तेज करो ।

बातें जो बुरी हैं उनसे परहेज करो ॥ १ ॥

कौमी इज्जत है नेकियों से अकबर ।

इसमें क्या है कि नकले-अंगरेज करो ॥ २ ॥

४०—रोज़ी मिल जाय मालो-दौलत न सही ।

राहत हो नसीब शानो-शौकत न सही ॥ १ ॥

दरबार में खुश रहें अजीजों के साथ ।

दरबार में बाहमी रक्काबत न सही ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, नसीब-प्राप्त, अजीज-प्यारा, बाहमी रक्काबत-पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता ।

४१—खातिर मजबूत दिल तवाना रक्खो ।

उम्मीद अच्छी खयाल अच्छा रक्खो ॥ १ ॥

हो जायेंगी मुश्किलें तुम्हारी आसान ।

‘अकबर’ अल्लाह पै भरोसा रक्खो ॥ २ ॥

शब्दार्थ—तवाना-मजबूत ।

४२—गर जेब में जर नहीं तो राहत भी नहीं ।

बाजू में सक्त नहीं तो इज्जत भी नहीं ॥ १ ॥

गर इल्म नहीं तो ज़ोरो-ज़र है बेकार ।

मजहब जो नहीं तो आदमियत भी नहीं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, सक्त-ताक़त ।

४३—दौलत वो है जो अक्लो-मेहनत से मिले ।

लज्जत वो है कि जोशे-सेहत से मिले ॥ १ ॥

ईमां का हो नूर दिल में वो राहत है ।

इज्जत वो है जो अपनी मिललत से मिले ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नूर-प्रकाश, राहत-आराम, मिललत-जाति ।

४४—आमाल के हुस्न से संवरना सीखो ।

अल्लाह से नेक उम्मीद करना सीखो ॥ १ ॥

मरने से मफर नहीं है जब अय 'अकबर' ।

'बेहतर है यही खुशी से मरना सीखो ॥ २ ॥

शब्दार्थ—आमाल-कार्य, हुस्न-सौन्दर्य, मफर-भागने की जगह ।

४५—आजाद से दीन का गिरफ्तार अच्छा ।

शरमिन्दा हो दिल में जो गुनहगार अच्छा ॥ १ ॥

हरचन्द कि ज़ोर भी है एक खसलते-बद ।

वल्लाह बेहया से मक्कार अच्छा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दीन-धर्म, खसलत-स्वभाव ।

४६—मर्द को चाहिये क़ायम रहे ईमान के साथ ।

ता-दमे-मर्ग रहे यादे-खुदा जान के साथ ॥ १ ॥

मैंने माना कि तुम्हारी नहीं सुनता कोई ।

सुर मिलाना तुम्हें क्या फ़ज़ है शैतान के साथ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—ता दमे मर्ग—मृत्यु-पर्यन्त ।

४७—वाइज़ ने कहा खौफ़े-खुदा भी है कोई चीज़ ।

उस बुत ने कहा मेरी अदा भी है कोई चीज़ ॥१॥

खुलते हुवे उक़दे नज़र आते हैं हज़ारों ।

मालूम हुवा उक़दा-कुशा भी है कोई चीज़ ॥२॥

शब्दार्थ—वाइज़-उपदेशक, उक़दे-ग्रन्थियाँ, उक़दा-कुशा-ग्रन्थ को खोलने वाला ।

४८—अगर मिला नहीं मिलने का आसरा तो है ।

हमें इसी में है तिस्कीने-दिल खुदा तो है ॥१॥

अजल को देखके ज़ेरे फ़लक करार आया ।

मुसीबतों का बिलाख़िर इक इन्तहां तो है ॥२॥

शब्दार्थ—तिस्कीने दिल-हृदय की शान्ति, अजल-मृत्यु-जेरे, फलक आसमान के नीचे, करार—सन्तोष, बिलाख़िर-अन्त में ।

४९—इक नज़र का है तआल्लुक़ इस जहां से होश को ।

सब का सब इक जुम्बिशे-मिज़गां में पिनहां हो गया ॥१॥

तकें-दुनिया से हुई जमईयते-खातिर नसीब ।

हाल मेरा गो कि ज़ाहिर में परीशां हो गया ॥२॥

शब्दार्थ—जुम्बिशे मिज़गां-एक पल, पिनहां-आभूल, तकें दुनिया-संसार का परित्याग, जमईयते खातिर-आत्मा की शान्ति, परीशां-विकल ।

५०—छोड़ देहली लखनऊ से भी न कुछ उम्मीद कर ।

नज़्म में भी वाज़े-आज़ादी की अब ताईद कर ॥१॥

साफ़ है रोशन है और है साहबे-सोज़ो-गुदाज़ ।

शायरी में बस ज़बाने-शमा की तकलीद कर ॥२॥

शब्दार्थ—नज़्म-कविता, वाज़े-आज़ादी—स्वतंत्रता का उपदेश, ताईद-अनुमोदन, साहबे सोज़ो गुदाज़—जलने और पिघलने वाला अर्थात् दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाला, ज़बाने शम्मा-दीपक की लौ रूपी जिह्वा, तकलीद-अनुकरण ।

भावार्थ—अब लखनऊ देहली के कवियों के रंग में कविता करना व्यर्थ है। अब तो कविता में भी स्वतंत्रता का उपदेश होना चाहिये। कविता में दीपक की लौ रूपी जिह्वा का अनुकरण करना चाहिये। जिस प्रकार दीपक उज्ज्वल प्रकाश देता है तथा सभासदों की दुर्दशा पर अपना दिल जलाता है, इसी प्रकार कविता भी ऐसी होनी चाहिये जिसके पढ़ने से ज्ञान की वृद्धि हो तथा जिसमें जाति की दुर्दशा पर आंसू बहाये गये हों।

५१—दिन गुज़रते ही चले जाते हैं।

लोग मरते ही चले जाते हैं ॥१॥

जानते हैं किये गफलत के हैं काम।

फिर भी करते ही चले जाते हैं ॥२॥

५२—हंस के दुनिया में मरा कोई, कोई रोके मरा।

ज़िन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ हाँके मरा ॥१॥

जी उठा मरने से वो, जिसकी खुदा पर थी नज़र।

जिसने दुनिया ही को पाया था, वो सब खोके मरा ॥२॥

५३—बार तकलीफों का मुझ पर बारे—अहसां से है सढल।

शुक्र की जा है अगर हाजत—रवा मिलता नहीं ॥१॥

यों कहो मिल आऊ उनसे, लेकिन 'अकबर' सच ये है।

दिल नहीं मिलता. तो मिलने का मज़ा मिलता नहीं ॥२॥

शब्दार्थ—बार-बोझ, जा-स्थान, हाजत रवा-आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला।

५४—करेगा कद्र जो दुनिया में अपने आने की।

उसी की जान को लज्जत मिलेगी जाने की ॥१॥

* महाकवि गालिब ने भी एक स्थान पर कहा है:—

दर्द मिन्नतकशे दवा न हुवा।

मैं न अच्छा हुवा बुरा न हुवा ॥

मज़ा भी आता है दुनिया से दिल लगाने में ।
सज़ा भी मिलती है दुनिया से दिल लगाने की ॥२॥

५५—रक्खो जो मुकाबिल उसके सारा आलम ।
दुनिया बखुदा है एक ज़र्रे से भी कम ॥१॥
उस एक ज़र्रे में है हमारी क्या अस्ल ।
नाफ़हम हैं, कर रहे हैं नाहक 'हम-हम' ॥२॥

शब्दार्थ—आलम-सृष्टि, बखुदा-ईश्वर सार्द्धा है, ज़रा-परमाणु, नाफ़-हम-बेसमझ, नाहक-व्यर्थ ।

५६—यही बहसें रहीं सब में वो कैसे हैं वो कैसे थे ।
यही सुनते हुवे गुजरी वो ऐसे हैं वो ऐसे थे ॥१॥
अमल औरों ही के देखा किये ये नेक ये बद हैं ।
तरक्की खुद न की कुछ रह गये वैसे कि जैसे थे ॥२॥

५७—इधर तसबीह की गरदिश में पाया शेख़ साहब को ।
त्रिरहमन को उधर उलझा हुआ जुन्नार में देखा ॥
मगर इश्क़े-हकीकी का कोई रिश्ता न था दिल में ।
फ़क़त नफ़सानियत का पेचो-ख़म हर तार में देखा ॥

शब्दार्थ—तसबीह-माला, गरदिश-फेर, जुन्नार-जनेऊ, इश्क़े हकीकी-ईश्वर का प्रेम, नफ़सानियत-विषय वासना ॥

५८—बनोगे ख़ुसरवे-अक़लीमे-दिल शीरीं-जबां होकर ।
जहांगीरी करेगी ये अदा नूरे-जहां होकर ॥१॥
मजाले-गुफ़्तगू किसको फ़ना का जब पयाम आया ।
हुई ख़ामोश आख़िर शमा भी आतश-जबां होकर ॥२॥

शब्दार्थ—ख़ुसरवे अक़लीमे दिल-हृदय रूपी देश के राजा, शीरीं-जबां-मिष्ट भाषी, जहांगीरी-विश्व-विजय, नूरे-जहां-संसार का प्रकाश, फ़ना-मृत्यु, पयाम-निमन्त्रण ।

५६—लताफत को न छोड़े रङ्ग तेरे शादो ओ राम का ।

हंसो आये तो फूलों की जो रोना हो तो शबनम का ॥

शब्दार्थ—लताफत-पाकीज़गी, शादी-हर्ष, शबनम-ओग ।

६०—कामयायी हो गई तो बेवकूफी पर भो नाज ।

और जो नाकामो हुई अकल भो शरमिन्दा है ॥

शब्दार्थ—नाज-गर्व ।

६१—हमारे जहन को इस मिसरये—अकबर पै मस्ती है ।

खुश अखलाकी इबादत है खुशामद बुत-परस्त है ॥

शब्दार्थ—खुश अखलाको-शिष्टाचार ।

६२—जुस्तजू हमको आदमी की है

वे किताबें अबस मंगाते हैं ॥

शब्दार्थ—जुस्तजू-खोज । अबस-व्यर्थ ।

६३—निगाहें काबिलों पर पड़ ही जाती हैं जमाने में ।

कहीं छिपता है 'अकबर' फूल पत्तों में निहां होकर ॥

शब्दार्थ—निहा-छिपना ।

६४—हकीकत जीस्त की पीरी में हम समझे तो क्या समझे ।

बड़ा धोका दिया जालिम ने दुनिया से खुदा समझे ॥

शब्दार्थ—जीस्त-जीवन, पीरी-बुढ़ापा ।

६५—न किताबों से न कालिज के है दर से पैदा ।

दीन होता है बुजुर्गों की नज़र से पैदा ॥

शब्दार्थ—दर-द्वार । दीन-धर्म ॥

६६—जुदाई ने 'मैं' बनाया मुझको जुदा न होता तो मैं न होता ।

खुदा की हस्ती है मुझ से साबित खुदा न होता तो मैं न होता ॥

६७—नज़र उनकी रही कालिज में बस इल्मी-फ़वायद पर ।

गिरा कौं चुपके चुपके बिजलियां दीना अक़ायद पर ॥

शब्दार्थ—फ़वायद-लाभ, दोनी अफ़ायद—धार्मिक सिद्धान्त ।

६८—टट्टू पै जिस तरह से ही ताज़ी का साज़ बोझ ।

यूँ बाबुआने-हिन्द पै है अब नमाज़ बोझ ॥

६९—तमाशा देखिये बिजली का मशरिब और मशरिक में ।

कलों में है वहां दाख़िल यहां मजहब पै गिरती है ॥

७०—जो मुज़तरिब है उसको इल्तफ़ात है ।

आख़िर खुदा के नाम में कोई तो बात है ॥

शब्दार्थ—मुज़तरिब—परेशान, इल्तफ़ात—आनन्द ॥

७१—गो हम-नफ़स अपने उठ गये सब दमसाज़ हमारी आह तो है

कोई जो हमारा रह न गया ईमान तो है अल्लाह तो है

७२—हमेशा कहता था हर बात पर 'नमीदानम' ।

कुछ इसमें शक नहीं 'अकबर' बड़ा ही आलिम था ॥

शब्दार्थ—नमीदानम—मैं कुछ नहीं जानता, आलिम—विद्वान् ॥

७३—वही क़ानूने-फ़ितरत है जिसे तकदीर कहते हैं ।

जिसे क़िस्मत समझते हैं वो तदबीरों का हासिल है ॥

शब्दार्थ—फ़ितरत—प्रकृति ।

७४—सखुन-सज़्जी का क्या कहना मगर ये याद रख 'अकबर' ।

जो सच्ची बात होती है वही दिल में उतरी है ॥

७५—फ़िलासफ़ी के मुकालमों में किसी ने ये खूब ही कहा है ।

जो तन्दुरुस्ती हो तेरी अच्छी तो सांस ही में बड़ा मज़ा है ॥

७६—हरम में दम-बखुद बैठा तो 'अकबर' ने किया अच्छा ।

वो क्यों बेसूद बुतख़ाने में आह-नारसा खींचे ॥

शब्दार्थ—हरम—घर, बेसूद-व्यर्थ, नारसान-पहुँचने वाली, प्रभाव हीन ।

७७—किया है जिसने आलम को पैदा उसको क्या कहिये ।

ख़िर्द ख़ामोश है और दिल ये कहता है खुदा कहिये ॥

शब्दार्थ—ख़िर्द—बुद्धि.

- ७८—कह दिया मैंने कि हूँ और नहीं समझा कि क्या
इस खुदी का हश्र क्या होता है देखा चाहिये ॥
शब्दार्थ—खुदी—आत्मज्ञान । हश्र—परिणाम ॥
- ७९—खुदाई तेरी है हम भी हैं अय खुदा तेरे ।
मुसीबतों में पुकारे किसे सिवा तेरे ॥
- ८०—ज़बा खोली है महफ़िल में वाह-वाह के लिये ।
कभी तो बन्द कर आखों को भी खुदा के लिये ॥
- ८१—आता है वज्द मुझको हर दीन की अदा पर ।
मसजिद में नाचता हूँ नाकूस की सदा पर ॥
शब्दार्थ—वज्द आना-प्रेम में निमग्न हो जाना, दीन-धर्म, नाकूस-
शङ्ख, सदा-आवाज़ ॥
- ८२—खुदा ने अक़ल की न्यामत अता की मेहरबां होकर ।
अदाये शुक्र कर दीवानये-हुस्ने-बुतां होकर ॥
- ८३—बेसाख़ता आती है मुसीबत में ये लब पर ।
फ़ितरत ही की जानिब से दुआ भी है कोई चीज़ ॥
शब्दार्थ—फ़ितरत-प्रकृति, बेसाख़ता-आपहीआप, लब-होंठ, दुआ-
प्रार्थना ।
- ८४—बरसों का छोड़ती है साथ ज़ालिम ।
कहते हैं उम्र जिस को माशूके-बेवफ़ा है ॥
- ८५—कभी लरजता हूँ कुफ़ से मैं कभी हूँ कुरबान भोलोपन पर ।
खुदा के देता हूँ वास्ते जब तो पूछता है वो बुत खुदा क्या ॥
शब्दार्थ—लरजना-कांपना, कुफ़-नास्तिकता, कुरबान-न्यौछावर ।
- ८६—कोई कहता नहीं सयाह हूँ फ़ितरत का माहिर हूँ ।
यहीं तक फ़ख् की हद है कि डिण्टी हूँ वो नाज़िर हूँ ॥
शब्दार्थ—सैयाह-यात्री, फ़ितरत प्रकृति, माहिर-जानने वाला ।
- ८७—सदियों फ़िलासफ़ी की चुनाचुनी रही ।
लेकिन ख़ुदा की बात ज़हां थी वहां रही ॥

- ८८—मैं तो कहता था यही और कहूँगा यही
बात वो खूब है जो अल्लाह से नजदीक करे ॥
- ८९—ये बुत पिन्हां नहीं होते खुदा ज़ाहिर नहीं होता ।
गनीमत वो जमाना है कि मैं काफिर नहीं होता ॥*
- शब्दार्थ—पिन्हां होना—छिपना, काफिर—नास्तिक ।
- ९०—साइन्स से जियादा है मज़बूह की जड़ बड़ी ।
तोपों की मारसे भी खुदा की पकड़ बड़ी ॥
- ९१—मैं ये नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।
कहता हूँ कि बे-हुक्मे—खुदा कुछ नहीं करती ॥
- ९२—अतिब्बा को तो अपनी फ़ीस लेना और दवा देना ।
खुदा का काम है लुत्फो-करम करना शफ़ा देना ॥
- शब्दार्थ—अतिब्बा—वैद्य, लुत्फो करम—दया, शफ़ा—आराम ॥
- ९३—किसी के मरने से ये न समझो कि जान वापस नहीं मिलेगी ।
बईद शाने करीम से है किसी को कुछ देके छीन लेना ॥'
- शब्दार्थ—बईद—विरुद्ध, करीम—दयालु ।
- ९४—मिटा दो रंगे-बहदत में खुदी का नक्श अय 'अकबर' ।
अगर साबित किया चाहो तुम अपना मौतबिर होना ॥
- शब्दार्थ—बहदत—अद्वैत, खुदी—आत्म भाव, मौतबिर—विश्वासपात्र ।

१. एक और उर्दू के कवि ने कहा है:—

क्यों बुतों को हुस्न बख़शा था जो भूले हम तुम्हें ।

मुन्सफ़ी कुछ दावरे-रोज़े-फ़ायामत चाहिये ॥

अर्थात् माशूक का सौन्दर्य देखकर हम तुम्हें भूल गये किन्तु इस अपराध के लिये हम दण्ड के पात्र क्यों हैं ? अय अन्तिम न्याय करने वाले कुछ तो इन्साफ़ से कामले । तू ही बता कि तूने माशूकों को इतना सौन्दर्य क्यों दिया था कि उन को देख कर हम तेरी याद भूल गये ।

६५—सेठ जी को फ़िक थी एक-एक के दस कीजिये ।

मौत आ पहुँची कि हज़रत जान वापस कीजिये ॥

६६—मैं जिसे समझा हूँ “मैं” वे नफ्स की हैं ख्वाहिशें ।

“मैं” हकीकत में है जो मुझसे निहायत दूर है ॥

६७—असल अल्लाह से लगावट है ।

वरना मज़हब में सब बनावट है ॥

६८—सदाक़त के निशां इस मिसरये-अकबर में मिलते हैं ।

कलें साइन्स से चलती हैं दिल मज़हब से हिलते हैं ॥

शब्दार्थ—सदाक़त-सत्य ।

६९—खुदा की हस्ती को याद रखना और अपनी हस्ती को भूल जाना ।

नज़र उसी पर है और बातों को मैंने अपनी फ़िज़ूल जाना ॥

शब्दार्थ—हस्ती—अस्तित्व ।

१००—ग़ौर से देखो ज़मीनो-आस्मां को मुन्किरों ।

चल भी सकता वे खुदा के इन्तज़ाम इतना ।

शब्दार्थ—मुन्किरों-नास्तिकों ।

१०१—हज़ार साइन्स रंग लाये हज़ार क़ानून हम बनायें ।

खुदा की कुदरत यही रहेगी हमारी हैरत यही रहेगी ॥

शब्दार्थ—हैरत—आश्चर्य ।

१०२—मज़हब के ये मुबाहस निकले हैं हिस्ट्री^१ से ।

उनको है क्या तआल्लुक वहदत की मिस्ट्री^२ से ॥

शब्दार्थ—वहदत-अद्वैत, मिस्ट्री-भेद, मुबाहस-शस्त्रार्थ, हिस्ट्री-इतिहास ।

१०३—जुगराफ़िये से हाले-गवन्मेंट पूछिये ।

हम तो ये जानते हैं खुदाई खुदा की है ॥

१०४—निजामे-आलम बता रहा है कि है इसका बनाने वाला ।

जहूरे-आदम दिखा रहा है कि दिल में है कोई आने वाला ॥^१

शब्दाथ—निजाम-प्रबन्ध ॥

१०५—ये मिसरा चाहिये लिखना बयाज-चश्मे-वहदत में ।

खुदा का इश्क है इश्के मजाजी भी हकीकत में ॥^२

शब्दार्थ—बयाज-कापी, चश्म-आँख, वहदत-अद्वैत, इश्के मजाजी-सासारिक माशूक के साथ प्रेम ।

१०६—कुफ्रे-इसलाम की तफरीक नही फितरत में ।

ये वो नुकता है जिसे मैं भी वमुश्किल समझा ॥

शब्दार्थ—फितरत-प्रकृति, नुकता-बारीक बात ।

१०८—शोर क्यों गवरा-मुसलमा ने मचा रखा है ।

देर में कुछ नहीं काबे में क्या रक्खा है ॥

१. 'जलील' साहब का शेर है:—

हमने देखा रूवे-जाना में खुदा को अय 'जलील' ।

मर्तबा जादिर किया मेमार का तामीर ने ॥

अर्थात् हमने अपने माशूक के चेहरे में ईश्वर को देखा । जिस प्रकार किसी भवन को देखने से उसके बनानेवाले कारीगर के कौशल का पता चलता है, उसी प्रकार अपने माशूक की सुन्दरता देख कर हमें ईश्वर की महत्ता का पता लगा ।

२, 'जलील' साहब ने भा लिखा है:—

'जलील' अपने यहाँ तां तुतपरस्ती-जुजवे-ईमां है ।

कि बे इश्के-मजाजी इश्के-कामिल हो नहीं सकता ॥

अर्थात् हम तां संसारिक माशूक के साथ प्रेम करने को भी धर्म का एक अंग समझते हैं क्योंकि आरम्भ में साँसारिक माशूक के साथ प्रेम किये बिना ईश्वर के साथ भी प्रेम नहीं हो सकता ॥

शब्दार्थ—गर्भ-प्रतिमा-पूजक, दैर-मन्दिर ।

१०८—दिखलाते हैं बुत जजवये-मस्ताना किसी का ।

यहां कावये-मकसूद है बुतखाना किसी का ॥

शब्दार्थ—मकसूद-इष्ट ।

१०९—मेरी नाकामयाबी की कोई हद ही नहीं सकती ।

सदाकृत चज़ नहीं सकती खुशामद हो नहीं सकती ॥

शब्दार्थ—सदाकृत-सत्य ।

११०—हुस्न है बेवफ़ा भी फ़ानी भी ।

काश समझे इसे जवानी भी ॥

शब्दार्थ—फ़ानी-नश्वर । काश-कहीं ऐसा हो ।

१११—रंगे-हाफ़िज़ पै बहक जाते हैं अरबावे मजाज़ ।

ये समझते नहीं वां बादापरस्ती क्या थी ॥

शब्दार्थ—हाफ़िज़-फारसी के प्रसिद्ध कवि जो बड़े ईश्वर-भक्त थे ।

अरबावे मजाज़-भूँटा प्रेम रखने वाले । बादापरस्ती-मद्यपान ।

११२—फ़ना दौर जारी है मगर मरते हैं जाने पर ।

तिलस्मे ज़िन्दगानी भी अजब एक राज़े-फ़ितरव है ॥

११३—खुदा का घर बनाना है तो नक़शा ले किसी दिल का ।

ये दीवारों की क्या तजवीज़ है ज़ाहिद ये छुत कैसी ॥

११४—जो देखा हिस्ट्र, इस बात पर कामिल यकीं आया ।

उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया ॥

शब्दार्थ—कामिल यकीं-पूरा विश्वास ।

११५—निसार अपने तसव्वुर के कि, जिसके फ़ैज़ से हरदम ।

जो ना पैदा है नज़रों से उसे पैदा समझते हैं ॥

शब्दार्थ—तसव्वुर-कल्पना, फ़ैज़-प्रसाद, कृपा ।

११६—हुजुमे बुलबुल हुआ चमन में,
किया जो गुल ने जमाल पैदा ।
कमी नहीं कद्रदां की 'अकबर',
करे तो कोई कमाल पैदा ॥

११७—तसवुफ के बयां कां होश ने रूह-आशना पाया ।
मअनी कुलु न समझा पर क्यामत का मज्ञा पाया ॥
शब्दार्थ—तसवुफ-ब्रह्म-ज्ञान, रूह आशना-आत्मा से परिचि।
क्यामत का मज्ञा-अत्यन्त आनन्द ।

११८—मुकामे शक्र-है साफिल मुसीबते-दुनिया ।
इसी वहाने से अल्लाह याद आता है ॥

११९—महबूबा भी रखसत हुई साकी भी सिधाग ।
दौलत न रही पाम, तो अब 'ही' है न 'शी' है ॥

शब्दार्थ—महबूबा—प्रेमिका, साकी-शराब पिलाने वाला ही-वह
(पुल्लिङ्ग) अर्थात् प्यारा, शी-वह (स्त्रीलिङ्ग) अर्थात् प्यारी,

१२०—चिपकू दुनिया से किस तरह मैं ।
औरत ने कहा कि गोद मैं हूँ ॥

१२२—जवाले-जाहो-दौलत में बस इतनी बात अच्छी है ।
कि दुनिया को बखूबी आदमी पहचान जाता है ॥

शब्दार्थ—जवाले जाहो दौलत-धन तथा ऐश्वर्य का नष्ट होना ।

१२२—जहन में जो घिर गया ला इन्तहा क्योंकर हुआ ।
जो समझ में आ गया फिर वो खुदा क्योंकर हुआ ॥

१ महाकवि विहारीलाल ने उपरोक्त विचार को अपने एक दोहे में
इस प्रकार प्रगट किया है:—

या भव पारावार को उलंघि पार को जाय ।
तिय-छवि छायाप्रादनी गहै बीच ही आय ॥

शब्दार्थ—ला इन्तहा-अपरिमित ।

१२३—नामे खुदा को अक्सर जेबे-जवां तो पाया ।

इश्क़े-बुतां को लेकिन नक़्शे-कलूब देखा ॥

शब्दार्थ—जेबे जवां-जिबहा पर, नक़्शे कलूब-हृदय पर अंकित ।

१२४—गमे-दहर से बचाता है बशर को मस्त रहना ।

मुफ़े शायरी न आती तो मैं बादानोश होता ॥

शब्दार्थ—गमे दहर-संसार की चिन्ता, बशर-मनुष्य-बादानोश-शराब पीने वाला ।

१२५—तरक्की मुस्तक़िल वो है जो रूहानी हो अय 'अक़्बर' ।

उझा जो ज़र्रये-अन्सर वो फिर सूबे-ज़मीं आया ॥

शब्दार्थ—मुस्तक़िल-स्थायी, रूहानी-आत्मि, ज़र्रये-अन्सर-परिमाणु का टुकड़ा, सूबे ज़मी-पृथ्वी की ओर ।

१२६—खुदा का नाम गो अक्सर जवानों पर है आजाता ।

मगर काम इससे जब चलता कि ये दिल में समा जाता ॥

१२७—जो अपनी जिन्दगानी को फ़क़्त इक़ इम्तहां समझा ।

उसी ने राहतों-तकलीफ़ का राज़े-निहां समझा ॥

शब्दार्थ—राहत-आराम, राज़े निहां-गुप्त रहस्य ।

१२८—लज्जत है रूह को तने-खाकी से मेल में ।

फ़ितरत ने मस्त रक्खा है कैदी को जेल में ॥

शब्दार्थ—लज्जत-आनन्द, रूह-आत्मा, फ़ितरत-प्रकृति ।

१२९—उसकी बातों से समझ रक्खा है, तुमने उसे खिन्न ।

उसके पांवों को देखो कि किधर जाते हैं ॥

१३०—जनूने-इश्क़ से इन्सान की तीनत संवरती है ।

यही वो मस्ती वे है जो अज़्क़ को हुशयार करती है ॥

शब्दार्थ—तीनत-स्वभाव ।

२३१—जब खूब किया का कोई मौका न निकाला ॥

फिर क्या जो हुई धूम फूटत 'खूब कही' की ।

१३२—खुदा के इजहार में दुई है दुई को वहदत से क्या ताल्लुक ।

फिराक अपना करे गवारा जो कोई उसका विसाल चाहे ॥

शब्दार्थ—खुदी आत्म, ज्ञान इजहार-प्रगट करना, दुई-द्वैत, वहदत
अद्वैत, फिराक-वियोग, गवारा-मन्जूर ।

१३३—नासहे-नादां ने मतलब मेरा समझा ही नहीं ।

क्या समझता ! आलमे-दिल में तो वां था नहीं ॥

१३४—रकबा तुम्हारे गाव का मीलों हुआ तो क्या ।

रकबा तुम्हारे दिल का तो दो इञ्च भी नहीं ॥

१३५—दुनिया की क्या हकीकत और हमरे क्या तआल्लुक ।

वां क्या है, इक भलक है, हम क्या हैं इक नज़र हैं ॥

शब्दार्थ—हकीकत-वास्तविकता. तआल्लुक-सम्बन्ध ।

१३६—हुकूमत उस की उसी की मर्जी,

उसी के सब काम और धन्दे ।

कहां के इंग्लिश, कहाँ के नेटिव,

खुदा की दुनिया खुदा के बन्दे ॥

१३७—रंजे-दुनियां से बहुत मुजतरिबुल्हाल था मैं ।

दिल में तिस्कीं हुई मज़हब के असर से पदा ॥

शब्दार्थ—मुजतरिबुल्हाल—व्यग्र, तिस्कीं—शान्ति ॥

१३८—न नमाज़ है न रोज़ा न ज़कात है न हज है ।

तो खुशी फिर इसकी क्या है कोई ज़एट कोई जज है ॥

शब्दार्थ—ज़कात-दान, हज-काबे की यात्रा ।

१३६—आरजू मर्ग की तुम करते हो 'अकबर' लेकिन ।

सोचलो कब्र में आराम मिलेगा या नहीं ॥'

शब्दार्थ—आरजू-इच्छा, मर्ग-मृत्यु ।

१४०—तमाशा देख 'अकबर' दीदये-इब्रत से दुनियां का ।

अजल की नींद जब आये लहद में जाके सो रहना ॥

शब्दार्थ—दीदसे इब्रत-शिक्षा-ग्रहण करने की दृष्टि, अजल-मृत्यु, लहद-कब्र ।

भावार्थ—संसार विश्राम का स्थान नहीं है ! यहां की घटनाओं को तो हमें शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से देखना चाहिए । मृत्यु रूपी निद्रा आने पर कब्र में आराम मिलेगा ।

१४१—दुनिया में अघ्ने-हक को किस तरह साफ़ कहिये ।

करता है दुश्मनी वो जिसके खिलाफ़ कहिये ॥

शब्दार्थ—अघ्ने हक—सच्ची बात ।

१४२—कोर्स तो लफ़्ज़ ही सिखाते हैं ।

आदमी आदमी बनाते हैं ॥

शब्दार्थ—कोर्स—पाठ्य पुस्तक ।

१४३—दो मुरादें जो मिलीं चार तमन्नायें कीं ।

हमने खुद कल्ब में आराम को रहने न दिया ॥

' महाकवि जौक का भी इस विषय का शेर है जिस को महाकवि गालिव बहुत पसन्द करते थे:—

अब तो घबराके कहते हैं कि मर जायेंगे ।

मरके भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे ॥

महाकवि दाग ने भी लिखा है:—

राहत के वास्ते है तुम्हे आरजूये-मर्ग ।

अब 'दाग', और जो चैन न आया क़ज़ा के बाद ॥

शब्दार्थ—मुराद—कामना, तमन्ना—आशा, कल्ब—दिल ।

१४४—दुनिया यों ही नाशादियों में शाद रहेगी ।

बरबाद किये जायगी आबाद रहेगी ॥

शब्दार्थ—नाशादी—रज्ज, शाद—खुश ।

१४५—बन्दगी में तो है वो लुत्फ जो शाही में नहीं ।

दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो ॥^१

शब्दार्थ—बन्दगी—सेवा, बन्दा—सेवक ।

१४६—मरज़ हजार बलाकेखेज़ हो पसन्द है वो ।

दवा में लाख शफा हो, मगर नहीं मंज़ूर ॥^२

शब्दार्थ—मरज़—रोग, बलाखेज़—दुखोत्पादक, शिफा—स्वास्थ्य प्रदत्ता ।

१४७—मञ्जिले-इश्को—तवक्कुल मञ्जिले—एज़ाज़ है ।

शाह सब बसते हैं यां कोई गदा मिलता नहीं ॥

शब्दार्थ—मञ्जिले इश्को तवक्कुल—प्रेम तथा सन्तोष का विश्राम स्थान,

मञ्जिले एज़ाज़—सम्मान का विश्राम स्थान, गदा—फकीर ॥

१४८—नहीं कुल इसकी पुरसिश उल्फते—अल्लाह कितनी है ।

यही सब पूछते हैं आपकी तनख्वाह कितनी है ॥

शब्दार्थ—पुरसिश—पूछताछ, उल्फते अल्लाह—ईश्वर का प्रेम,

१४९—गरीब 'अकबर' के गिर्द क्यों हैं, जनाबे वाइज़ से कोई कहदे ।

उसे डराते हो मौत से क्या वो ज़िन्दगी ही से डर चुका है ॥

१. उर्दू के प्रसिद्ध कवि अमीर का शेर है:—

हम फकीर अपनी फकीरी में सबो—रोज़ हैं मस्त ।

तुझ को अय शाह मुबारक रहे शाही तेरी ॥

२. अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान् कार्लायल ने भी एक स्थान पर लिखा है:—

In all way we are to becomt perfect through

suffering अथात् कष्ट सहन द्वारा ही हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं ।

१५०—लोग कहते हैं कि हैं आप निहायत काबिल ।

मैं इसी सोच में रहता हूँ कि किस काबिल हूँ ॥

१५१—क्या कहें औरों को ये ऐसे हैं वो ऐसे हैं ।

सच जो पूछो तो हमीं कौन बहुत अच्छे हैं ॥

१५२—अहले-मजहब में ज़ियादहतर है बस लफ्ज़ी निज़ाअ ।

एक ही मालिक जहा का है तो फिर कैसी निज़ाअ ॥

शब्दार्थ—अहले अज़हब-मज़हब वाले, लफ्ज़ी-शाब्दिक, निज़ाअ-भगड़ा ।

शेरे-अकबर में कोई कश्फो—करामात नहीं ।

दिल पे गुज़री हुई है और कोई बात नहीं ॥

शब्दार्थ—कश्फो करामात—चमत्कार ।

२—प्रेम

१-क्या हथ्र हुआ बरपा थोड़ी सी जो पीली है ।
 डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है ॥१॥
 ना तजरुबेकारी से वाइज़ की हैं ये बातें ।
 इस रंग को क्या जाने पूछो तो कभी पा है ॥२॥
 उस मय से नहीं मतलब दिल जिससे है बेगाना ।
 मकसूद है उस मय से दिल ही में जो खिचती है ॥३॥
 वां दिल में कि सदमे दो यां जी में कि सब सहलो ।
 उनका भी अजब दिल है मेरा भी अजब जी है ॥४॥
 सूरज में लगे धब्बा फितरत के करिश्मे हैं ।
 बुत हमको कहें काफिर अल्लाह की मरज़ी है ॥५॥

शब्दार्थ—हथ्र—क्रयामत । वाइज़—उपदेशक, मद—शराब, बेगाना—
 अजनबी, मकसूद—मतलब, सदमे—कष्ट, फितरत—प्रकृति, करिश्मे—
 अनोखे काम ।

२-शौक्ते—पाबोसिये—जाना मुझे बाक़ी है हनोज़ ।
 घास जो उगती है तुरबत पै हिना होती है ॥१॥
 नज्म का वक्त बुरा बक्त है खालिक् की पनाह ।
 है वो साअत कि क़यामत से सिवा होती है ॥२॥
 रूह तो एक तरफ़ होती है रुख़सत तन से ।
 आरजू एक तरफ़ दिल से जुदा होती है ॥३॥
 जिस्म तो खाक में मिल जाते हुवे देखते हैं ।
 रूह क्या जाने किधर जाती है क्या होती है ॥४॥

हूँ फरेबे-सितमे-यार का कायल 'अकबर' ।

मरते मरते न कहा ये कि ज़फ़ा होती है ॥५॥

शब्दार्थ—या बोसी-पांव का चुम्बन करना, हनोज़-अब तक, तुरबत-कब्र
हिना-मेंहदी, नज़्म-प्राण निकलने का समय, पनाह-शरण, साअत
समय, सिवा अधिक, आरजू-इच्छा ।

३-ज़माने साज़ी है अब ये कि मुन्तज़िर था मैं ।

हमारे आने की तुमको तो कुछ ख़बर भी न थी ॥१॥

फलक ने क्यूँ शबे-फुरकत मुझे हलाक किया ।

जमाले-यार नहीं था तो क्या सहर भी न थी ॥२॥

तुम्हारे दिल की नज़ाकत पै उसको रहम आया ।

नहीं तो आह मेरी ऐसी बे असर न थी ॥३॥

जो आप होते हैं मुनकिर तो खैर मैं भूठा ।

मेरा जिगर भी न था आपकी नज़र भी न थी ॥४॥

शहीदे-जलवये-मस्ताना हो गया शबे-वस्ल ।

खुशी नशीब में आशिक के रात भर भी न थी ॥५॥

शब्दार्थ—ज़माना साज़ी दुनिया के दिखावे की बात, सहर-प्रातःकाल,
मुनकिर-इन्कार करने वाला, शब-रात ।

४-रोशन दिले-आरिफ़ से फ़िजूं है बदन उनका ।

रंगी है तबीयत की तरह पैरहन उनका ॥१॥

महरूम ही रह जाती है आगोशे-तमन्ना ।

शर्म आके चुरा लेती है सारा बदन उनका ॥२॥

ये शर्म के मानी हैं हया करते हैं इस को ।

आगोशे-तसुव्वर में न आया बदन उनका ॥३॥

है साफ़ निगाहों से अयां जोशे-जवानी ।

आंखों से सम्हलता नहीं मस्ताना पन उनका ॥४॥

दिलचस्प है आफत है कयामत है ग़ज़ब है ।

बात उनकी कद उनका चलन उनका ॥५॥

शब्दार्थ—दिले आरिफ-सिद्ध का हृदय, पैरहन-वस्त्र, आग़ोशे तमन्ना—
गोद में बैठाने की अभिलाषा, हया-लज्जा, आग़ोशे तसव्वुर-ध्यान की
गोद, अयां-प्रगट ।

५—समझे वही उसको जो हों दीवाना किसी का ।

अकबर ये ग़ज़ल मेरी है अफ़साना किसी का ॥१॥

गर शेख़ो-बिरहमन सुनें अफ़साना किसी का ।

मोविद न रहे काबआं-बुतख़ाना किसी का ॥२॥

अल्लाह ने दी है जो तुम्हें चांद सी सूरत ।

रोशन भी करो जाके सियहख़ाना किसी का ॥३॥

अश्क़ आंखों में आजाये एवज़ नींद के साहब ।

ऐसा भी किसी शव सुनो अफ़साना किसी का ॥४॥*

हम जान से बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर' ।

जब से दिले-बेताब है दीवाना किसी का ॥१॥

शब्दार्थ—अफ़साना-कहानी, मोविद-पूज्य, सियहख़ाना-अन्धकारमय,
स्थान, अश्क-आसू ।

❀ एक और उर्दू के कवि का शेर है ।

जी भर आया सुतने वालों का जिगर फट र गये ।

कुछ अजब हसरत भरी थी दास्ताने-अहले-इश्क ॥

६—जलवये-साकी वो मय जान लिये लेते हैं ।

शेख़जी ज़ब्त करें हम तो पिये लेते हैं ॥१॥

दिल में याद उनकी जो आते हुवे शरमाती है ।

दर्द उठता है कि हम आइ किये लेते हैं ॥२॥

दौरे-तहजीब में परियों का हुआ दूर नकाब ।
 हम भी अब चाके-गरीबां को सिये लेते हैं ॥३॥
 खुदकशी मना खुशी गुम ये कायामत है मगर ।
 जाना ही कितना है अब खैर जिये लेते हैं ॥४॥
 लज्जते-बस्ल को परवाने से पूछें उश्शाक ।
 वो मज्जा क्या है जो वे जान दिये लेते हैं ॥५॥

शब्दार्थ—साकी-शराब पिलाने वाला, मय-शराब, नकाब-घुंघट ।

७- क्या मौत है तबियत आगई उस आफते-जा पर ।
 जिसे इतना नहीं मालूम उल्फत क्या वफा क्या है ॥१॥
 उन्हें भी जोशे-उल्फत हो तो लुफ् उट्ठे मौहब्बत का ।
 हमीं दिन रात अगर तइपे तो फिर इसमें मज्जा क्या है ॥२॥
 मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिके-सादिक ।
 कोई परवाने से पूछे कि जलने में मज्जा क्या है ॥३॥
 तबीबां से मैं क्या पूछूं इलाजे-दर्दे-दिल अपना ।
 मरजू जब जिन्दगी खुद हा तो फिर उसकी दवा क्या है ॥४॥

शब्दार्थ—उल्फत-प्रेम, ऐन-विल्कुल, राहत-आराम, सादिक-सच्चा
 तबीब-वैद्य ।

८—जखमी किया सीना को नज़र है कि ग़ज़ब है ।
 खूं होके भोकायम है जिगर है कि ग़ज़ब है ॥१॥
 वो कहते हैं मय पीने को तू पी नहीं सकता ।
 अय शेख़ ये अल्लाह का डर है कि ग़ज़ब है ॥२॥
 गुज़ारी है शबे-बस्ल कि आई है मेरी मौत ।
 वो होते हैं रुखसत ये सहर है कि ग़ज़ब है ॥३॥
 लिपटा के मुझे सीने से वो आज ये बोले ।
 'अकबर' तेरी आहों का असर है कि ग़ज़ब है ॥४॥

शब्दार्थ—मय-शराब, शब रात्रि, सहर-प्रातःकाल ।

६—अलग सब से नज़र नीची खराम आहिस्ता आहिस्ता ।

वो मुझ को दफ़न करके अब पशेमां होते जाते हैं ॥१॥

कहां से लाऊंगा खूने-जिगर उनके खिलाने को ।

हज़ारों तरह के ग़म दिल के महमा होते जाते हैं ॥२॥

ग़ज़ब की याद है अय्यारियां बल्लाह तुमको भी ।

गरज़ कायल तुम्हारे हम तो अय जा होते जाते हैं ॥३॥

इधर हम से भी बातें आप करते हैं लगावट का ।

उधर गैरों से भी कुछ अहदों-पैमां होते जाते हैं ॥४॥

शब्दार्थ—खराम-चाल, पशेमां-लज्जित, अहदो पैमां-मादे ।

१०—जहादे-खुश्क हुश्न-बुतां से हैं बेनसीब ।

आखें खुदा ने दी हैं मगर देखते नहीं ॥१॥

मैं जिनके देखने को समझता हूँ जिन्दगी ।

उनका ये हाल है कि इधर देखते नहीं ॥२॥

तासीरे-इन्तज़ार ने ये हाल कर दिया ।

आखें खुली हुई हैं मगर देखते नहीं ॥३॥

बे ख़ौफ़ दिल को करते हो पामाल अय बुतों ।

ये शोखियां खुदा का भी घर देखते नहीं ॥४॥

शब्दार्थ—जहाद-ज़ाहिद लोग अर्थात् साधु, तासीर-प्रभाव, पामाल करना-कुचलना ।

११—जो नासह मेरे आगे बकने लगा ।

मैं क्या करता मुंह उसका तकने लगा ॥१॥

मौहब्बत का तुम से असर क्या कहुँ ।

नज़र मिल गई-दिल धक्कने लगा ॥२॥

शब्दार्थ—सहर-जादू, बज्ज-अतिरिक्त, गिला--शिकायत बजा-उचित ।

१७—वो आये भी जो बाली पर तो ऐसे वक्त में आये ।

कि फर्ते-जोफ़ से हम कर नहीं सकते इशारा तक ॥१॥

जो उसने नाज़ से पूछा कि तेरी आरजू क्या है ।

खुशी से ये हुवे बेखुद कि हम भूले तमन्ना तक ॥२॥

न निकलें अशके-हसरत नज़्म में अय बेकसी क्यों कर ।

वो बेकस हूँ नहीं है कोई मुझ को रोने वाला तक ॥३॥

शब्दार्थ—बाली-सिरहाने, फर्ते ज़ाफ़-कमजोरी की अधिकता, आरजू-इच्छा, तमन्ना-इच्छा, अशके हसरत-नैराश्य के आँसू, नज़्म-प्राण-निकलने का समय ।

१८—वो कूचये-जाना के मझे एक न पाये ।

हम पहले समझने थे कि जन्नत में भी कुछ है ॥१॥

फ़र्माते है वो सुन कर मेरे रोने का अहवाल ।

ये बात तो दाख़िल तेरी आदत में भी कुछ है ॥२॥

जब कहता हूँ उनसे कि मेरे दिल में हसरत है ।

किस नाज़ से कहते हैं कि हसरत में भी कुछ है ॥३॥

शब्दार्थ—कूचये जाना-माशूक की गली, जन्नत-स्वर्ग, अहवाल-हाल ।

१९—तुझे अय उम्मीदे-फर्दा दिलो-जां से प्यार करते ।

मगर अपनी जिन्दगी का नहीं ऐतबार करते ॥२॥

है बुतां का खुदनुमाई मेरी गफ़लतो से कायम ।

मैं अगर नज़ार न करता तो वो क्यों सिंगार करते ॥३॥

लिया हमने बोसये-रुख तो न बदगुमां हो जाना ।

कोई फूल देख लेते तो उसे भी प्यार करते ॥४॥

शब्दार्थ—फर्दा-कल, भविष्य ॥

२०—पोशीदा आंखों में कभी दिल में निहां रहा ।

बरसों ख्याले—यार मेरा मंहमां रहा ॥ १ ॥

फरयाद किसकी थी पसे-दीवार रात भर ।'

क्या मुझ से पूछते हो तू कल शब कहां रहा ॥ २ ॥

बेजा मेरे सफ़र पे हैं ये बदगुमानियां ।

पेशे-नज़र तुम्हीं तो रहे मैं जहां रहा ॥ ३ ॥'

शब्दार्थ—पोशीदा-छिपा हुआ. निहां-गुप्त. पसे दीवार-दीवार के नीचे शब-रात, बेजा-अनुचित. पेशे नज़र-आंखों के सामने ॥

२१—मैं शेफ़ता हूं आप से बे-मिस्ल हसीं का ।

हैरां हूं मेरे काम सवर क्यों नहीं जाते ॥ १ ॥

जब कहता हूं मरता हूं मेरी जान मैं तुम पर ।

फ़रमाते हैं मरते हो तो मर क्यों नहीं जाते ॥ २ ॥

वो नींद में है शहर में फिरने लगे पहरे ।

पूछे कोई 'अकबर' से ये घर क्यों नहीं जाते ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—शेफ़ता-आसक्त ।

२२—मेरे इश्क के सोज़ में हो न कमी,

अजल आये तो ऐसी जफ़ा न करे ।

मेरी जान का जिस्म से कर दे अलग,

मेरे दर्द को दिल से जुदा न करे ॥ १ ॥

बुते-शाख़ की देख रहा हूं नज़र,

मेरे इश्क का कुछ भी नहीं है असर ।

जो मैं कहता हूं काश हो तुझ में वफ़ा,

तो वो कहता है हंसके खुदा न करे ॥ २ ॥

१. महाकवि जौक़ का शेर है:—

तुम मेरे पास होते हो गोया ।

जब कोई दूसरा नहीं होता ॥

मुझे इश्क़ो-वफ़ा की सनद न मिले,
 जो मैं ज़ब्त से सब्र से काम न लूँ ।
 वहां हुस्न के' नाज़ में आय कमी,
 जो वो हक्के-सितम को अदा न करे ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—सोज़-जलन. नाज़-नख़रा ।

२३—खुदा के होते बुतों को पूजूं,
 नहीं था मुतलक गुमान ऐसा ।
 मगर तुम्हें देखकर तो बल्लाह,
 आ गया मुझको ध्यान ऐसा ।
 वो छत पै बेपरदा सो रहे हैं,
 फ़लक क़मर से ये पूछता है ।
 बता तो तेरी नज़र से गुज़रा है,
 कोई खुशरू जवान ऐसा ।
 दिलो-जिगर को फिराके-बुत में,
 हवालये-चश्मेतर करूंगा ।
 कभी किसी ने किया न होगा,
 किनारये-राङ्ग दान ऐसा ।

शब्दार्थ—मुतलक-बिलकुल, गुमान-सम्भावना, क़मर-चन्द्रमा, खुशरू-
 सुन्दर. फिराके बुत-प्रेमपात्र का वियोग ।

२४—करीबे-ख़त्म थी मज़लिस कि आ निकले इधर वो भी ।
 शरज़ वाइज़ की मेहनत रह गई सब रायशां होकर ॥ १ ॥
 निगाहें मिल गई थीं मेरी उनकी रात महफ़िल में ।
 ये दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्तां होकर ॥ २ ॥
 बहुत मुश्किल हुआ है ख़त्म करना मुझको नामे का ।
 बफूरे-शौक़ से रुकता नहीं ख़ामा रवां होकर ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—वाइज़-उपदेशक, रायगां-व्यर्थ, नामा-पत्र, वफूरे शौक-शौक की ज्यादाती, खामा-लेखनी, रवां होकर-चलकर ।

२५—दम लक्षों पर था दिले-ज़ार के घबराने से ।

आ गई जान में जान आपके आ जाने से ॥ १ ॥

बचता हूं कृवये-हसीनां की हवा खाने से ।

फायदा क्या है दबी आग के भड़काने से ॥ २ ॥

मैं जो कहता हूं कि मरता हूं तो फरमाते हैं ।

कारे-दुनिया न रुकेगा तेरे मर जाने से ॥ ३ ॥

२६—रँगो-शराब से मेरी नीयत बदल गई ।

वाइज़ की बात रह गई साक़ी की चल गई ॥ १ ॥

तैयार थे नमाज़ पै हम सुन के जिक्रे-हूर ।

जलवा बुतों का देख के नीयत बदल गई ॥ २ ॥

चमका तेरा जमाल जो महफ़िल में वक्ते-शाम ।

परवाना बेकरार हुआ शमअ जल गई ॥ ३ ॥

२७—मैं नज़्म में हूं आये तो अहसान है उनका ।

लेकिन ये समझलें कि तमाशा नहीं होता ॥ १ ॥

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम ।

वो कत्ल भी करते हैं तो चरचा नहीं होता ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नज़्म-अन्तिम समय ।

२८—जब कहा मैंने भुला दो गैर को हंस कर कहा ।

याद फिर मुझको दिलाना भूल जाने के लिये ॥ १ ॥

खूब उम्म दें बंधी लेकिन हुई हिरमां नसीब ।

बदलियां उट्टी मगर बिज़ली गिराने के लिये ॥ २ ॥

शब्दार्थ—हिरमां-दुःख ।

२९—तुमने बीमारे-मौहब्बत को अभी क्या देखा ।

जो ये कहते हुवे जाते हो कि देखा देखा ॥ १ ॥

तिफले-दिल को मेरे जाने लगी किसकी नज़र ।

मैंने कमबख्त को दो दिन भी न अच्छा देखा ॥ २ ॥

३०—इस जफ़ा पर भी तबियत उस पै बस आ ही गई ।

एक अदा ज़ालिम ने ऐसी की कि वो भा ही गई ॥ १ ॥

आशिकों को रस्मे-ऐशे-दुनयवी रायज नहीं ।

कैस' कब दूल्हा बना लैला कहां ब्याही गई ॥ २ ॥

३१—जब उनको रहम कुछ आया हया ने समझाया ।

बिगड़ बिगड़ गई तकदीर मेरी बन बन के ॥ १ ॥

मरीजो-ग़म को डराया करे न फिर इतना ।

क़ज़ा जो देखले तेवर तुम्हारी चितवन के ॥ २ ॥

शब्दार्थ—हया-लज्जा ।

३२—हया से सर झुका लेना अदा से मुस्करा देना ।

हसीनों को भी कितना सहल है बिजली गिरा देना ॥ १ ॥

ये तर्ज़ अहंसान करने का तुम्हीं को ज़ेब देता है ।

मरज़ में मुवतला करके मरीज़ों को दवा देना ॥ २ ॥

३३—वफ़ा बुतों में नहीं है खुदा को पायें कहां ।

इसी फ़िराक़ में कटते हैं दिन कि जायें कहां ॥ १ ॥

ये कहके खूने-ज़िगर मांगता है ग़म दिल से ।

कि तेरे घर में रहें रात दिन तो खायें कहां ॥ २ ॥

३४—हूर मिस को मये-जुलगू को परी कहते हैं ।

शेख़ खुश हों कि ख़फ़ा हम तो खरी कहते हैं ॥ १ ॥

हुस्न के बाव में 'अकबर' की सनद ठीक नहीं ।

ये तो हर एक बुते-क़मसिन को परी कहते हैं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मये गुलगूं-सूख शराब, कमसिन-कम उम्र ।

३५—उलफत जो कीजिये गर्ज-आशना से क्या ।

वादा जो लीजिये तो बुने-बेवफा से क्या ॥ १ ॥

क्रातिल तुम्हें कहेंगे जहां में हमें शहाद ।

अय यार और होगा तुम्हारी जफा से क्या ॥ २ ॥

३६—अहवाब क्या करेंगे ठहर कर मजार पर ।

बालीं पै खाक उढ़ाने को हां आरजू रहे ॥ १ ॥

फितना रहे फिसाद रहे गुफतगू रहे ।

मंजूर सब मुझे जो मेरे घर में तू रहे ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अहवाब-मित्रगण, मजार-कब्र, बालीं-सिरहाना, आरजू-इच्छा ।

३७—जिन्दा जो तेरे हिज्र में हूं मैं ता क्या अजब ।

गो तू नहीं है पास तेरी आरजू तो है ॥ १ ॥

मुझ को तो देख लेने से मतलब है नासहा ।

बदखू अगर है यार तो हो खूबरू तो है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—बदखू-बुरे स्वभाववाला, खूबरू-सुन्दर ।

३८—आस्मां से क्या गरज जब है जमीं परये चमक ।

माहो-अन्जुम से हैं बढ़कर उनके बुन्दे बालियां ॥ १ ॥

फूल^१ वो कहतो है मुझको मैं उन्हें समझा हूं फूल ।

हैं गुले-रंगी से बेहतर इन गुलों की गालियां ॥ २ ॥

शब्दार्थ—माह-चांद, अन्जुम-तारे ।

३९—पहुंचना दाद को मज़लूम का मुश्किल ही होता है ।

कभी क्राज़ी नहीं मिलते कभी क्रातिल नहीं मिलता ॥ १ ॥

ये हुस्नो-इश्क ही का काम है शुबहा करें किस पर ।
मिजाज उनका नहीं मिलता हमारा दिल नहीं मिलता ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दाद-न्याय, मजलूम-अन्याय-पीड़ित ।

४०—राज़े-बुते-शोख की खबर ही न मिली ।
दिल क्या मिलता कभी नज़र ही न मिली ॥ १ ॥
क्या वस्ल का हौसला करें पेशे-रक़ीब ।
जिनको इस वक्त तक कमर ही न मिली ॥ २ ॥

शब्दार्थ—राज़-रहस्य ।

४१—उठाता था हज़ारों सख्तियां दिल में इसे रखकर ।
मेरे संगे-लहद पर आरज़ू पटकेगी सर अपना ॥ १ ॥
कहीं देखा न हस्ती वो कदम का इश्तराक़ ऐसा ।
जहां में मिस्ल रखती ही नहीं उनकी कमर अपना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—संगे लहद-क्रब का पत्थर, आरजू-इच्छा, हस्ती-अस्तित्व,
अदम-अनुपस्थिति, इश्तराक़-मेल ।

४२—बहुत अच्छा हुवा आये न वो मेरी अयादत को ।
जो वो आते तो ग़ैर आते जो ग़ैर आते तो गम होता ॥ १ ॥
अगर कबरे नज़र आतीं न दारा वो सिकन्दर की ।
मुझे भी इश्तयाक़े-दौलतो-जाहो-हशम होता ॥ २ ॥

शब्दार्थ—अयादत-मिजाज पूछना, इश्तयाक़-शौक, जाहो हशम-
वैभव तथा ऐश्वर्य ।

४३—किसी से वो मोहब्बत हो मौहब्बत जिसको कहते हैं ।
फिर उससे ऐसी फुरकत हो कि फुरकत जिसको कहते हैं ॥ १ ॥
दिली हालत का अन्दाज़ा हो उस वक्त गाफ़िल को ।
मुसीबत ही नहीं देखी मुसीबत जिसको कहते हैं ॥ २ ॥

शब्दार्थ—फुरकत-जुदाई ।

४४—लहजा २ है तरक्की पै तेरा हुस्नो-जमाल ।

जिस को शक हो तुझे देखे तेरी तस्वीर के साथ ॥ १ ॥

नातवानी मेरी देखी तो मुसव्विर ने कहा ।

डर है तुमभी कहीं खिच आवो न तसवीर के साथ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लहजा-प्रतिक्षण. मुसव्विर-चित्रकार ।

४५—सरसर ने लाख चाहा उड़ाना उस गली से ।

अब तक गुबार अपना खाके-रहे-वफा है ॥ १ ॥

रंगीं तेरी अदा ने दिल खूँ किया चमन का ।

जो गुल है दागे-दिल है जो वर्ग है हिना है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—सरसर-आँधी, रहे वफा-वफा का रास्ता, वर्ग-पत्ता, हिना-मैंहदा ।

४६—दिन रात की ये बेचैनी है ये आठ पहर का रोना है ।

आसार बुरे हैं फुरकन में मालूम नहीं क्या होना है ॥ १ ॥

क्यों पस्त हुई है हिम्मत-दिल क्यों रोक रही है मायूसी ।

कोशिश तो हम अपनी सी करलें होगा वही जो होना है ॥ २ ॥

४७—उन्हें पसन्द नहीं और इस से मैं बेज़ार ।

इलाही फिर ये दिले-बेकार क्या होगा ॥ १ ॥

आज़ीज़ो सादा ही रहने दो लौहे-तुरबत को ।

हमी भिटे तो ये नक्शो-निगार क्या होगा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लौहे तुरबत-क़त्र का पत्थर ।

१ पद्याकर ने भी इसी कारण किसी ब्रज-वाला के स्वरूप-वर्णन में अपनी असमर्थता प्रकट की है :—

पल पल में पलटन लगे जाके अंग अनूप ।

ऐसी एक ब्रज-बाल को कहि नहीं सकत सरूप ॥

४८ - गुञ्जये-दिल को नसीमे-इश्क ने वा कर दिया ।

मैं मरीजे-होश था मस्ती ने अच्छा कर दिया ॥ १ ॥

सब के सब बाहर हुये बहमो-खिरद होशो तमीज ।

खानये-दिल में तुम आओ हमने परदा कर दिया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—गुं चये दिल-दिल की कली, नसीमे इश्क-प्रेम की हवा, समझ, खिरद-बुद्धि, होशो तमीज-विवेक.

४९—इनायत तखलिये में बज्म में ना-आशना होना ।

गाज़ब हैं ये अदायें दम ही भर में क्या से क्या होना ॥

जो दिक्कत है तो ये है दिल नहीं है मेरे कब्ज़ में ।

मुझे तसलीम है इरशादे-वाइज़ का बजा होना ॥

शब्दार्थ—तखलिया-एकान्त, बज्म-सभा. नाआशना-जिससे जान पहचान न हो, तसलीम-स्वीकार, इरशादे वाइज़-उपदेशक का कथन, बजा-ठीक ।

५०—आप से आते हो कब उश्शाके-मुज़्तर की तरफ़ ।

जज़्बे-दिल ये तुमको लाया है मेरे घरकी तरफ़ ॥ १ ॥

पूछता है जब कोई उनसे किसे है तुम से इश्क ।

देखते हैं प्यार से शरमाके 'अकबर' की तरफ़ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—उश्शाके मुज़्तर-व्याकुल प्रेमियों, जज़्बे दिल-हृदय की आकर्षण शक्ति ।

५१—नज़्म में हूँ अब भी आजायें वो दम भर के लिये ।

और तो क्या एक निगाहे आखिरी हो जायगी ॥

शब्दार्थ—नज़्म प्राण निकलने का समय ।

५२—दिल लेके कहते हैं तेरी खातिर से ले लिया ।

उलट्टा मुझी पै रखते हैं अहसान लीजिये ॥

- ५३—जब कहा मैंने मेरा दिल मुझको वापस कीजिये ।
नाज़ा-शोखी से वो बोला खो गया मिलता नहीं ॥
- ५४—गूज से बाले की जुल्फ उलझी मैं आशिक हो गया ।
ये न खौफ आया कि ये अफ़ई है वो ज़बूर है ॥
शब्दार्थ—अफ़ई सप ।
- ५५—ज़माना हो गया त्रिसमल तेरी सीधी निगाहों से ।
खुदा ना ख्वास्ता तिरछी नज़र होती तो क्या होता ॥^१
शब्दार्थ—त्रिसमल-घायल, खुदा ना ख्वास्ता-ईश्वर न करे ।
- ५६—बुतों के पहले बन्दे थे मिसों के अब हुवे खादिम ।
हमें हर अहद में मुशिकल रहा है बाखुदा होना ॥
शब्दार्थ—अहद-समय. बाखुदा-आस्तिक ॥
- ५७—खुदा जाने वो क्या समझे कि त्रिगड़े इस कदर मुझ पर ।
कहा था मैंने इतना ही मुझे कुछ अर्ज़ करना है ॥
शब्दार्थ—अर्ज़-निवेदन ॥
- ५८—हंसाते हैं क्यों वो गरों को मुझ पर ।
यही रोना है अब रोना है जो कुछ ॥
- ५९—बुतों की याद से दिल मायले-फरियाद होता है ।
मगर कहना ही पड़ता है बजा इरशाद होता है ॥

१ महाकवि आतिश के अनुसार तो कुछ न होता:—

तिरछी नज़रों से तायरे-दिल हो चुका शिकार ।
जब तीर कज पड़ेगा तो देगा निशाना क्या ॥
किन्तु एक और उस्ताद का कहना है:—
खता करते हैं टेढ़े तीर ये कहने की बातें हैं ।
वो देखें तिरछी नज़रों से ये सीधे दिल पै आते हैं ॥

६०—देख कर मुझ को वो कहते हैं कि अच्छे तो रहे ।

जिंदा हैं सांस लिये जाते हैं अच्छे क्या हैं ॥

६१—मंजिले-गोर में क्या खाक मिलेगा आराम ।

खू तड़ाने की वही और जमीं थोड़ी सी ॥

शब्दार्थ—मंजिल, पड़ाव, खू-आदत ।

६२—जफायें भेल कर तासीर उल्फत की दिखाते हैं ।

हिना की तरह पिस लेते हैं तब हम रंग लाते हैं ॥

शब्दार्थ—जफायें बेवफाईयाँ, तासीर-असर, उल्फत-प्रेम, हिना-मेंहदी

६३—बनते हों मेरी जान तो आ बैठो गोद में ।

तुम जानते हो रूह को कालिब जरूर है ॥

शब्दार्थ—रूह-आत्मा, कालिब-शरीर ।

६४—कहा जो मैंने न तोड़ दिल को तुम्हें मुनासिब है दिल-नवाजी ।

तो हँसके बोला कि सहज हागा दिले-शकिस्ता में राह करना ॥

शब्दार्थ—दिले शकिस्ता-टूटा हुआ दिल ।

६५—तुम्हारे आरिजे-रोशन ने खोलदी आंखें ।

मैं कह रहा था कि अब क्या है मेहरो-माह के बाद ॥

शब्दार्थ—आरिज-कपोल, मेहरो माह-सूर्य, चांद ।

६६—बेगानगी नहीं है बस इतनी दोस्ती है ।

मैं उनको जानता हूँ वो मुझको जानते हैं ॥

६७—नाज कहता है कि जेवर से हो तजईने-जमाल ।

नाजकी कहती है कि सुरमा भी कहीं बार न हो ॥'

१ महाकवि 'नासिख' ने भी लिखा है:—

यों नज़ाकत से गरां सुरमा है चश्मे-यार को ।

जिस तरह हो रात भारी मर्दुमे-बीमार को ॥

- शब्दार्थ—तज्जईने जमाल-सौन्दर्य की वृद्धि, बार-बोझ ।
 ६८—ये परवानों का शमश्रों से लिपटना और जल मरना ।
 मौहब्बत की रविश ये भी है यों भी प्यार करते हैं ॥
 ६९—तुम्हारे हुस्न में^१ साइन्स का भी दिल उलझता है ।
 कमर को देखकर वो खूते-उकलैदस समझता है ॥
 ७०—वस्ल का उस बुते-खुदशीं से कोई हिन्ट^२ कहाँ ।
 सिर्फ बोसे में भला सैल्फ गवर्नमेंट^३ कहाँ ॥
 ७१—मेरे हवास इश्क में क्या कम है मुन्तशिर ।
 मजनूँ का नाम हो गया किसमत की बात है ॥
 ७२—कैस का जिक्र मेरी शाने--जनूँ के आगे ।^४
 अगले वक्तोंका कोई बादिया-पैमा होगा ॥
 शब्दार्थ—जनूँ—उन्माद, बादिया पैमा—जङ्गलों में फिरनेवाला ।

हिन्दी के महाकवि बिहारीलाल का भी कहना हैः—
 भूषन-भार संभारि है क्यों यह तन सुकुमार ।
 सूखे पांय न धर परत सोभा ही के भार ॥
 मुन्शी देवीप्रसाद साहब 'प्रीतम' ने इस दोहे का अनुवाद इस प्रकार किया हैः—

संभाले बारे-ज्जेवर क्या तेरा नाजुक बदन प्यारी ।
 कजी रफ्तार की कहती है बारे-हुस्न है भारी ॥

१ Science

२ Hint ३ Self Government.

४ उर्दू के अन्य कवियों ने भी मजनूँ की बराबरी की है या मजनूँ से भी बढ़ कर होने का दावा किया है । महाकवि 'दाग' का शेर हैः—

कैसो-फरहाद के किस्से तो सुना करते हो लेकिन ।
 दाद दो इसकी हमने तुम्हें चाहा कैसा ॥

७३—तेरी तिरछी नज़र से हमको डर क्या ।

मौहबत की तो फिर दिल क्या जिगर क्या ॥

७४—वलवले उठते हैं दिल में देख कर उनका जमाल ।

हौसले होते हैं पस्त उनकी नज़र को देख कर ॥

शब्दार्थ—वलवले-उमङ्गें, जमाल-रूप, हौसला पस्त होना-हिम्मत टूटना ।

७५—दिला क्योंकर मैं उस रुखसारे-रोशन के मुक़ाबिल हूँ ।

जिसे खुरशीदे-महशर देख कर कहता है मैं तिल हूँ ॥

शब्दार्थ—रुखसार-कपोल, गाल, खुरशीद-सूर्य, महशर-क्यामत, ईश्वरीय न्याय का दिन ।

७६—एक दिल था सो दिया और कहां से लाऊ ।

भूँठ कहिये तो मैं कहदूँ कि नहीं और भी है ॥

७७—ज़ेरे-गेसू रूवे-रोशन जलवागर देखा किये ।

शाने-हक़ से एक जा शामो-सहर देखा किये ॥

शब्दार्थ—ज़ेरे गेसू-जुल्फों के नीचे, रूवे रोशन-उज्ज्वल मुख शानेहक़-ईश्वर की महिमा, एक जा-एक जगह, शामो सहर-सांयकाल तथा प्रातः काल ।

७८—फेर सकती नहीं तकवे से मुझे कोई सदा ।

शर्त ये है कि वो पाज़ेब की भन्कार न हो ॥

शब्दार्थ—तक़वा-परहेज़गारी, सदा-आवाज़ ।

७९—कुछ नतीजा न सही इश्क़ की उम्मीदों का ।

दिल तो बढ़ता है तबियत तो बहल जाती है ॥

८०—बुते-मशरिक नहीं मौहताजे-सामां ।

कमर ही जब न हो कैसा कमरबन्द ॥

३-हास्य ।

- १—बुतों से मेल खुदा पै नज़र ये खूब कही ।
 शब गुनाह वो नमाज़े-सहर ये खूब कही ॥ १ ॥
 फ़िटन नफ़ीस सड़क खुशनुमा डिनर^१ हर शब ।
 ये लुप्त छोड़ के हज्ज का सफ़र ये खूब कही ॥ २ ॥
 तुम्हारी खातिरे-नाजुक का है खयाल फ़क़त ।
 वरना मुभको रक़ीबों का डर ये खूब कही ॥ ३ ॥
 जनाबे-शेख़ का हो जाऊँ मौतक़िद माकूल ।
 निगाहे-यार रहे बेअसर ये खूब कही ॥ ४ ॥
 सवाले-वस्ल करूँ या तलब हो बोसे की ।
 वो कहते हैं मेरी हर बात पै ये खूब कही ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—शब-रात, नमाजे सहर-प्रातःकाल को नमाज़, मौतक़िद मानने वाला ।

- २—मजहब का हो क्योंकिर इल्मो-अमल दिल ही नहीं भाई एक तरफ़ ।
 किरकिट की खिलाई एक तरफ़ कालिज की पढ़ाई एक तरफ़ ॥ १ ॥
 क्या ज़ोके-इबादत हो उनको जो मिस के लवों के शैदा हों ।
 हलवाये-बडिश्ती एक तरफ़ हॉटल की मिठाई एक तरफ़ ॥ २ ॥
 ताऊनो-तप और खटमल-मच्छर सब कुछ है ये पैदा कीचड़ से ।
 बम्बेकी रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़ ॥ ३ ॥
 क्या काम चले क्या रंग जमे क्या बात बने कौन उसकी सुने ।
 है अकबरे-बेकस एक तरफ़ और सारी खुदाई एक तरफ़ ॥ ४ ॥

फरयाद किये जा अय अकबर कुछ हो ही रहेगा आखिरकार ।
अल्लाह से तोबा एक तरफ साहब की दुहाई एक तरफ ॥५॥
शब्दार्थ—जौके इबादत-पूजा का चाव, लव-ओष्ट, शैदा-आसक्त ॥

३—उन्हें शौके-इबादत भी है और गाने की आदत भी ।
निकलती हैं दुआयें उनके मुंह से ठुमरियां हाकर ॥ १ ॥
न थी मुतलक तवक्के बिल^१ बनाकर पेश कर दोगे ।
मेरी जां लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमां हो कर ॥ २ ॥
निकाला करती है घर से ये कह कर तू तो मजनूँ है ।
सता रखा है मुझको सास ने लैलाकी मां होकर ॥ ३ ॥
रकीबे-सिफला-खू ठहरे न मेरी आह के आगे ।
भगाया मञ्जुरों को उनके कमरे से धुंवा होकर ॥ ४ ॥
शब्दार्थ—इबादत-पूजन, सिफला-खू-कमीन ॥

४—अपना रंग उन से मिलाना चाहिये ।
आजकल पीना पिलाना चाहिये ॥ १ ॥
चाल में तलवार है दिल की घड़ी ।
तोप से इस को मिलाना चाहिये ॥ २ ॥
कौल-बाबू का है जब बिल^१ पेश हो ।
पेशे-हाकिम बिलबिलाना चाहिये ॥ ३ ॥
कुछ न हाथ आये मगर इज्जत तो है ।
हाथ उस मिस से मिलाना चाहिये ॥ ४ ॥
शब्दार्थ—पेश-सन्मुख ।

५—जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह मेरा हाल देख ।
हुकम होता है कि अपना नामये-आमाल देख ॥ १ ॥
सांच तुझ को है अगर आइन्दा पालिटिक्स^२ की ।
ले नतायज से मदद और हिस्ट्री में फाल देख ॥ २ ॥

शौके-तूलो-पेच इस जुल्मतकदे में है अगर ।
 बात बझालो की सुन बझालनों के बाल देख ॥ ३ ॥
 हुस्न-मिस पर कर नज़र मजहब अगर जाता है जाय ।
 कद्रदां को निख की क्या बहस अकबर माल देख ॥ ४ ॥

शब्दार्थ--नामये आमल-कमों का लेखा, जुल्मत कदा-अन्धकारमय स्थान

६—अज़ीजाने-वतन को पहले ही से देता हूं नोटिस' ।
 चुरट और चाय की आमद है हुक्का पान जाता है ॥ १ ॥
 ये इतना गोशमाली तिल्के-मकतब की नहीं अच्छी ।
 जवां आती है उस को सच है लेकिन कान जाता है ॥ २ ॥
 भेरी डाढ़ी से रहता है वो बुत इन्कार पर कायम ।
 मगर जब दिल दिखाता हूं तो फ़ौरन मान जाता है ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—गोशमाली-कान खेंचना, तिफल-बच्चा ।

७—चल गई मूसा की लाठी रह गया जादू का खेल ।
 साहिरो के सांप को मारा खुदा की मार ने ॥ १ ॥
 रेल काबे तक अगर बन भी गई तो नाज़ क्या ।
 अशें-बारी तक नहीं पाई रसाई तार ने ॥ २ ॥
 बाप मां से शेख से अल्लाह से क्या उनको काम ।
 डाक्टर जनवा गये तालीम दी सरकार ने ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—साहिरो-जादूगरों, नाज़-गर्व, अशें बारी-आकाश, खुदा की छत, रसाई-पहुँच ।

८—शू मेकरी शुरू जो की एक अज़ीज ने ।
 जो सिलसिला मिलाते थे बहराम गौर से ॥ १ ॥

पूछा कि भाई तुम तो थे तलवार के धनी ।
 मूरिस तुम्हारे आये थे ग़ज़नी वो गोर से ॥ २ ॥
 कहने लगे है इस में भी एक बात नोक की ।
 रांठी हम अब कमाते हैं जूते के जोर से ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—शू मेकरी-जूता बनाना, मूरिस-पुरखा, ग़ज़नी-महमूद
 गज़नवी की जन्मभूमि, गोर-मौहम्मद ग़ारी की जन्मभूमि ।

६—अकबर मुझे शक नहीं तेरी तेजी में ।
 और तेरे बयान की दिलावेजी में ॥ १ ॥
 शैतान अरबी से है हिन्द में बेख़ौफ़ ।
 लाहौल का तरजुमा कर अंग्रेजी में ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दिलावेजी-चित्ताकर्षकता, लाहौल-भाग शैतान

१०—कचहरियों में पुरसिश है ग्रेजुवेटों की ।
 सड़क पै मांग है कुलियों की और मेटों की ॥ १ ॥
 नहीं है कद्र तों बस इल्मे-दीनो-तक़वे की ।
 ख़राबी है तो फ़क़त शेख़जी के बेटों की ॥ २ ॥

शब्दार्थ—पुरसिश-पूछ, तक़वा परहेज़गारी ।

११—मजहब और मौलवी पै गाली होली ।
 स्पोच ' पे अज़्जुमन में ताली होली ॥ १ ॥
 दरवाज़े-मुन्सफ़ी है हम पर क्यों बन्द ।
 हर बात तो अय जनाबे-आली होली ॥ २ ॥

१२—उशशाक़ को भी माले-तिजारत समझ लिया ।
 इस कदर को मुलाहज़ा लिह्लाह कीजिये ॥ १ ॥
 भरते हैं मेरी आह को फ़ोनोग्राफ़ में ।
 कहते हैं फ़ीस लीजिये और आह कीजिये ॥ २ ॥

१३--मिल का आटा है नल का पानी है ।

आबो-दाने की हुक्मरानी है ॥ २ ॥

एक अदा से महा मिसों ने कम आन^१ ।

तीर की मुझ में अब खानी है ॥ २ ॥

शब्दार्थ--रवानी-चाल ।

१४--परचा रक्खा जो उसने मैं यह समझा ।

पाकेट^२ में ये बीस रुपये का नोट गया ॥१॥

घर पर खोला तो बस यही लिखा था ।

क्या शेर थे वाह वाह मैं लोट गया ॥२॥

१५--स्माल^३ नहीं ग्रेट^४ होना अच्छा ।

दिल होना बुरा है पेट होना अच्छा ॥ १ ॥

पंडित हो कि मौलवी हो दोनों बेकार ।

इन्सान को ग्रेजुएट^५ होना अच्छा ॥ २ ॥

१६--जो दोनों साथ पड़े तो ये मुनासिब है ।

कि अपने घर में क्रिसमस^६ भी कर तू ईद भी कर ॥१॥

खुदा करे कोई बुत आके कहे मुझ से ।

बिठा भी ले घर में मुझे मुरीद भी कर ॥२॥

१७--ये केक^७ की फिफ्र में सो रोट्टी भी गई ।

चाहते थे बड़ी शय सो छोट्टी भी गई ॥१॥

वाइज़ की नसीहत क्यों न मानें आखिर ।

पतलून की ताक में लंगोटी भी गई ॥२॥

१ Come on. २ Pocket. ३ Small. ४ Great.

५ Graduate. ६ Christmas. ७ Cake.

१८—कर दिया करज़न ने ज़न मरदों की सूरत देखिये ।

आबरू चेहरे की सब फ़ैशन बतकर पूछ ली ॥ १ ॥

सच ये है इन्सान को यूरुप ने हलका कर दिया ।

इन्तदा दाढ़ी से की और इन्तहा में मूँछ ली ॥ २ ॥

शब्दार्थ—ज़न-स्त्री, इन्तदा-आरम्भ, इन्तहा-अन्त ।

१९—मैं रय्यत हूँ वो शाहना दिलरी है कहाँ ।

मुझको क्यों रश्क आये वज़ए-मिल्लते-अंग्रेज़ पर ॥ १ ॥

काटे बिछ जाते हैं उन लोगों की राहे-रिज्क में ।

ख़ौफ़ आता है छुरी चलती है उनकी मेज़ पर ॥ २ ॥

शब्दार्थ--राहे रिज्क-भोजन का मार्ग ।

२०--रह गया दिल ही में शौके-सायये-अलताफ़े-ख़ास ।

मुझ को आने को इजाज़त दी नहीं बडरूम^१ में ॥ १ ॥

खाने के कमरे से रुख़सत कर दिया बाद-अज़-डिनर^२ ।

ये फ़क़त छुरियाँ ही और कांटे मेरे मक़सूम में ॥ २ ॥

शब्दार्थ--अलताफ़े-ख़ास-विशेष प्रेम, मक़सूम-भाग्य ।

१--किस्सिये-मनसूर सुन कर बोल उठी वो शोख़ मिस ।

कैसा अहमक़ लोग था पागल को कांसी क्यों दिया ॥ १ ॥

काश अय अक़बर वही हालत तुझे भी पेश आय ।

और ये काफ़िर पुकारे दर-पनाहे-मन बिया ॥ २ ॥

शब्दार्थ--अहमक़-पागल, दरपनाहे मन बिया-मेरी शरण में आ ।

२२--उनकी तहरीकों से यूँ रहती है दुनिया बेचैन ।

जिस तरह पेट में बीमार के बाई दौड़े ॥ १ ॥

- मैम्बरी के लिये लपका मेरी जानिब वो गोल ।
 गाय मोटी नज़र आई तो कसाई दौड़े ॥ २ ॥
- २३—ख्वाह साहब को तुम सलाम करो ।
 ख्वाह मन्दिर में राम राम करो ॥ १ ॥
 भाई जी का फ़क़त ये मतलब है ।
 जिसमें रुपया मिले वो काम करो ॥ २ ॥
- २४—मेरी रसाई है दैर में भी हरम में भी मेरी मनज़िलत है ।
 बुतो से जोसे की है तवक्क़े खुदा से उम्मीदे-मग़फ़रत है ॥ १ ॥
 भुका है मर अपना पाये-बुत पर ज़बान पर है गिला जफ़ा का ।
 मेरे अम्ल में है तरज़े-सय्यद ग़ज़ल में अन्दाज़े-लाजपत है ॥ २ ॥
 शब्दार्थ—रसाई-पहुँच । दैर-मन्दिर । मनज़िलत-आदर । मग़फ़रत-क्षमा-दान । सैयद-सर सैयद अहमद । लाजपत-पंजाब के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत लाला लाजपतराय ।
- २५—इस क़दर था ख़टमलो का चारपाई में हज़ूम ।
 वस्ल का दिल से मेरे अरमान ख़ुमन हो गया ॥ १ ॥
 लात दुनिया ने जो मारी बन गया दींदार वो ।
 थी बुरी ठोकर मगर शैतान ख़ुसत हो गया ॥ २ ॥
 शब्दार्थ—अरमान-इच्छा । दीनदार-धार्मिक ।
- २६—इस से तो इस सदी में नहीं हमको कुछ गरज़ ।
 सुक्रात^१ बोले क्या अरस्तू^२ ने क्या कहा ॥ १ ॥
-
- १ आप यूनान के बड़े प्रसिद्धतत्त्वज्ञानी थे । आपका जन्म ईसा से ४६६ वर्ष पूर्व एथन्स में हुआ था । आप आर्केलस (Archelaus) के शिष्य थे । लोगों ने आप पर नास्तिकता तथा युवकों को बिगाड़ने का अभियोग लगाया । न्यायाधीश ने आपको दोषी समझा और प्राण-दण्ड की सजा दी । ईसा से ३६६ वर्ष पूर्व यह महापुरुष ज़हर का प्याला पीकर सदैव के लिये सो गये ।
- २ आरस्तू भी यूनान का एक प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी था । आपका जन्म

बहरे-खुदा जनाब दें हमको इत्तला ।

साहब का क्या जबाब था बाबू ने क्या कहा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—बहरे खुदा-ईश्वर के लिये ।

२७—हमको अपने एलबम^१ पर नाज़ का है क्या महल ।

बेहद अरज़ां हो गया है अब तो फ़ोटो^२ आपका ॥ १ ॥

आपके दरशन मुसव्विर के भी हिस्से में नहीं ।

बस लिया जाता है फ़ोटो ही से फ़ोटो आपका ॥ ॥

शब्दार्थ—अरज़ां सस्ता ।

२८—मौहताजे-दरे-वकीलों-मुखतार हैं आप ।

सारे अमलों के नाज़बरदार हैं आप ॥ १ ॥

आवारा वो मुन्तशिर हैं मानिन्दे-गुबार ।

मालूम हुआ मुझे ज़मीदार हैं आप ॥ २ ॥

शब्दार्थ—दर-द्वार । मुन्तशिर-व्यग्र ।

२९—कहती हैं ज़रादे-किब मुझ से वो गर्ल^३ ।

क्या तुझ से मिलूँ कहीं का तू ड्यूक^४ न अर्ल^५ ॥ १ ॥

अकबर ने कहा दिखा के दागे-रिलो- अश्क ।

हैं मेरी गिरह में भी ये रूबी^६ ये पर्ल^७ ॥ २ ॥

ईसा से ३८४ वर्ष पूर्व स्टैगोरा नामक स्थान में हुआ था, किन्तु आप अधिकतर एथैन्स में रहा करते थे । आप महान सिकन्दर (Alexander the Great) के गुरु भी थे । ईसा से ३३२ वर्ष पूर्व इस महापुरुष ने सदैव के लिये अपनी कीर्ति छोड़ कर इस संसार से मुंह मोड़ लिया ।

१ Album २ Photo ३ Girl ४ Duke ५ Earl
६ Ruby ७ Pearl

शब्दार्थ—ज़राहे किर-घमण्ड से, गर्ल-लड़की, ड्यूक-अर्ल-उपाधियों के नाम, अश्क-आंसू, रूपी-लाल, पर्ल-मोती ।

३०—उम्मीदे-चश्मे-मरवत कहा रही बाक़ी ।

ज़ुरिया बातों का जब सिर्फ़ टेलीफ़ोन^१ हुआ ॥ १ ॥

निगाहे-गर्म किरस्मस^२ में भी रही हम पर ।

हमारे हक़ में दिसम्बर भी माहे-जून हुआ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—चश्मे मरवत-कृपा दृष्टि ।

३१—वो मिस बोली मैं करती आपका जिक्र अपने फ़ादर^३ से ।

मगर आप अल्लाह अल्लाह करता है पागल का माफ़िक़ है ॥ १ ॥

न माना शेख़ जी ने चख़ गये दस पांच ये कह कर ।

अगर काबिज हैं ये बिसकुट तो हों अल्लाह मालिक है ॥ २ ॥

३२—शायक़ तहकीक़ के ये मज़मूँ सुनलें ।

इन्सान की शक़ल जैसे मैमूँ न बना ॥ १ ॥

पाजामा भी यूँ ही इतरफ़ाक़ से बदला ।

सिमटा उभरा गर्ज कि पतलून बना ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मैमूँ-बन्दर, इतरफ़ा-विकाश ।

३३—फ़ैज़े-कालिज से ज़वानी रह गई बालाये-ताक़ ।

इस्तहां पेशे नज़र और आशिकी बालाये-ताक़ ॥ १ ॥

वां चिराग़ों से हैं जलते ऐसे हैं रोशन ज़मीर ।

कहते हैं रखिये पुरानो रोशनी बालाये-ताक़ ॥ २ ॥

शब्दार्थ—रोशनज़मीर-दिव्य दृष्टि रखने वाले, बालायेंताक़-ताक़ पर अर्थात् अलग ।

३४—नुक़ता ये सुना है एक बङ्गाली से ।

करना हो बसर जो तुम को खुशहाली से ॥ १ ॥

खाली हो जगह तो अपने भाई को दिलावो ।

गुस्ता आय तो काम लो गाली से ॥ २ ॥

शब्दार्थ—नुकता-बारीक बात ।

३५—बाबू जी का वो बुत हुवा नौकर ।

गौर उसको पयाम देता है ॥१॥

बाबू कहते हैं वो न जायगा ।

मेरे अन्डर^१ में काम देता है ॥२॥^२

३६—लज्जते नाने-जवीं तुमको मुबारिक अय शेख ।

मुझ गुनहगार को है सिर्फ^३ मुतञ्जन काफ़ी ॥१॥

हज़रते-खिज़्र टिकट मुझको दिलादे अकबर ।

रहनुमाई के लिये मेरी है अञ्जन काफ़ी ॥२॥

३७—कुछ सैन नहीं खूश आते हैं न भाते हैं बनरजी ।

मैं ज़ील^२ का तालिब हूँ न ख़वावाहाने-आनर^३ जी ॥१॥

सुनता नही लैक्चर^४ मैं पढ़ा रहता हूँ दिन रात ।

लगता फ़क़त लेडियों में वक्ते-डिनर^५ जी ॥२॥

३८—सब समझते हैं कि ये इश्के-बुता एक रोग है ।

लेकिन इसको क्या करें मिलता जो मोहनभोग है ॥१॥

शाहिदाने-मगरिबी करते नहीं मुझको क़बूल ।

टाल देते हैं ये कहकर आप काला लोग है ॥२॥

शब्दार्थ—शाहिदाने मगरिबी-पश्चिम के माशूक ॥

१ Under

२ इस पद्य में अकबर ने अंग्रेज़ी पढ़े बाबू लोगों की उर्दू का नमूना दिखाया है ।

२ Zeal. ३ Honour. ४ Lecture. ५ Dinner.

३६—हुँस्न देखिये बुताने-काशी का ।

चेहरा है चांद पूर्णमाशी का ॥१॥

चश्मे-तर देख कर वो मिस बोली ।

महकमा है ये आबपाशी का ॥२॥

४०—परदे का किया है खुद अड़झा पैदा ।

खुद हमने किया इज़ार और अड़झा पैदा ॥१॥

क्या खूब कहा है मौलवी मेहदी ने ।

नेचर ने किया है हमको नङ्गा पैदा ॥२॥

शब्दार्थ—नेचर-प्रकृति ॥

४२—ज़र कौम से लेकर ऐसा सामान करो ।

जिस से कि तुम्हारी बज़्म बन जाये बहिश्त ॥१॥

हलवे-मांडे से काम रखो भाई ।

मुरदा दोज़ख में जाय या जाये बहिश्त ॥२॥

शब्दार्थ—ज़र रुपया, बज़्म सभा ।

४२—लैला ने साया पहना मजनू ने कोट पहना ।

टोका जो मैंने बोले बस बस खामोश रहना ॥१॥

हुस्नो-जनू बदस्तूर अपनी जगह है लेकिन ।

है लुत्फे-बहरे-हस्ती फ़ैशन के साथ बहना ॥२॥

शब्दार्थ—लुत्फे बहरे हस्ती-जीवन का आनन्द ॥

४३—छोड़ लिट्टेचर को अपनी हिस्ट्री को भूल जा ।

शेखो-मसजिद से तआल्लुक तर्क कर स्कूल जा ॥ २ ॥

चार दिन की ज़िन्दगी है कोफ़्त से क्या फ़ायदा ।

खा डबल रोटी किलरकी कर खुशी से फूल जा ॥ २ ॥

शब्दार्थ—लिट्टेचर-साहित्य, तआल्लुक-सम्बन्ध, तर्क कर-त्याग, कोफ़्त-रंज ।

४४—तिल खेत में मिल जाय तो गोदाम में ले जायें ।

क्या फ़ाक़दा आरिज़ पे किसी बुत के जो तिल है ॥ १ ॥

तनख़्वाह के बिल से हमें होती हैं मुसरत ।

और शेख़ ये कहता है कि ये सांप का बिल है ॥ २ ॥

शब्दार्थ—आरिज़-कपौल, बुत-माशूक़, मुसरत-ख़ुशी ।

४५—फ़रमायें मेरा क़सूर जो हज़रत माफ़ ।

जो अमर है बाक़ई गुज़ारिश करूं साफ़ ॥ १ ॥

इन्कार नहीं नमाज़-रांजे से मुझे ।

लेकिन ये तरीक़ अब है फ़ैशन के खिलाफ़ ॥ २ ॥

४६—दरबारे-सलतनत में है किब्रो ख़दपसन्दी ।

मज़हब में देखता हूं जंग और गिरोहबन्दी ॥ १ ॥

रिन्दी वो आशिक़ी का है शग़ल सबसे बेहतर ।

लैमनेड है और विहसकी बन्दा है और बन्दी ॥ २ ॥

शब्दार्थ—किब्र-गर्व, जंग-लड़ाई, गिरोह बन्दी-अपने अपने अत्याड

अलग अलग कायम करना ।

४७—मैंने कु इख़्तलाफ़ किया आप से अगर ।

गुस्ता अबस है आपका नौकर नहीं हूं मैं ॥

अय़ किबला मुझ पे आप चढ़े आते हैं ये क्यों ।

मिम्बर इस अन्मन का हूं मिम्बर नहीं हूं मैं ॥

शब्दार्थ—इख़्तलाफ़-मतभेद, अबस-व्यर्थ, किबला-मान्यवर, मिम्बर-

सभासद, अन्मन-सभा, मिम्बर-उपदेश देने का स्थान ।

४८—बेदिल हमें बरोज़े-सलूनो न कीजिये ।

लिल्लाह बात मानिये नोनों^१ न कीजिये ॥

कल की सदा न खूबिये-फितरत न लुफ्फे दीद ।

बेहतर यही है खाहिशे-फानो न कीजिये ॥

शब्दार्थ—लिल्लाह ईश्वर के लिये. नो-नो नहीं नहीं. सदा आवाज
फितरत स्वभाव. लुफ्फे-दीद-देखने का मजा ।

४६—हर एक को खुश करूं मैं क्योंकर साहब ।

अपनी ही तरफ बुलाते हैं हर साहब ॥

आसायशे-उम्र के लिये काफ़ी है ।

बीबी राज़ी हों और कलकुर साहब ॥

शब्दार्थ—आसायशे उम्र-जीवन का सुख ।

५०—जौरे-फलक का माजरा आप से क्या बयां करूं ।

तफ़का देखिये ज़रा हम पे ये हैं अजीब दिन ॥

अकल सुपुर्द-मासुर माल सुपुर्दे-आजनाब ।

जान सुपुर्दे-डाक़र रूह सुपुर्दे-डार्विन ॥

शब्दार्थ—जौरे फलक-आसमान का जुल्म, माजरा-विवरण, तफ़का-
अन्तर, आजनाब-सम्मानित पुरुष, रूह-आत्मा ।

५१—खयाल शाहर का है निराला ये कह गया एक कहने वाला ।

शत्राब के साथ यूँ है रिन्दी को जैसे फागन के साथ होली ॥

कहो ये रिन्दाने-एशिया से कि बज्मे-इशरत के ठाठ बदलें ।

उड़नखटोला है अब मिसां का गई परीजान की वो डोली ॥

शब्दार्थ—शत्राब-जवानी, रिन्दी-मस्ती, रिन्द-मस्त, बज्मे इशरत-
आनन्द मनाने की सभा ॥

५२—मग़रिबी जौक़ है और वज़्र की पाबन्दी भी ।

ऊंट पर चढ़के थियेटर को चले हैं हज़रत ॥

शब्दार्थ—जौक़-शौक, वज़्र-मर्यादा, पाबन्दी-पालन ।

५३—शेख़ आनर के लिये आते हैं मैदान के बीच ।

वोट हाथों में हैं स्पीच कलमदान के बीच ॥

५४—पादरी से वो मिले पहले तो क्या शेख़ को उज्र ।

देखिये पीर का नम्बर तो है इतवार के बाद ॥

५५—शेख़ के दामन को अकबर ने दिया बोसा जो कल ।

हमने बरकत के लिये एक मिस का साया छू लिया ॥

५६—जो जिसके मुनासिब था गर्दू ने किया पैदा ।

यारों के लिये औहदे चिड़ियों के लिये फन्दे ॥

शब्दार्थ—गर्दू-आकाश ।

५७—मगरिब ने खुर्दबीं से कमर उन की देखली ।

मशरिक की शायरी का मजा किरकिरा हुआ ॥

शब्दार्थ—मगरिब-पच्छिम, मशरिक-पूर्व, खुर्दबीं-सूक्ष्म-दर्शक-यन्त्र ।

५८—क्या अजब हो गये मुझ से मेरे दमसाज जुदा ।

दौरे-फोनो में गले से हुई आवाज जुदा ॥

शब्दार्थ—दमसाज-सान्त्वना देने वाले, दौर-युग ।

५९—णकर खिताब नाच का भी शौक हो गया ।

सर ^१ हो गये तो बाल का भी शौक हो गया ॥

शब्दार्थ—सर-एक उपाधि, बाल-नाच ।

६०—क्या वस्ल का हौसला करे पेशे-रकीब ।

जिनको इस वक्त तक कमर ही न मिली ॥

६१—बन्दूक का नहीं है जो लैसन्स ^२ गम नहीं ।

मैंने तो इस खयाल ही को गोली मार दी ॥

६२—आदत जो पड़ी हो हमेशा से वो दूर भला कब होती है ।

रक्खी है चिनौटी पाकेट ^३ में पतलून के नीचे धोती है ॥

- ६३—मौलवी साहब न छोड़ेंगे खुदा गो बख्श दे ।
घेर ही लेंगे पुलिसवाले सज़ा हो या न हो ॥
- ६४—क्यों सिविल सर्जन ^१ का आना रोकता है हमनशीं ।
इस में है एक बात आनर ^२ की शफा हो या न हो ॥
- ६५—बाबू हमें निगल गये इस अहद में तो खैर ।
रहना पड़ा है नवियों को मछली के पेट में ॥^३

१. Civil Surgeon. २. Honour.

३. एशिया माइनर में यूनिस नामक मुसलमानों के एक नबी हुवे हैं । लोगों ने आपके उपदेश की उपेक्षा की । कहा जाता है कि आपने खुदा से शिकायत की । खुदा ने उत्तर दिया 'कि जन साधारण से कहदो कि उन्हें थोड़ा अवकाश और दिया जाता है । यदि इस अवधि में भी वे तुम्हारे उपदेश को न मानेंगे और अपनी पुरानी बातों ही पर डटे रहेंगे तो मैं अपना कोप प्रगट करूंगा । कोप प्रगट होने से पूर्व अमुक २ चिन्ह दृष्टिगोचर होंगे । अस्तु । लोगों ने यूनिस साहब की बात न सुनी । अवधि समाप्त होने को आई तो कोप के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे । यूनिस साहब ने यह सोच कर कि कहीं मैं भी अन्य मनुष्यों के साथ २ किसी संकट में न पड़ जाऊँ अपना देश छोड़ने का विचार कर लिया और एक नाव में बैठ कर चल दिये । मैक्धार में पहुंचने पर नाव डगमगाने लगी । मल्लाह ने कहा, "हमारी नाव उस समय डगमगाती है जब कोई ऐसा मनुष्य नाव में बैठ जाता है जो अपने स्वामी की आज्ञा के बिना भाग आया हो । यदि कोई ऐसा मनुष्य हो तो नाव से पानी में कूद पड़े नहीं तो अपने साथ सब को ले डूबेगा ।" यूनिस साहब ने सोचा कि ऐसा तो मैं ही हूँ । बिना खुदा की आज्ञा के मैं अपना देश छोड़ रहा हूँ । यह सोच कर आप पानी में कूद पड़े । एक मछली, जो मुँह खोले हुये बैठी थी, आपको निगल गई ।

६६—डाढ़ी खुदा का नूर है बेशक मगर जनाब ।

फ़ैशन के इन्तज़ामे-सफ़ाई को क्या करूं ॥

६७—न कटलट है यहां न कांटा छुरी है ।

मगर घी है तो खिचड़ी क्या बुरी है ॥

६८—खींचों न कमानों को न तलवार निकालो ।

जब तोप मुकाबिल है तो अखबार निकालो ॥

६९—बिरगड के मौलवी को क्या पूछते हो क्या है ।

मगरिब की पालिसी का अरबी में तरजुमा है ॥

७०—माल गाढ़ा पै जिन्हें भरोसा है अकबर ।

उनको क्या राम है गुनाहों की गरां-बारी का ॥

शब्दार्थ—गरां बारी-बोझ.

७१—फ़रमा गये हैं ये खूब भाई घूरन ।

दुनिया रोटो है और मजहब चूरन ॥

७२—आदम छुटे बहिश्त से गेहूं के वास्ते ।

मस्जिद से हम निकल गये बिस्कुट की चाट में ॥

७३—साहब सलामत अब भी मेरी शेख जी से है ।

लेकिन छुटे छमाहे वही राह हाट में ॥

७४—बोले चपरासी जो मैं पहुंचा ब-उम्मीदे-सलाम ।

फाकिये खाक आप भी साहब हवा खाने गये ॥

७५—उनको बिस्कुट के लिये सूजो की थैली मिल गई ।

कैम्प में गुल मच गया मजनूं को लैली मिल गई ॥

७६—इन से बोसा मांगता हूं उन से वोट ।

बुत भी मुझ से तङ्ग है-और शेख भी ॥

७७—नेटवियत पर किया जो मैंने इज़हार-मलाल ।

सुन के साहब ने कहा 'सच है मगर हम क्या करें' ॥

७८—फज़ले-खुदा से इज्जत पाई आज हुवे हम सी० एस० आई' ।

शेख़ न ममके लफ़्ज़-अंग्रेज़ी बोले हुवे हैं ये ईसाई ॥

७९—ऐसा शौक़ न करना अकबर, गोरे को न बनाना साला ।

भाई रंग यही है अच्छा, हम भी काले यार भी काला ॥

८०—यही सबब है अब उनकी बातों पे कान धरते नहीं हैं लड़के ।

खिन्चा न हो दस्ते-मौलवी से न था यहां कोई कान ऐसा ॥

८१—वो हंस के बोले जगह कहां है दिखाऊं कारीगरी जो अपनी ।

कहा था मुन्किर से मैंने एक दिन बना तो ले आस्मान ऐसा ॥

शब्दार्थ—मुन्किर-नास्तिक ।

८२—पकालें पीस कर दो रोटियां थोड़े से जौ लाना ।

हमारी क्या अय भाई न मिस्टर हैं न मौलाना ॥

८३—इस्लाम को जो कहते हैं फैला बज़ोरे-तेग़ ।

ये भी कहेंगे फैली ख़ुदाई बज़ोरे-मौत ॥

शब्दार्थ—तेग़-तलवार ।

८४—जब मुन चुके मेरी राज़लें बोले ला चन्दा ।

जो हिनहिनाया है आज इतना तोलीद भी कर ॥

८५—कोठी में जमा है न डिपॉजिट^१ है बैंक्स^२ में ।

कुल्लाश कर दिया मुझे दो चार थैक्स^४ ने ॥

८६—सुना के मिसरा ये शेख़ साहब बहुत ज्यादा हंसा चुके हैं ।

हमारी गर्दन वो क्यों न मारें जो नाक अपनी कटा चुके हैं ॥

८७—रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में ।

कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में ॥

८८—मज़हब ने पुकारा अब अकबर अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं ।

यारों ने कहा ये क़ौल ग़लत तनखाह नहीं तो कुछ भी नहीं ॥

८६—उन के दस्ते-नाज़नीं पाई टी^१ ।

अब कहा बाक्की है हम में पायटी^२ ॥

शब्दार्थ—टी-चाय, पायटी-पवित्रता ।

९०—धमकाके बोसा लूंगा रखे-माह का ।

चन्दा वसूल होता है साहब दबाध से ॥

९१—आशिकी का हो बुरा इस ने बिगाड़े सारे काम ।

हम तो ए० बी० में रहे अगयार बी० ए० हो गये ॥

९२—खाई मिज़गा वो नज़र की जो कसम बोला वो शोख ।

आप अब कस्में भी खाते हैं छुरी-काटे से ॥

शब्दार्थ—मिज़गा-भवे ।

९३—इस अखाड़े में अड़ङ्गे देख कर कानून के ।

शोख ने तहमद से हिजरत की तरफ पतलून के ॥

शब्दार्थ—हिजरत-गमन.

९४—बज़ए-मगरिब सीख कर देखा तो ये काफूर थी ।

अब मैं समझा वाक्की डाढ़ी खुदा का नूर थी ॥

शब्दार्थ—नूर-ज्योति ।

९५—बे पास के तो सास की भी अब नहीं है आस ।

मौकूफ शादिया भी हैं अब इम्तहान पर ॥

९६—हम क्या कहें अहबाब क्या कारे-नुमाया कर गये ।

बी० ए० किया नौकर हुवे पेन्शन^३ मिली फिर मर गये ॥

शब्दार्थ—कारे नुमाया-उल्लेखनीय कार्य ।

९७—शाप^४ में सब जमा हैं मुक्त से न पी पी कीजिये ।

आप इस बोटल को मेरे घर पै बी० पी० कीजिए ॥

१. Tea. २. Piety.

३. Pension. ४. Shop.

शब्दार्थ-शाप-दुकान ।

६८—शेख जी घर से न निकलें और मुझ से कह दिया ।

आप बी ए पास हैं और बन्दा बी० बी० पास है ॥

६९—आवरू चाहो तो अंग्रेज़ से डरते रहो ।

नाक रखते हो तो तेरो-तेज़ से डरते रहो ॥

१००—शेख जी के दोनों बेटे घा-हुनर पैदा हुवे ।

एक है खुफ़िया पुलिस में एक फांसी पा गये ॥

१०१—मुमलमालों को लुफ़ो-ऐश से जीने नहीं देत ।

खुदा देता है खाना शेख जी पीने नहीं देते ॥

१०२—सिधारे शेख काबे को हम इङ्गलिस्तान देखेंगे ।

वो देखे घर खुदा का हम खुदा की शान देखेंगे ॥

१०३—जब गम हुवा चढ़ालीं दो बोटलें इखट्टी ।

मुल्ला की दौड़ मसजिद 'अकबर की दौड़ भट्टी ॥

१०४—इस की हरकत है कलीदे-मझरिबी पर मुनहसिर ।

दिल ये सीने में या पाकेट^१ के अन्दर वाच^२ है ॥

शब्दार्थ-कलीद-कुञ्जी, मुनहसिर-आश्रित, पाकेट-जेब, वाच घड़ी ।

१०५—नाक रगड़ी बरसों इस अरमान में ।

सुनलें मेरी बात एक दिन कान में ॥

१०६—तुम नाक चढ़ाते हो मेरी बात पै अय शेख ।

खैचूंगा किसी रोज़ मैं अब कान तुम्हारे ॥

१०७—शबों को कोर्स^३ दिन में फ़ारमूला^४ बर्क^५ करते हैं ।

अदीम उत्फुरसती से उन की उत्फ़त तर्क करते हैं ॥

शब्दार्थ-शब-रात्रि, कोर्स-अध्ययन की पुस्तकें, फारमूला-सूत्र, बर्क-

१. Pocket. २. Watch. ३. Course. ४. Formula.
५. Work.

काम, अदीम उल्फुरसती-अवकाशाभाव, तर्क-छोड़ना ।

१०८—हरीफों पर खजाने हैं खुले यां हिज्रे-गेस् है ।

वहां पे-बिल ^१ है और यां सांप का भी बिल नहीं मिलता ॥

शब्दार्थ-हरीफ-दुश्मन, हिज्रे-जुल्फों का वियोग, पे बिल । तनख्वाह का बिल, सांप का बिल सांप का भट ।

१०९—एवज़ कुरआन के अब है डारविन का जिक्र यारों में ।

जहां थे हज़रते आदम वहां बन्दर उछलते हैं ॥

११०—फर्क क्या वाहज़ो आशिक में है बताये तुम से ।

उसकी हुजत में कटी इसकी मौहब्बत में कटी ॥

१११—थी शबे-तारीक चोर आये जो कुछ था ले गये ।

कर ही क्या सकता था बन्दा खांस लेने के सिवा ॥

११२—हमारे बाग में पेड़ अब कहां माली लगाते हैं ।

उन्होंने भी तो देखा ये फ़क़त डाली लगाते हैं ॥

११३—ये आपका फ़रमाना है बंज़ा कुरआन भी है अल्लाह भी है ।

मुशकिलतो ये है लेकिन कि इधर आनर ^२ भी है तनख्वाह भी है ॥

११४—काबिले-रश्क है ज़माने में ।

दिन वकीलों का रात अशिक की ॥

११५—लिपट भी जा, न रुक अकबर, ग़ज़ब की ब्यूटी ^३ है ।

नहीं नहीं पै न जा, ये हया की ड्यूटी ^४ है ॥

शब्दार्थ-ब्यूटी-सौन्दर्य, हया-लज्जा, ड्यूटी-धर्म ।

११६—शाईराना दाद अच्छी दी ये मुझ को चर्ख ने ।

तेरो-अबरू का था आशिक खान बहादुर कर दिया ॥

- ११८—बी० ए० के कमाल की कामयाबी है यही ।
सरविस^१ के लगाव से मौआज़िज बनना ॥
- ११९—हरमवालों से क्या निसबत हम अहले-होटल को ।
वहा कुरआन उतरा है यहां अंग्रेज़ उतरे हैं ॥
- १२०—तुम बीवियों को मेम बनाते हो आज कल ।
क्या गम जो हमने मेम को बीवी बना लिया ॥
- १२१—खुदा की राह में अब रेल चल गई अकबर ।
जो जान देना हो अंजन से कट मरो एक दिन ॥
- १२२—अजब क्या शेख़ बिरगड में जो मुश्ताके-गुलामी हैं ।
हमारे ऊंट साहब खुद ही कमसरिकट^२ के हामी हैं ॥
- शब्दार्थ—मुश्ताक-इच्छुक, हामी-सहायक ।
- १२३—गुज़र उनका हुवा कब आनमे-अल्लाहो-अकबर में ।
पले कालिज^३ के चक्कर में मरे साहब के दफ़तर में ॥
- शब्दार्थ—अल्लाहो अकबर-ईश्वर बड़ा है ।
- १२४—शोके—सिविल-सरविस^४ ने मुझ मजनून को ।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलून को ॥
- १२५—बुरा हुवा कि रक़ीबों में बढ़ गये बाबू ।
ज़रा सी बात हुई और ये सुवे-थाने चले ॥
- १२६—हम-नशीं जुल्फ़े-बुतां पर चुप न रहना चाहिये ।
बात जब कुछ बन न आये शेर कहना चाहिये ॥
- १२७—हुवे इस क्रदर मोहज्जिब कभी घर का मुंह न दखा ।
कटी उम्र होटलां में मरे अस्पताल जाकर ॥

१ Service. २ Comissarsat

३ College. ४ Civil Service.

१२८—अफईए-जुल्फे-मिस का तो सौदा बुरा नहीं ।

पेचीदगी जो कुछ है फक़त उसके बिल में है ॥

शब्दार्थ—अफई-साँप । सौदा-ख़न्त ।

१२९—हिज़ की शब यों ही काटो भाइयो ।

उनका फ़ोटो लेके चाटो भाइयो ॥

शब्दार्थ—हिज़-वियोग ।

१३०—क्या पूछते हो अकबरे-शोरीदा-सर का हाल ।

खुफ़िया पुलिस से पूछ रहा है कमर का हाल ॥

१३१—मुर्माकिन नहीं अय मिस तेरा नोटिस^१ न लिया जाय ।

गाल ऐसे परीज़ाद हों और किस^२ न लिया जाय ॥

१३२—हमें क्या बाल्शेविक^३ फिर गया या रूस आता है ।

यहाँ तो फ़िक्के-सरमाई है माहे-पूस आता है ॥

शब्दार्थ—सरमाई-रज़ाई ।

१३३—डिनर^४ से तुम को कम फ़ुरसत यहां फ़ाके से कम ख़ाली ।

चेलो बस हो चुका मिलना न तुम ख़ाली न हम ख़ाली ॥

१३४—बताऊँ आप से मरने के बाद क्या होगा ।

पुलाव खायेंगे अहबाब फ़ातहा होगा ॥

१३५—पेश आ जाय जो मसजिद तो नमाज़ी भी सही ।

बुत-जो मौक़े से मिले, दस्तदराज़ी भी सही ॥

शब्दार्थ—पेश-सामने । नमाज़ी-नमाज़ पढ़ने वाला अर्थात् धार्मिक ।

बुत-माशूक । दस्तदराज़ी-बलात्कार ।

भावार्थ—हमारी धार्मिकता केवल बाह्य है ।

१३६—सरासर नूरे-तक़्कवा साये पर कुर्बान कर आये ।

ये क्या अच्छा किया तुमने अगर ज़र खोके 'मिस' लाये ॥

शब्दार्थ—सरासर-बिल्कुल । नूर-प्रकाश । कुर्बान-न्यौछावर । तक़्कवा-परहेज़गारी । साया-अंग्रेजी महिलाओं का वस्त्र, ज़र-रुपया । मिस-अंग्ल कुमारी । तांबा ।

१३७—दिली ख्वाहिश तो है बेशक कि एक ओर एक दो कहिये ।

मगर कहने को हूँ मौजूद बस आप जो कहिये ॥

१३८—जो पूछा मैंने हूँ किस तरह हैपा' ।

कहा उस ने मेरे साथ मय पी ॥

१३९—पांव कांपा ही किये खौफ़ से उनके दर पर ।

चुस्त पतलून पहनने से भी पिंडली न तनी ॥^२

१४०—हो खैर या रब अकबरे-आशुफ़्ता-हाल की ।

सरजन रक्तीब और दवा अस्पताल की ॥

शब्दार्थ—या रब-हे ईश्वर । अकबरे-आशुफ़्ता-हाल-रोगी अकबर ।

१४१—हमको साया पुरजुनू वह धूप में मसरूफ़े-कार ।

मिस पै है अपनी नज़र और सीम उनके हाथ में ॥

शब्दार्थ—साया-छाया । अंग्रेजी महिलाओं का वस्त्र । पुरजुनू-उन्माद-पूर्ण । मसरूफ़े कार-काम में लगे हुवे । मिस-अंग्लकुमारी । सीम-चादी ।

भावार्थ—हम साया (अंग्रेजी महिला का वस्त्र) देखकर ही उन्मत्त हो जाते हैं और अंग्रेज धूप में भी काम करते रहते हैं । परिणाम यह है कि हमारी दृष्टि तो मिस तक हाँ परिमित है और वे (अंग्रेज) धनवान् हैं ।

१ Happy

२ उन भारतवासियों पर कटाक्ष है जो अंग्रेजी-ढंग के कपड़े पहनकर अफ़सरों से मिलने जाते हैं ।

१४२—उसकी बेटी ने उठा रक्खी है दुनिया सर पर ।

खैरियत गुज़री कि अंगूर के बेटा न हुआ ॥

१४३—शेख जी दैर में बैठे हुवे गाते थे—भजन ।

निगरां सुवे-बिरहमन थे बशौक़े-भोजन ॥

शब्दार्थ—दैर-मन्दिर । निगराँ थे । देख रहे थे । सुवे-बिरहमन-ब्राह्मण की ओर ।

१४४—सीने पै बुतों के दस्तरस मुशकिल है ।

पाइन्ट^१ ये सख्त है इसे टच न करो ॥

शब्दार्थ—दस्तरस-पहुँच । टच-छूना ।

१४५—शेख भी हैं दैर के साइल बस इतना फ़र्क है ।

मुझको बोसा चाहिये उनको समोसा चाहिये ॥

शब्दार्थ—दैर-मन्दिर । साइल-भिखारी ।

१४६—हकीम और वैद्यक़तां है अगर तशख़ीस अच्छी हो ।

हमें सेहत से मतलब है बनफ़शा हाँ कि तुलसी हो ॥

शब्दार्थ—तशख़ीस-पहचान । सेहत-फ़ायदा ।

१४७—मेरी कुरआन-ख़वानी से न हों यूँ बदगुमाँ हज़रत ।

मुझे तफ़सीर भी आती है अपना मुद्दआ कहिये ॥^२

शब्दार्थ—कुरआन ख़वानी-क़ुरान का पाठ । तफ़सीर-व्याख्या । मुद्दआ-मतलब ।

१ Point.

२ उन मनुष्यों पर कटाक्ष है जो अपना मतलब सिद्ध करने के लिये धार्मिक-ग्रन्थों के अर्थ उलट-पलट देते हैं ।

४-सामयिक घटनायें ।



दिल्ली का दरबार-सन् १६०३ ई०

- १—सर में शौक का सौदा देखा ।
देहली को हमने भी जा देखा ॥
जो कुछ देखा अच्छा देखा ।
क्या बतलायें क्या क्या देखा ॥ १ ॥
जमना जी के पाट को देखा ।
अच्छे सुथरे घाट को देखा ॥
सब से ऊंचे लाट को देखा ।
हज़रत ड्यूक कनाट को देखा ॥ २ ॥
पलटन और गिसाले देखे ।
गोरे देखे काले देखे ॥
सङ्गीन और भाले देखे ।
बैण्ड बजाने वाले देखे ॥ ३ ॥
खेमों का एक जङ्गल देखा ।
उस जङ्गल में मङ्गल देखा ॥
ब्रह्मा और वरंगल देखा ।
इज्जतख्वाहों का दङ्गल देखा ॥ ४ ॥
अच्छे अच्छों को भटका देखा ।
भीड़ में खाते भटका देखा ॥

मुंह को अगरचे लटका देखा ।
 दिल दरबार से अटका देखा ॥ ५ ॥
 हाथी देखे भारी भरकम ।
 उनका चलना कम कम थम थम ॥
 ज़रीं भूले नूर का आलम ।
 मोलों तक वो चम-चम चम-चम ॥ ६ ॥
 सुखीं सड़क पै कुटती देखी ।
 मांस भीड़ में घुटती देखी ॥
 आतिशबाज़ी छुटती देखी ।
 लुत्फ की दौलत लुटती देखी ॥ ७ ॥
 एकज़ीबीशन' की शान अनोखी ।
 हर शय उम्दा हर शय चोखी ॥
 उकलैदस की नापी जोखी ।
 मन भर सोने की लागत सोखी ॥ ८ ॥
 की है ये बन्दिश ज़हन रसा ने ।
 कोई माने ख्वाह न माने ॥
 सुनते हैं हम तो ये अफसाने ।
 जिसने देखा हो वो जाने ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—सौदा-ख़न्त, ज़रीं भूलें-सुनहरे काम की भूलें, नूर-प्रकाश,
 एकज़ीबीशन-नुमायश ।

सरसय्यद अहमद की कुतकार्यता का रहस्य

२—ताज्जुब से कहने लगे बाबू साहब ।
 गवर्नमेंट सय्यद पै क्यों मेहरबां है ॥ १ ॥
 इसे क्यों हुई इस क़दर कामयाबी ।
 कि हर बज़म में बस यही दास्तां है ॥ २ ॥

कभी लाट साहब हैं महमाने उसके ।
 कभी लाट साहब का वो महमां है ॥ ३ ॥
 नहीं है हमारे बराबर वो हरगिल ।
 दिया हमने हर सींगे का इम्तहां है ॥ ४ ॥
 वो अङ्गरेज़ी से कुछ भी वाकिफ़ नहीं है ।
 यहां जितनी इङ्गलिश है सब बर-ज़बां है ॥ ५ ॥
 कहा हंस के अकबर ने अय बाबू साहब ।
 सुनो मुझ से जो रम्ज़ इस में निहां है ॥ ६ ॥
 नहीं है तुम्हें कुछ भी सय्यद से निसबत ।
 तुम अंग्रेज़ी-दां हो वो अंग्रेज़-दां हैं ॥ ७ ॥

शब्दार्थ—सीगा-विभाग । रम्ज़-भेद । निहां-गुप्त । अंग्रेज़ी दां-अंग्रेज़ी
 भाषा जाननेवाला । अंग्रेज़-दां अंग्रेज़ों का स्वभाव जानने वाला ।

अपने लड़के के नाम पत्र

३—इशरती घर की मौहब्बत का मज़ा भूल गये ।
 खा के लन्दन की हवा अहदे-वफ़ा भूल गये ॥१॥
 पहुँचे होटल में तो फिर ईद की परवा न रही ।
 केक' को चख के सबइयों का मज़ा भूल गये ॥२॥
 भूले मां-बाप को अग़्यार के चरचों में वहां ।
 सायये-कुफ़, पढ़ा नूरे-खुदा भूल गये ॥३॥
 मौम की पुतलियों पर ऐसी तबीयत पिघली ।
 चमने-हिन्द की परियों की अदा भूल गये ॥४॥
 बख़ल है अपने वतन से जो वफ़ा में तुमको ।
 क्या बुजुर्गों की वो सब ज़ूदो-अता भूल गये ॥५॥

नक्ले-मशरिब की तरंग आई तुम्हारे दिल में ।
 और ये नुकता कि मेरी अस्ल है क्या भूल गये ॥६॥
 क्या तश्चाज्जुब है जो लङ्कों ने भुलाया घर को ।
 जब कि बूढ़े रविशे-दीने-खुदा भूल गये ॥७॥

शब्दार्थ—अगयार-अजनबियों । कुफ-नास्तिकता । नूर-प्रकाश ।
 बखल-कंजूसी । जूदो अता-उदारता । रविश-मार्ग ।

अपने लड़के के नाम पत्र

४—लन्दन को छोड़ लड़के अब हिन्द की खबर ले ।
 बनती रहेंगी बाते आबाद घर तो करले ॥१॥
 राह अपनी अब बदल दे बस 'पास' करके चल दे ।
 अपने बतन का रुख कर और रुखसते-सफर ले ॥२॥
 इंग्लिश की करके काफी दुनिया की राह नापी ।
 दीनी तरीक में भी अपने कदम को धर ले ॥३॥
 वापिस नहीं जो आता क्या मुन्तज़िर है इसका ।
 मां खस्ता हाल हो ले बेचारा बाप मर ले ॥४॥
 मशरिब के मुरशिदों से तू पढ़ चुका बहुत कुछ ।
 पीराने-मशरिकी से अब फैज़ की नज़र ले ॥५॥
 मैं भी हूँ एक सखुनवर आ सुन कलामे-अकबर ।
 इन मोतियों से आकर दामन को अपने भरले ॥६॥

इन्फ्लूएन्ज़ा का प्रकोप

५—इन्फ्लूएन्ज़ा' चढ़ा चौगान बाज़ी अब कहां ।
 अस्पताली हो रहे हैं अस्प ताज़ी अब कहां ॥१॥
 चारे की किल्लत हुई तो बैल भी अब मरने लगे ।
 इन्फ्लूएन्ज़ा हुवा करनैल भी मरने लगे ॥२॥

हम में टेढ़ापन जो आये तो सीधा वो करे ।
देवता बिगड़े तो फिर सरकार इसको क्या करे ॥३॥

हार्शम का स्वर्गवास

६—आगोश से सिधारा मुझसे ये कहने वाला ।
अन्बा सुनाइये तो क्या आपने कहा है ॥१॥
अशआरे-हरसते-आगीं कहने की ताब किस को ।
अब हर नज़र है नौहा हर सांस मरसिया हैं ॥२॥

उर्दू पत्र-पत्रिकाओं की असामयिक मृत्यु

७—ले ले के कलम के लोग भाले निकले ।
हर सिग्त से बीसियों रिसाले निकले ॥१॥
अफ़सोस कि मुफ़लिसी ने छापा मारा ।
आखिर अहबाब के दिवाले निकले ॥२॥

आधुनिक लेखक

८—उन्हीं के मतलब की कह रहा हूँ ।
ज़बान मेरी है बात उनकी ॥
उन्हीं की महफ़िल संवारता हूँ ।
चिराग़ मेरा है रात उनकी ॥१॥
फ़क़्त मेरा हाथ चल रहा है ।
उन्हीं का मतलब निकल रहा है ।
उन्हीं का मज़मूँ उन्हीं का काग़ज़ ।
कलम उन्हीं का दवात उन्हीं की ॥२॥

भारतवर्ष में अनावृष्टि

९—एक मुसीबत में है साधू है या कोई सेठ है ।
है तो ये सावन मगर हुक्मे-ख़ुदा से जेठ है ॥१॥

सच तो ये है गरदूँ को राहे-मेहरबानी क्यों मिले ।

आग जब गूरूप में बरसे हमको पानी क्यों मिले ॥२॥'

शब्दार्थ—गरदूँ-आस्मान ।

चन्दा हजम कर जाने वाले लीडर

१०—देखता एक उम्र से है चन्दा ।

होता है कुछ काम न चन्दा ॥१॥

बस यही बातें और यही चन्दा ।

लाओ चन्दा लाओ चन्दा ॥२॥

अंग्रेजों का भारतवर्ष को होमरूल देने का ध्येय

११—जब ये समझे थे परहेज़ जरूरी है इन्हें ।

वादा बच्चों से मिठाई का मुनासिब ही न था ॥१॥

आप ही ने तो किया केक^२ का जिक्रे-शीरी^३ ।

वरना इस चीज का इनमें कोई तालिब ही न था ॥२॥

उर्दू-हिन्दी की बहस^३

१२--कहां उर्दू वो हिन्दी में जरे-नक़्द ।

वही अच्छा है जो गिनता मनी है ॥१॥

मेरे नज़दीक तो बेसूद ये बहस ।

मियां हमदम वो चिन्तामनी है ॥२॥

शब्दार्थ—बेसूद-व्यर्थ । मनी-रुपया । हमदम-एक अखबार का नाम।

चिन्तामणि-भूतपूर्व सम्पादक लीडर ।

१ गत महायुद्ध के समय एक वर्ष भारतवर्ष में बहुत ही कम वर्षा हुई थी, उस समय आपने उपरोक्त शेर लिखे थे ।

२ Cake.

३ एक बार प्रयाग के 'लीडर' और लखनऊ के 'हमदम' नामक पत्र में उर्दू हिन्दी की बहस छिड़ी थी । उस समय आपने उपरोक्त शेर लिखे थे ।

- ११८—बी० ए० के कमाल की कामयाबी है यही ।
सरविस^१ के लगाव से मौश्रजिज बनना ॥
- ११९—हरमवालों से क्या निसबत हम अहले-होटल को ।
वहां कुरआन उतरा है यहां अंग्रेज़ उतरे हैं ॥
- १२०—तुम बीवियों को मेम बनाते हो आज कल ।
क्या गम जो हमने मेम को बीवी बना लिया ॥
- १२१—खुदा की राह में अब रेल चल गई अकबर ।
जो जान देना हो अंजन से कट मरो एक दिन ॥
- १२२—अजब क्या शेख़ बिरगड में जो मुश्ताके-गुलामी हैं ।
हमारे ऊंट साहब खुद ही कमसरिकट^२ के हामी हैं ॥
- शब्दार्थ—मुश्ताक-इक्कुक, हामी-सहायक ।
- १२३—गुज़र उनका हुवा कब आलमे-अल्लाहो-अकबर में ।
पले कालिज^३ के चक्कर में मरे साहब के दफ़तर में ॥
- शब्दार्थ—अल्लाहो अकबर-ईश्वर बड़ा है ।
- १२४—शौक़े—सिविल-सरविस^४ ने मृभू मजनून को ।
इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलून को ॥
- १२५—बुरा हुवा कि रक्कीबों में बढ़ गये बाबू ।
ज़रा सी बात हुई और ये सुवे-थाने चले ॥
- १२६—हम-नशी ज़ुल्फ़े बुतां पर चुप न रहना चाहिये ।
बात जब कुछ बन न आये शेर कहना चाहिये ॥
- १२७—हुवे इस क़दर मोहजिब कभी घर का मुंह न देखा ।
कटी उम्र होटलों में मरे अस्पताल जाकर ॥

१ Service. २ Comissarsat

३ College. ४ Civil Service.

लोकमान्य तिलक की लन्दन में अपील

- १६—तकल्लुफ़ उन्हीं के लिये कीजिये ।
फ़कीरों की क्या है ? जहाँ पड़ रहे ॥१॥
बुतों से भी लड़ती नहीं याँ तो आख ।
बिरहमन हैं लन्दन तलक लड़ रहे ॥२॥

इङ्गलैंड के लाभ की दृष्टि से भारतवर्ष का शासन

- १७—हज़रते-अकबर ने फ़रमाया ये खूब ।
दाद के क़ाबिल है ये फ़ज़ांगी ॥१॥
उज्ज हमको कुछ गुलामी में नहीं ।
है फ़क़त तकलीफ़दह बेग़ान्गी ॥२॥

शब्दार्थ— तकलीफ़दह कष्टप्रद । बेग़ान्गी-अजनबीपन । फ़ज़ांगी-उदारता ।

सर सय्यद अहमद

- १८—हमारी बातें ही बातें हैं सय्यद काम करता था ।
न भूलो फ़र्क़ जो है कहनेवाले करवानेवाले में ॥१॥
कहे जो चाहे कोई मैं तो ये कहता हूँ अय अकबर ।
खुदा बख़्शे बहुत सी खूबियाँ थीं मरनेवाले में ॥२॥

लार्ड मिंटो के समय में अमीर काबुल का भारतवर्ष में आना

- १९—जो सच्ची बात है कह दूंगा बे ख़ौफ़ो-ख़तर उसको ।
नहीं रूकने का मैं हरगिज़ परी रोके कि जिन रोके ॥१॥
अनार आते जो काबुल के तो पड़ते सबके हिस्से में ।
अमीर आये तो हमको क्या मज़े हैं लार्ड मिंटो के ॥२॥

लार्ड करज़न का पद-त्याग

२०—करज़नो-किचनर की हालत पर जो कल ।

वो सनम तशरीह का तालिब हुवा ॥१॥

कह दिया मैंने कि है ये साफ़ बात ।

देख लो तुम ज़न पै नर ग़ालिब हुवा ॥२॥

शब्दार्थ—तशरीह-व्याख्यान । जन-स्त्री । नर-पुरुष । ग़ालिब-विजयी ।

हिन्दुस्तान यूरूप के माल का गोदाम है

२१—ये बात ग़लत दारे— इसलाम है हिन्द ।

ये भूँठ कि मुल्के-लछ्मनो-ग़म है हिन्द ॥१॥

हम सब हैं मुर्ता वा ख़ैरखाहे-इज़लिश ।

यूरुप के लिये बस एक गोदाम है हिन्द ॥२॥

भारतवर्ष में प्रत्येक मनुष्य का लीडर होने का दावा है

२२—लीडरों^१ की धूम है आर फ़ालोवर^२ कोई नहीं ।

सब तो जनरल हैं यहां आख़िर सिपाही कौन है ॥

खुदगज़ लीडर

२३—कौम के ग़म में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ ।

लीडर को ग़म बहुत है पर आराम के साथ ॥

चन्दा खाने वाले लीडर

२४—सरविस^३ में मैं दाख़िल नहीं हूँ कौम का खादिम ।

चन्दा की फ़क़त आस है तनखाह कहां है ॥

बनावटी लीडर

२५—वो रोये बहुत स्पीचों में हिकमत इसको कहते हैं ।

मैं समझा ख़ैरखाह उनको हिमाक़त इसको कहते हैं ॥

१ Leaders.

२ Follower.

३ Service.

खुदगर्ज लीडर

२६—कोई साहब न हों लिल्लाह नाखुश सुनके ये मिसरा ।

खयाले-हुब्बे-कौमी-पीछे और फिक्के-शिकम पहिले ॥

शब्दार्थ—हुब्बे कौमी-जातीय हित । शिकम-पेट ।

वाकशूर लीडर

२७—हो दिसम्बर में मुबारिक ये उकल कूद आपको ।

खून मुक्त में भी है लेकिन मुक्तको फागन चाहिये ॥

शिक्का प्राप्ता करने के लिये विलायत जाना

२८—लन्दन में बिगड़ जावोगे विश्वास यही है ।

तुम पास रहो मेरे बड़ा पास यही है ॥

अञ्जुबन तरक्किये-उदू

२९—हम से छिन कर हो गई बज्मे-तरक्की-के सपुर्द ।

सच कहा मिरजा ने अब उदू भी कोरट हो गई ॥

एक रुपए का नोट

३०—हर्ज क्या रुपया जो कागज का चला ।

गम न खा रोटी तो गेहूँ की रही ॥

प्लेग के दिनों में चूहे मरवाना

३१—ताऊन की बदौलत उनको भी इरतफा है ।

जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूहे ॥

शब्दार्थ—इरतफा-विकाश ।

मिसेज़ बैसन्ट

३२—अब मिसेज़-बैसन्ट नज़मों में कहानी बन गईं ।

राज हम पायें न पायें वो तो रानी बन गईं ॥

लैण्ड-एक्वीजीशन एक्ट

३३—तज्ज दुनिया से दिल इस दौरे-फलक में आ गया ।

जिस जगह मैंने बनाया घर सड़क में आ गया ॥

म्युनिसिपिल बोर्ड और नया घर

३४—करो न तामीर घर की अकबर हदूदे-म्युनिसिपिल के अन्दर ।

ये अहल्काराने-बददियानत बनेंगे फाँड़ा बगल के अन्दर ॥

३५—लो निकलना पड़ा सड़क के साथ ।

आज तो मेरा घर भी नपता है ॥

कौन्सिल आव् स्टेट

३६—दफ्तरे-तदबीर तो खोला गया है हिन्द में ।

फौ सला किस्मत का अय अकबर मगर लन्दन में है ॥

— — —

५—पश्चिमी सभ्यता ।

—:०:—

१—कहां की पूजा नमाज़ कैसी कहां की गङ्गा कहां का ज़मज़म ।
 डटा है होटल के दर पे हर एक हमें भी दो एक जाम साहब ॥१॥
 हजार समझाते हैं वो सबको कि सब नहीं नामदार होते ।
 करो ख़मांशी वां नेकबख्ती से जाके तुम घर का काम साहब ॥२॥
 मगर नहीं मानता है कोई हर एक की ये इल्तजा है उनसे ।
 मुझे भां छ्वा दो कहीं पर मेरा भां हो जाय नाम साहब ॥३॥
 मेरी तुम्हारी नहीं निभैगी सिधारता हूँ मैं अब यहा से ।
 सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब सलाम साहब ॥४॥

शब्दार्थ—ज़मज़म-मुसलमानों की पवित्र नदी ; नामदार-प्रसिद्ध ।
 इल्तजा-प्रार्थना ।

२—मुरीदे-दहर हुवे वज़अ मगरिबी कर ली ।
 नये जन्म की तमन्ना में खुदकशी कर ली ॥१॥
 निगाहे-नाज़े-बुतां पर निसार दिल को किया ।
 ज़माना देख के दुश्मन से दोस्ती करली ॥२॥
 जो हुस्ने-बुतां की जगह हुक्मे-मिस हुवा कायम ।
 तो इश्क छोड़ के हमने भी नौकरी करली ॥३॥
 ज़वाले-कौम की तो इन्तदा वही थी कि जब ।
 तिजारत आपने की तर्क नौकरी कर ली ॥४॥

शब्दार्थ—मुरीदे दहर हुवे-दुनिया के पीछे और सभ बातें भूल गये ।
 ज़वाल-अधःपतन । इन्तदा-आरम्भ । तर्क-त्याग ।

- ३—एक पीर ने तहज़ीब से लङ्के को उभारा ।
 एक पीर ने तालीम से लङ्की को संवारा ॥१॥
 पतलून में वो तन गया ये साये में फैली ।
 पाजामा गर्ज ये है कि दोनों ने उतारा ॥२॥
 बहरा वो बना कैम्प में ये बन गई आया ।
 बीवी न रही जब तो मियांपन भी सिधारा ॥३॥
 दोनों जो कभी मिलते हैं गाते हैं ये मिसरा ।
 आगाज़ से बदतर है अन्जाम हमारा ॥४॥

शब्दार्थ—आगाज़-आरम्भ । अन्जाम-अन्त, परिणाम ।

- ४—पास कालिज के जो हैं वोट तलब करते हैं ।
 पास मसजिद के जो हैं ताअते-रब करते हैं ॥१॥
 उनको है लैमनेड वो विहसकी की ज़रूरत और ये ।
 रफ़ै पानी से फ़क़त खुश्किये-लब करते हैं ॥२॥
 वक्त को देख के अब आप ही इन्साफ़ करें ।
 वो सितम करते हैं या आप ग़ज़ब करते हैं ॥३॥
 शब्दार्थ—तलब-याचना । ताअते रब-ईश्वर की आज्ञा का पालन ।
 रफ़ै दूर । लब-ओष्ठ ।

- ५—कर गई काम निगाहे-मिसे-पुरफ़न कैसा ।
 तज चले दैरो-हरम शेख़ो-बिरहमन कैसा ॥१॥
 उसको चक्कर ही रहा और ये खुदा तक पहुँचा ।
 दिले-पुरसोज़ जो हाथ आये तो अञ्जन कैसा ॥२॥
 अस्ल से होके जुदा नश्वो-नुमा की उम्मीद ।
 मुझको हैरत है कि बूढ़ों में ये बचपन कैसा ॥३॥

- ६—मेरे अमल से न शेख़ खुश है,
 न भाई खुश है न बाप खुश है ।
 मगर मैं समझा हूँ इसको अच्छा,
 दलील ये है कि आप खुश हैं ॥१॥

जो देखा साइन्स का ये चक्र,
 धरम पुकारा कि अय बिरादर ।
 हमारे दौरे में पुन मगन थे,
 तुम्हारे दौरे में पाप खुश है ॥२॥

शब्दार्थ—बिरादर-भाई । दौर-समय ।

- ७—मज़हब के वास्ते न शराफ़त के वास्ते ।
 है अब तो जङ्ग हुक्मो-तिजारत के वास्ते ॥१॥
 ले ही गये घसीट के मुभ्को परेड हर ।
 तय्यार हो रहा था मैं जन्मत के वास्ते ॥२॥
- ८—जिस रोशनी में लूट ही की आपको सूझे ।
 तहज़ीब की मैं उसको तजल्ली न कहूँगा ॥१॥
 लाखों को मिटा कर जो हज़ारों को उभारे ।
 उसको तो मैं दुनिया की तरक्की न कहूँगा ॥२॥

शब्दार्थ—तजल्ली-ज्योति ।

- ९—हरचन्द कि मिस का है लवण्डर भी बहुत खूब ।
 बेगम का मगर इतरे-हिना और ही कुछ है ॥१॥
 साये की भी सन सन हविस-अंगेज़ है लेकिन ।
 उस शोख के धुंधलकों की सदा और ही कुछ है ॥२॥
- १०—ये बात तो खरी है हरगिज़ नहीं है खोटी ।
 अरबी में नज़्मे-मिल्लत बी० ए० में सिर्फ़ रोटी ॥१॥
 लेकिन जनाबे-लीडर सुन कर ये शेर बोले ।
 बधवायेंगे ये हज़रत इस क़ौम को लंगोटी ॥२॥
 इस बात को खुदा ही बस खूब जानता है ।
 किसकी नज़र है ग़ायर किसकी नज़र है मोटी ॥३॥

शब्दार्थ—गायर-बारीक ।

११—हुवे नेकी से बेगाना तरक्की इसको कहते हैं ।
 फरिश्ते हो गये बख़सत फ़क़त शैतान बाक़ी है ॥१॥
 तबीअत को अभी पतलून से सेरी नहीं अकबर ।
 ये सच है कट गये हैं पांव लेकिन रान बाक़ी है ॥२॥

१२—अफ़ई से कहा मैंने मुझे तूने डसा क्यों ।
 बोला कि बिना लाठी के तू बन में बसा क्यों ॥१॥
 पांव में तो मेंहदी है लगी शौके-डिनर की ।
 हैरान हूँ अकबर ने कमर को ये कसा क्यों ॥२॥

१३—मशरिकी को है ज़ौके-रुहानी ।
 मगरिबी में है मेले-जिस्मानी ॥१॥
 कहा मन्सूर ने खुदा हूँ मैं ।
 डारविन बोले बूझना हूँ मैं ॥२॥

शब्दार्थ—बूझना-बन्दर ।

१४—नई तहज़ीब में दिक्क़त ज़ियादा तो नहीं होती ।
 मज़ाहब रहते हैं क़ायम फ़क़त ईमान जाता है ॥१॥
 थियेटर रात को दिन को यारों की ये स्पीचें ।
 दुहाई लाट साहब की मेरा ईमान जाता है ॥२॥

१५—मिस से बेगम ने कहा कल तू कहां और हम कहां ।
 बूट की चरचर में क्या रक्खा है ये चमचम कहां ॥१॥
 मिस ये बोली पढ़ के निकलो तो ज़रा स्कूल से ।
 और ही चालें नज़र आयेंगी ये आलम कहां ॥२॥

१६—पढ़े गुन-गुनाते ये लाला निरंजन ।
 न आंखों में अंजन न दांतों में मंजन ॥ १ ॥
 छूटे हम से बिल्कुल वो अगले तरीक़े ।
 कहां खींच ले जायगा हमको अंजन ॥ २ ॥

१७—तरक्की की नई राहें जो ज़ेरे आस्मां निकलीं ।
 मियां मसजिद से निकले और हरम से बीवियां निकलीं ॥ १ ॥

मुसीबत में भी अब यादे-खुदा आती नहीं उनको ।

दुआ निकली न मुंह से पाकटों से अर्जियां निकलीं ॥ २ ॥

१८—मेरे मनसूबे तरक्की के हुबे सब पायमाल ।

बीज मगरिब ने जो बोया वो उगा और फलगया ॥ १ ॥

बूट डासन ने बनाया मैंने एक मज़मूं लिखा ।

मुल्क में मज़मूं न फैला और जूता चल गया ॥ २ ॥

शब्दार्थ—मनसूबे-विचार । पायमाल-पददलित ।

१९—अज़ां से अब सिवा बेदारकुन अंबन की सीटी है ।

इसी पर शेख बेचारे ने छाती अपनी पीटी है ॥ १ ॥

कहां बाक़ी रहे हम में वो औरदे-सहरगाही ।

वज़ीफ़ों की जगह या पायनियर या आई० डी० टी०^१ है ॥ २ ॥

२०—पण्डित जी ने खूब बात कही जोशे-तबश्च में ।

नाहक गुज़श्ता अहद पर यूं तानेज़न हैं आप ॥ १ ॥

पत्थर के बदले अब तो धरम दूटने लगा ।

महमूद बुतशिकन था बिरहमन शिकन हैं आप ॥ २ ॥

शब्दार्थ—जोशे तबश्च-तबियत का जोश । गुज़श्ता-भूत काल । अहद-काल समय शिकन-तोड़ने वाला ।

२१—क्या कहूं इसको मैं बदबख्तिये-नेशन^२ के सिवा ।

उसको आता नहीं अब कुछ इमीटेशन^३ के सिवा ॥

शब्दार्थ—बदबख्ती-दुर्भाग्य । नेशन-राष्ट्र । इमीटेशन-नक़ल उतारना ।

२२—हमें घेरे हुए हैं हर तरफ़ इसलाह की मौजें ।

मगर यह हिस नहीं है डूबते हैं या उभरते हैं ॥

शब्दार्थ—इसलाह-सुधार । मौज-लहर । हिस-ज्ञान ।

१ Indian Daily Telegraph.

२ Nation ३ Imitation.

१३—खुशी है सबको कि आपरेशन' में खूब नशतर ये चल रहा है ।

मगर किसी को खबर नहीं है मरीज़ का दम निकल रहा है ॥

शब्दार्थ—आपरेशन-चीर फाड़ ।

२४—इधर खयाल नहीं मसलहाने-नेशन' का ।

कि फ़र्ते-ज़ोफ़ नहीं वक्त आपरेशन' का ॥

शब्दार्थ—मसलहाने नेशन-जाति के शुभचिन्तक । फ़र्ते-ज़ोफ़-अत्य-

धिक कमज़ोरी । आपरेशन-चीरफाड़ ।

२५—पुरानी रोशनी में और नई में फर्क इतना है ।

उसे किश्ती नहीं मिलती इसे साहिल नहीं मिलता ॥

शब्दार्थ—साहिल-किनारा ।

२६—सूझता लैकचर तरक्की का तो है हर बात पर ।

खत्म हो के लेकिन रह जाता है मेरी ज़ात पर ॥

२७—न कोई तकरीमे-बाहमी है,

न प्यार बाक्की है अब दिलों में ।

ये सिर्फ़ तहरीर में डियर सर,

है या 'जनाबे-मुकर्रमी' है ॥

२८—दिल में अब नूरे-खुदा के दिन गये ।

हड्डियों में फ़ास्फ़ोरस देखिये ॥

शब्दार्थ—तकरीम-शिष्टाचार । जनाबे मुकर्रमी-मान्यवर महाशय ।

२९—तरज़े-मग़रिब में नहीं है शर्ते-दिल बहरे-अमल ।

चल खड़े होते हैं स्टीमर हवा हो या न हो ॥

३०—लगी लिप्टी न लगा रखती थी तलवार की जङ्ग ।

तोप क्या चाहती है सिर्फ़ दगा चाहती है ॥

- ३१—कुछ देखता नहीं मैं दिले-ज़ार के लिये ।
जो कुछ ये हो रहा है सब अखबार के लिये ॥
- ३२—इल्मी तरक्कियों से ज़बां तो चमक गई ।
लेकिन अमल फरेबो-दगा ही के साथ है ॥
- ३३—मेरी नसीहतों को सुन कर वो शोख बोला ।
नेटिव की क्या सनद है साहब कहें तो मानूं ॥
शब्दार्थ—सनद-प्रमाण ।
- ३४—शोख साहब का तास्सुब है जो फरमाते हैं ।
ऊंट मौजूद है फिर रेल पै क्यों चढ़ते हो ॥
- ३५—मिटते हैं जो वो हमको तो अपना काम करते हैं ।
मुझे हैरत तो उन पर है जो इस मिटने पै मरते हैं ॥
- ३६—बकौले-अहले-मगरिब ये ज़माना है तरक्की का ।
मुझे भी शक नहीं इसमें कि गफ़लत की जवानी है ॥
- ३७—वज़ूए-मगरिब से मुझे कुछ भी तसल्ली न हुई ।
नाब तो बढ़ गये दौलत की तरक्की न हुई ॥
-

६-समाज सुधार तथा आधुनिक शिक्षा

—:०:—

परदा ।

१—बिठाई जायेंगी परदे में बीवियां कब तक ।

बने रहोगे तुम इस मुल्क में मियां कब तक ॥

अवाम बांध लें दोहर को थडों-इन्टर में ।

सैकिन्डो-फ़र्स्ट की हों बंद खिड़कियां कब तक ॥

मुंह दिखाई की रस्मों पर है मुसिर इबलीस ।

छिपेंगी हज़रते-हवा की बेटियां कब तक ॥

शब्दार्थ—अवाम-सर्व साधारण । मुसिर-तुला हुआ । इबलीस-शैतान ।

२—बे परदा नज़र आईं जो कल चन्द बीवियां ।

‘अकबर’ ज़मी में ग़ैरते-क़ौमी से गढ़ गया ॥१॥

पूछा जब उन से आप का परदा वो क्या हुआ ।

कहने लगीं कि अकल पै मरदों की पढ़ गया ॥२॥

३—परदा उठ जाने से अखलाक़ी तरक्की क़ौम की ।

जो समझते हैं यकीनन अकल से फ़ारिग़ हैं वो ॥१॥

सुन चुका हूँ कि कुछ बूढ़े भी हैं इसमें शरीक ।

ये अगर सच है तो बेशक पीरे-नाबालिग़ हैं वो ॥२॥

३—परदे में ज़रूर है तवालत बेहद ।

इन्सा फ़पसन्द को नहीं चाहिये हट ॥१॥

तशबीह बुरी नहीं अगर मैं ये कहूँ ।

बेगम है पेचवान लेडी सिगरेट ॥२॥

५—ये परदा-दर को सुवे-क्रीम किसने भेजा है ।

कि जिसकी बहस से मजरूह हर कलेजा है ॥

यही है उकड़े-कशाइये-क्रीम तो एक दिन ।

इज़ारबन्द को कह देंगे हन्से-बेजा है ॥

६—उठ गया परदा तो अकबर का बड़ा कौनसा हक ।

बे पुकारे मेरे घर में चला आता है ॥१॥

बेहिजाबी मेरी हमसाये की खातिर से नहीं ।

सिर्फ हुक्काम से मिलने में मज़ा आता है ॥२॥

७—गरीब अकबर ने बहस परदे की,

की बहुत कुछ मगर हुआ क्या ।

नकाब उलट ही दी उसने कहकर,

कि कर ही लेगा मेरा मुवा क्या ॥

८—नूरे-इस्लाम ने समझा था मुनासिब परदा ।

शमए-खामोशको फ़ानूसकी हाजत क्या है ॥

९—मजलिसे-निसवां में देखो इज़्जते-तालीम को ।

परदा उठा चाहता है इल्म की ताज़ीम को ॥

शब्दार्थ—निसवां-स्त्रियां । ताज़ीम-मान ।

१०—नज़र में तीरगी है और रंगों में नातवानी है ।

ज़रूरत क्या है परदे की जहां बरबे का पानी है ॥

शब्दार्थ—तीरगी-अन्धकार । नातवानी-कमजोरी ।

११—शमशेरज़न को अब नये सांचे में ढालिये ।

शमशेर को छुपाइये ज़न को निकालिये ॥

शब्दार्थ—शमशेरज़न-तलवार चलानेवाला । शमशेर-तलवार ।

भावार्थ—आधुनिक युग में हमारी शूरता का स्थान निलज्जता ने लेलिया है । अतः तलवार को, जिसे खुला रखना चाहिये था, परदे में रखना तथा स्त्री को, जिसे परदे में रखना चाहिये था, खुला रखना ही ठीक समझा गया है ।

१२—फ़र्ज़ औरत पर नहीं है चारदीवारी की कैद ।
हो अगर ज़ब्त-नज़र की और खुददारी की कैद ॥

शब्दार्थ—चारदीवारी-परदा । ज़ब्त नज़र-दृष्टि को क़ाबू में रखना,
खुददारी-स्वाभिमान ।

आधुनिक शिक्षा

१२—मिस्टरे-नकली को उ क़बां में सज़ा कैसी मिली ।
शरह उसकी ना मुनासिब है मिली जैसी मिली ॥
उसने भी लेकिन अदब से कर दिया ये इल्तमास ।
चारा क्या था अय खुदा तालीम ही ऐसी मिली ॥

१३—तालीम हमें जो दी जाती है ।
वो क्या है फ़क़त बाज़ारी है ॥
जो अक़ल सिखाई जाती है ।
वो क्या है फ़क़त सरकारी है ॥

१४—जब पेशवा ने अपना काबा जुदा बनाया ।
अपने मज़े को सबने अपना खुदा बनाया ॥
अपनी ही ये ख़ता है हमने तो ख़ूब जांचा ।
लड़के ठले हैं वैसे जैसा बना था सांचा ॥२॥
१५—फ़िलसफ़े में क्या धरा है घर का हो या लन्दनी ।
सई का मौक़ा मिले तो आर्ट या साइन्स सीख ॥१॥
दुश्मने-दाना से बच पहचान ले नादान दोस्त ।
सिफ़ लफ़फ़ाज़ी से इन रोज़ों नहीं मिलने की कीख ॥२॥

१६—तिफ़ल में बू आये क्या मां बाप के अतवार की ।
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की ॥

१७—मेरे सय्याद की तालीम की है धूम गुलशन में ।

यहां जो आज फंसता है वो कल सय्याद होता है ॥

१८—हमारे खेत से ले जाते हैं बन्दर चने क्यों कर

ये बहस अच्छी है इस से हज़रते-आमद बने क्यों कर ॥

१९—नई तालीम को क्या वासता है आदमियत से ।

जनाबे-डारविन को हज़रते-आदम से क्या मतलब ॥

२०—नई तहजीब में भी मजहबी तालीम शामिल है ।

मगर यों ही कि गोया आबे-जमजम मय में दाखिल है ॥

शब्दार्थ—आबे जमजम-जमजम का पानी, मय-शराब ।

२१—तहम्मूल बरकते-तालीम से ऐसा हुआ पैदा ।

कि हिस तक्ररीर का होता है और गुस्सा नहीं आता ॥

शब्दार्थ—तहम्मूल-सहन-शक्ति, बरकते तालीम-शिक्षा की कृपा, हिस-ज्ञान ।

भावार्थ—यह है आधुनिक शिक्षा के कारण हमको अपने अपमान तक पर क्रोध नहीं आता ।

२२—इल्मी तरक्कियों से ज़बां तो चमक गई ।

लेकिन अमल फरेबो-दरा ही के साथ हैं ॥

शब्दार्थ—अमल-काम ।

२३—इस अहद में मायल सुए—इलहाद जो दिल है ।

इसकी तो गवर्नमेंट ही रिसपानसिबिल^१ है ॥

शब्दार्थ—अहद-समय, मायल-प्रवृत्त, सुए-ओर, इलहाद-नास्तिकता, रिसपानसिबिल-उत्तरदायी ।

२४—खुदा-परस्त बनायगा क्या वो लिट्रेचर^२ ।

करे जो तबअ को बे क़ैद और गुनाह पसन्द ॥

शब्दार्थ—खुदापरस्त-ईश्वर-पूजक, लिट्-चर-साहित्य, तबअ-चित्त ।

२५—शेखे-मरहूम का कौल अब मुझे याद आता है ।

दिल बदल जायँगे तालीम बदल जाने से ॥

२६—लाख रोये कि रहे जाते हैं अल्लाहो-रसूल ।

दैर का कोर्स बिरहमन ने मगर कम न किया ॥

स्त्री-शिक्षा ।

२७—तालीम लड़कियों की जरूरी तो है मगर ।

खातूने-खाना हो वे सभा की परी न हों ॥ १ ॥

जी इल्मो-मुत्तकी हों उनके मुन्तज़िम ।

उस्ताद अच्छे हों मगर उस्ताद जी न हों ॥ २ ॥

शब्दार्थ—खातूने खाना-घर की देवियां, जी इल्म-विद्वान्, मुत्तकी-परहेज़गार ।

२८—कौन कहता है कि तालीमे-ज़ना खूब नहीं ।

एक ही बात फ़क़त कहना है यां हिकमत को ॥ १ ॥

दो उसे शौहरो-अतफ़ाल की खातिर तालीम ।

कौम के वास्ते तालीम न दो औरत को ॥ २ ॥

शब्दार्थ—तालीमे ज़नां-स्त्रियों की शिक्षा, शौहर-पति, अतफ़ाल-बच्चे ।

२९—एजाज़ बढ़ गया है आराम घट गया है ।

ख़िदमत में है लेज़ी और नाचने को रेडी ॥

तालीम की ख़राबी से हो गई बिलाख़िर ।

शौहर-परस्त बीबी पब्लिक-पसन्द लेडी ॥

शब्दार्थ—एजाज़-सम्मान, लैज़ी-सुस्त, रेडी-तैयार, बिलाख़िर-अन्त में शौहर-परस्त-पति-भक्त ।

३०—कुल स्टेशन को उसने मेरे घर से कर दिया वाकिफ़ ।

ये देखो बरकते-तालीम बीबी इसको कहते हैं ॥

अब रही तालीम, कौन इस अम् का मफ्तू नहीं ।

बीवियों पर मगरिबी सांचा मगर मौजूं नहीं ॥

शब्दार्थ—मफ्तू-प्रेमी, मगरिबी-पश्चिमी, मौजूं-ठीक ।

३१—तालीमे-दुख्तरां से ये उम्मीद है ज़रूर ।

नाचे दुल्हन खुशी से खूद अपनी बरात में ॥

३२—उन से बीवी ने फ़कत स्कूल ही की बात की ।

ये न बतलाया कहां रक्खी है रोटी रात की ॥

३३—बीवी में तरज़े-मगरिबी हो तो कहो ।

अहसान है ये जो मुझको शौहर समझो ॥

३४—खुदा के फ़जल से बीवी मियां दोनों मुहज्जब हैं ।

हिजाब उनको नहीं आता इन्हें गुस्सा नहीं आता ॥

शब्दार्थ—फ़जल-कृपा, मुहज्जब-सभ्य, हिजाब-लज्जा ।

भावार्थ—ईश्वर की कृपा से स्त्री-पुरुष दोनों पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे हुवे हैं, स्त्री को बिना परदे के बाहर निकलने में लज्जा नहीं आती और पुरुष को स्त्री की निर्लज्जता पर क्रोध नहीं आता ।

३५—घर से जब पढ़ लिख के निकलेंगी कुवारी लड़कियां ।

दिल कशो आज़ादी खुशरो साख्ता परदाख्त ॥

यह तो क्या मालूम क्या मौक़े अमल के हंगे पेश ।

हां निगाहें होंगी मायल उस तरफ़ बे साख्ता ॥

मगरबी तहज़ीब, आगे चल के जो हालत दिखाये ।

एक मुद्दत तक रहेंगे नौजवां दिल बाख्ता ॥

ओज कौमी से शराफ़त का हुमा गिर जायगा ।

माकियां से पस्ततर दिखलायी देगी फ़ाख्ता ॥

डाल देगा सीनये ग़ैरत सपर मैदान में ।

तेग़ अबरु ही नज़र आयेगी हरसू, साख्ता ॥

७—राज-नीति

तथा

हिन्दू-मुस्लिम एकता ।

—:०:—

राज-नीति

१—कहा महदी ने भाई तुमको क्यों इस दरजे हैरत है ।

तुम्हारे वास्ते क्या ये महले-रश्को-गैरत है ॥

ताज्जुब क्या है हम उस बुत के पहलू में जो लेटे है ।

हरम के मौहतरिम क्या दौर के खादिम से हेटे हैं ॥

बिरहमन ने कहा बस आपकी बातें ही बातें हैं ।

अजी ये वस्ल की रातें नहीं हैं उनकी घातें हैं ॥

कहा महदी ने हम को तो मज्जे से अपने मतलब है ।

मौहब्बत हो न हो उनको उमीद उसकी यहां कब है ॥

बिरहमन ने कहा ऐसा मज्जा अयज़ा का मुज़ाइफ़ है ।

कहा महदी ने हां इस बात से बन्दा भी वाकिफ़ है ॥^१

शन्दार्थ—हैरत-आश्चर्य, महल-अवसर, रश्क-ईर्ष्या, गैरत-लजा, हरम-काबा, मौहतरिम-माननीय, दौर-मन्दिर, खादिम-सेवक, अयज़ा का मुज़ाइफ़ है—अज्ज़ों को कमज़ोर करने वाला है ।

२—बहुत ही उम्दा है ऐ हमनशीन बिरटिश राज ।

कि हर तरह के ज़वाबित भी हैं उसूल भी हैं ॥

१ इस पद्य में अकबर ने सरकार के चापलूस हिन्दू-मुसलमानों पर कटाक्ष किया है ।

जो चाहे खोल दे दरवाज़े—अदालत को ।
 कि तेल पेच में है ढीली इसकी चूल भी है ॥
 तरह-तरह के बना लो लिबास रंगारंग ।
 अलावा रुई के रेशम भी और ऊल भी है ॥
 जब इतनी नेमतें मौजूद हैं यहां अकबर ।
 तो हर्ज क्या है जो साथ उसके डैम-फूल भी है ॥

शब्दार्थ—हमनशीन-मित्र, ज़वाबित-नियम, उसूल-सिद्धान्त, ऊल-ऊन

३—मुल्क पर तासीरे-चश्मे-वोट तारी हो गई ।
 मुफ्त शेखो—बिरहमन में फ़ौजदारी हो गई ॥ १ ॥
 हिन्दुओं को क्यों न अब भाई बनायें मुलहदोस्त ।
 आर्य मज़हब में भी तौहीद जारी हो गई ॥ २ ॥
 मैम्बरी पर जज़ हो इस में गऊ का क्या कसूर ।
 मुल्क में बदनाम नाहक ये बिचारी हो गई ॥ ३ ॥
 शब्दार्थ—तौहीद-एक ईश्वर को मनाना ।

४—अज़ राहे-ताल्लुक़ जोड़ा करे कोई रिश्ता ।
 अंग्रेज़ तो 'नेटिव' के चचा हो नहीं सकते ॥ २ ॥
 'नेटिव' नहीं हो सकते गोरे तो है क्या राम ।
 गोरे भी तो बन्दे से खुदा हो नहीं सकते ॥ २ ॥
 हम हों जो कलकटर तो वो हो जायें कमिश्नर ।
 हम उन से कभी ओहदेबरा हो नहीं सकते ॥ ३ ॥
 शब्दार्थ—ओहदेबरा होना-ओहदे में बढ़ना ।

५—अज़न आया निकल गया सन से ।

सुन लिया नाम आग पानी का ॥ १ ॥

बात इतनी और उस पे ये तूमार ।

गुल है यू रूप पे जाफिसानी का ॥ २ ॥

इल्म पूरा हमें सिखायें अगर ।

तब करें शुक्र मेहरबानों का ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—जाफिसानी-परिश्रम ।

६—क्यों अपने सर पर ज़हमते-बेसूद लीजिये ।

कौन्सिल के बदले घर में उछल कूद लाजिये ॥ १ ॥

खा पी के घर में बैठिये और गाइये भजन ।

काशी से चल प्रयाग से अमरूद लीजिये ॥ २ ॥

हो वज़अ अपने देश को माल अपने देश का ।

बेहतर है राहे-मंज़िले-बहबूद लीजिये ॥ ३ ॥

शब्दार्थ—ज़हमत-कष्ट, बेसूद-व्यर्थ, बहबूद-आराम ।

७—नौकर को सिखाते हैं मिया अपनी ज़बां ।

मालव ये है कि समझे उनके फ़र्मान ॥

मकसूद नहीं मियां की सो अकलो-तमीज़ ।

इस नुक्ते को क्या समझें वे जा हैं नादान ॥

शब्दार्थ—फ़र्मान-आज्ञा, मकसूद-इष्ट, नुकता-रहस्य ।

८—सितम से वो दिल मेरा दुखाये ।

और अपने इशवां की दाद चाहें ॥

अजब तमाशा है दिल का रोना ।

ज़बान का वाह वाह करना ॥

शब्दार्थ—सितम-जुल्म, इशवा-अदा, दाद-प्रशंसा ।

९—कौम पर मैम्बरी का फ़ौर हुवा ।

कल जो अपना था वो ग़ौर हुवा ॥ १ ॥

शेख़ जी मर गये कमैटी में ।

गुल मचा खातमा बख़्तर हुवा ॥ २ ॥

१०—हमदर्द हों सब ये लुक्ते-आबादी है ।

हमसाया भी हो शरीक तब शादी है ॥१॥

तसकीन है जब कि खुदा पर हो तकिया ।

क़ानून बना सकें तब आज़ादी है ॥२॥

शब्दार्थ—तकसीन-शान्ति, तकिया-सहारा ।

११—मुल्क में मुभको ज़लोलो-ख़्वार रहने दीजिये ।

आप अपनी इज्जतो-दरबार रहने दीजिये ॥१॥

ज़ालिमाना मशवरों में मैं नहीं हूंगा शरीक ।

गैर ही को मरहमे-इसरार रहने दीजिये ॥२॥

शब्दार्थ—मरहमे इसरार-भेद की बात जानने वाला ।

१२—रिज़ोल्यूशन की शोरिश है मगर उसका असर ग़ायब ।

प्लेटों की सदा सुनता हूँ और खाना नहीं आता ॥

शब्दार्थ—रिज़ोल्यूशन-प्रस्ताव, शोरिश-धूम, प्लेट-रकाबी ।

१३—रिआया को मुनासिब है कि बाहम दोस्ती रखें ।

हिमाक़त हाकिमों से है तवक्क़ै गर्म जोशी की ॥

शब्दार्थ—हिमाक़त-मूर्खता, तवक्क़ै-आशा ।

१४—बाबू साहब का ये शिक्वे-अप्रलास बजा ।

सच तो कहते हैं कि मछली न सही भात तो हो ॥

जो ख़िदमन्द हैं वे खूब समझते हैं ये बात ।

खैरखाही वो नहीं है जो हो डर से पैदा ॥

शब्दार्थ—ख़िदमन्द-बुद्धिमान ।

१५—फ़िरंगी से कहा पेंशन भी लेकर बस यहीं रहिये ।

कहा जीने को आये हैं यहां मरने नहीं आये ॥

१७—मैंने कहा कि अपना समझिये मुझे गुलाम ।

बोला वो बत ये हंस के फ़िरंगी नहीं हैं मैं ॥

१८—अगर मज़हब खललअन्दाज़ है मुल्की मक्कासिद में ।

तो शेखो-बिरहमन पिन्हां-रहेँ दौरों-मसाजिद में ॥

शब्दार्थ—मक्कासिद-उद्देश्य, पिन्हां-छिपे हुवे, दौर-मन्दिर, मसाजिद-मसजिद का बहुवचन

१९—उनका मेरा तआल्लुक इस से है साफ़ ज़ाहिर ।

उनका इशारा देखो मेरा सलाम देखो ॥

२०—जिधर साहब उधर दौलत जिधर दौलत उधर चन्दा ।

जिधर चन्दा उधर आनर जिधर आनर उधर बन्दा ॥

शब्दार्थ—आनर-इज्जत ।

२१—कौमी तरक्की की राधा प्यारी, बैठी है पहने जोड़ा भारी ।

नौ मन तेल की फिक्र है तारी, चन्दे की तहसील है जारी ॥

शब्दार्थ—तारी-लगी हुई,

भावार्थ—जातीय उन्नति के लिये हम जो काम करते हैं उनमें अधिकतर दिखावा ही होता है तथा बहुत सा धन इस निरर्थक दिखावे ही की भेंट हो जाता है ।

२२—गोलियों के ज़ोर से करते हैं वो दुनिया को हज़म ।

इससे बेहतर इस गिज़ा के वास्ते चूरन नहीं ॥

२३—अपनी मिनकारों से हल्का कस रहे हैं जाल का ।

तायरोँ पर सहर है सय्याद के इक़बाल का ॥

शब्दार्थ—मिनकार-चोंच, हल्का-फन्दा, तायर-पक्षी, सहर-जादू, सय्याद-चिड़ीमार, इक़बाल-प्रताप ।

२४—उन्हीं की भैंस है भाई कि जिन की लाठी है ।

उन्हीं का गांव है अकबर जो बन सकें ठाकुर ॥

२५—ज़ोरे-बाजू न हो तो क्या स्पीच ।

हाथ भी दे खुदा ज़बां के साथ ॥

२६—हमें तो चाहते हैं खींचना खुद हम से खिंचते हैं ।
ये उनकी पालिसी के बाग़ किस पानी से सिंचते हैं ॥

हिन्दू-मुस्लिम एकता ।

२७—अमूरे मुल्की की बहस में तुम,
जो हिन्दुओं के बनोगे साथी ।
न लाट साहब खिताब देंगे,
न राजाजी से मिलेगा हाथी ॥१॥
न अपना मक्खन वो तुमको देंगे,
न अपनी पूरी ये बांट देंगे ।
पड़ेगा मौक़ा जो कोई आकर,
तो दोनों ही तुमको छांट देंगे ॥२॥
मगर वो रहते हैं दूर हम से,
ये लोग साथी हैं और पड़ोसी ।
मिले जुले हैं सोसाइटी में,
अहीर इनमें तो हम में घोसी ॥३॥
न होगी हुक्काम को भी दिक्कत,
जो होगी एकजा हर एक की ख्वाहिश ।
ज़रूरत उनको भी ये न होगी,
करें हर एक से अलहदा पुरसिश ॥४॥

२८—हम उर्दू को अरबी क्यों न करें,
उर्दू को वो भाषा क्यों न करें ।
भगड़े के लिये अखबारों में,
मज़मून तराशा क्यों न करें ॥१॥
आपस में अदावत कुछ भी नहीं,
लेकिन एक अखाड़ा कायम है ।

जब इससे फलक का दिल बहले,

हम लोग तमाशा क्यों न करें ॥२॥

२६—चुगलियां एक दूसरे की वक्त पै जड़ते भी हैं ।

नागहां गुस्सा जो आ जाता है लड़ पड़ते भी है ॥१॥

हिन्दू वो मुस्लिम हैं फिर एक और कहते हैं सच ।

हैं नज़र आपस की हम मिलते भी हैं लड़ते भी हैं ॥२॥

३०—हिन्दू मुसलिम एक हैं दोनों ।

यानी ये दोनों एशियाई हैं ॥१॥

हमवतन-हमजुवानो-हमकिश्मत ।

क्यों न कहदू कि भाई-भाई हैं ॥२॥

३१—लड़ें क्यों हिन्दुओं से हम यहीं के अन से पनपे हैं ।

हमारी भी दुआ ये है कि गंगा जी की बढ़ती हो ॥

मगर हां, शेखजी की पालिसी से हम नहीं वाकिफ़ ।

इसी पर ख़त्म करते हैं कि जो साहब की मरजी हो ॥

शब्दार्थ—दुआ-प्रार्थना ।

३२—ऊंट ने गायों की ज़िद पर शेर को साभी किया ।

फिर तो मैडक से भी बदतर सबने पाया ऊंट को ॥१॥

जिस पै रक्खा चाहते हो बाक़ी अपनी दस्तरस ।

मुंह में हाथी के कभी भाई वो गन्ना न दो ॥२॥

शब्दार्थ—दस्तरस-पहुँच,

३३—बाज मुसलिम तो ऐसे हैं मौजूद ।

मुंह जो लहमे-बकर से मोड़ते हैं ॥१॥

फ़ौजी गोरे मगर रुकें क्योंकर ।

जान बुल कब गऊ को छोड़ते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—लहमे बकर-गाय का गोश्त,

३४—बेहतर यही है फेर लें आंखों को गाय से ।

क्या क़ायदा है रोज की इस हाय होय से ॥१॥

कमजोरियों को रोकदे ज़ोरों को क्या करे ।

मुसलिम हटे तो फौज के गोरों को क्या करे ॥२॥

३५—भगड़ा कभी गाय का जबां की कभी बहस ।

हे सख्त मुजिर ये नुसख़ये—गावज़बा ॥

शब्दार्थ—गावज़बां-गाय और भाषा । एक यूनानी दवा का नाम भी गावज़बां है ।

३६—मेरी नजरों में यकसां है शुतर हां या गऊ माता ।

मुझे करते जो वो मदऊ कथा में मैं भी भूम आता ॥

३७—खुदा ही की इबादत जिनको हो मकसूद अय अकबर ।

वों क्यों बाहम लकैं गो फर्क हो तरजे-इबादत में ॥

३८—आता है वज़द मुझको हर दीन की अदा पर ।

मसजिद में नचता हूँ नाकूस की सदा पर ॥

शब्दार्थ—बज़द आना-प्रेम में तन्मय हो जाना, दीन-धर्म, नाकूस-शंख ।

८-विभिन्न ।

—:०:—

- १—चला जाता था एक नन्हा सा कीड़ा रात कागज़ पर ।
 बिला कस्टे-ज़रर उसको हटाया मैंने उंगली से ॥१॥
 मगर ऐसा वो नाजुक था कि फ़ौरन पिस गया बिल्कुल ।
 निहायत ही ख़फ़ीफ़ एक दाग़ काग़ज़ पर रहा उसका ॥२॥
 अभी वो रोशनी में शमअ की काग़ज़ पै फिरता था ।
 अभी यूँ मिट गया जबिशे-अन्गुशते-इन्सां से ॥३॥
 लिया मेरे सिवा नोटिस ही किसने उसका दुनिया में ।
 थी फ़ितरत की क्या कारीगरी उसके बनाने में ॥४॥
 नसबनामा भी उसका आलमे-ज़रात में होगा ।
 यही थी उसकी हस्ती और उसमें उसकी मस्ती थी ॥५॥
 न मातम करनेवाला है न लाइफ़ लिखनेवाला है ।
 वो धब्बा दसैं-इवरत दे रहा है मुझको अय अकबर ॥६॥
 मआज़ अल्लाह क्या समझा है तूने अपनी वक़अत को ।
 मुझे भी सफ़हे-रुवे-ज़र्मी से एक दिन आख़िर ॥७॥
 मिटा देगी कोई तहरीक़ फ़ितरते-हुक्मे-बारी से ।
 अबब हैरत से मैं हूँ देखता इस दागे-काग़ज़ को ॥८॥
 मेरी नज़रों में नक़्शा ये है, दुनियाये-फ़ानी का ।
 सरीहन ज़िस्म था एक जान थी अहसास था उसमें ॥९॥
 और अब धब्बा सा है क्या जाने कोई कैसा धब्बा है ।
 अबब क्या है जो समझे कोई पेन्सिल की लकीर इसको ॥१०॥

मअज़ अल्लाह मअज़ अल्लाह सन्नाटे का आलम है ।

बहुत जी चाहना है रोज़ इस हस्ती के धब्बे पर ॥११॥

ये है बरसात के दिन तीसरी भादों गुज़रती है ।

मैं अपना गम गलत करता हूँ कुछ अशआर लिखने से ॥१२॥

शब्दार्थ—कस्दे ज़रर-नुकसान पहुँचाने का इदादा । ख़फ़ीफ़-छोटा ।
जंबिशे अंगुस्ते इन्सां-आदमी की उंगली की हरकत । फ़ितरत-प्रकृति ।
नसबनामा-वंशावलि । ज़र्रात-कण । इस्ति-अस्तित्व । लाइफ़-जीवन-चरित्र ।
दर्स-शिद्दा । मअज़ अल्लाह-ईश्वर की शरण । सरीहन-साफ़ तौर से ।
अहसास-अनुभव करने की शक्ति ।

२—मेरी चश्म क्यों न हो खूफ़शां न रही वो बज़म न वो समा ।

न वो तर्ज़े-गर्दिशे-चर्ख़ है न वो रंगे-लैलो-निहार है ॥१॥

जहाँ कल था गुलगुलये-तर्ब वहाँ आज है ये गज़ब ।

कहीं एक मकां है गिरा हुवा कहीं एक शकिश्ता मज़ार है ॥२॥

ग़मो-यासो-हसरतो-बेकसी की हवा कुछ ऐसी है चल रही ।

न दिलों में अब वो उमंग है न तबियतों में उभार है ॥३॥

हुवे मुझपै जो सितमे-फलक कहूँ किससे उसको कहां तलक ।

न मुसीबतों की है कोई हद न मेरे ग़मों का शुमार है ॥४॥

मेरा सीना दागों से है भरा मेरे दिल को देखिये तो ज़रा ।

ये शहीदे-इश्क की है लहद पड़ा जिसपै फूलों का हार है ॥५॥

मैं समझ गया वो है बेवफ़ा मगर उनकी राह में हूँ फ़िदा ।

मुझे खाकमें वो मिला चुके मगर अब भी दिल में गुबार है ॥६॥

शब्दार्थ—खूफ़सां-लोहू से भरी हुई, बज़म-सभा, चर्ख़-आकाश, लैलो-
निहार-रात दिन, गुलगुलये तर्ब-खुशी का शोर, शकिस्ता-जीर्ण, मज़ार-
क़ब्र, यास-निराशा, शहीदे इश्कर्ग़ में-प्रेम के मा जान खोने वाला,
लहद-क़ब्र ।

३—वन पड़े तो क़िबला ही बनना मुनासिब है तुम्हें ।

दिक़तों में वो फ़ांसा जो स्वायर हो गया ॥१॥

दीदनी है ये तमाशाये-मशीने-इन्कलाब ।
 बाप तो क़िबला थे बेटा स्क्वायर हो गया ॥२॥
 तख़लिये में आज मैंने उन का बोसा ले लिया ।
 देखिये डिगरी जो हां दावा तो दायर हो गया ॥४॥
 अब तो मुझ को भी मुनासिब है कि पटवारी बनूं ।
 यार को शौके-हिसाबे-मालो-साथिर हो गया ॥४॥
 फ़िक्रे-दुनिया ने भुलाया सब कुरानो-हदीस ।
 मौलवी भी महवे-कानूनो-नज़ायर हो गया ॥५॥

शब्दार्थ—क़िबला-प्राचीन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित, स्क्वायर-नूतन सभ्यता के अनुसार प्रतिष्ठित, दीदनी-दर्शनीय, इनकलाब-परिवर्तन, तख़लिया-एकान्त, हदीस मुसलमानों की धार्मिक पुस्तक, नज़ायर-मुक़दमों के दृष्टान्त ।

४—अकबर न थमा बुतख़ाने में,
 ज़हमत भी हुई और ज़र भी गया ।
 कुछ नामे-खुदा से उन्स भी था,
 कुछ जुल्मे-बुतां से डर भी गया ॥१॥
 परवाने का हाल इस महफ़िल में,
 है काबिले-रश्क अय अहले-नज़र ।
 एक शब ही में पैदा भी हुआ,
 आशिक़ भी हुआ और मर भी गया ॥२॥
 काबे से जो बुत निकले तो क्या,
 काबा ही गया जब दिल से निकल ।
 अफ़सोस कि बुत भी हम से छुटे,
 कब्ज़े से खुदा का घर भी गया ॥३॥
 क्या गुज़री जो एक परदे के अदू,
 रो रो के पुलिस से कहते थे ।

इज्जत भी गई दौलत भी गई.

बीबी भी गई जबर भी गया ॥४॥

अकबर के जो मर जाने की खबर,

साक्री ने सुनी तो खूब कहा ।

मरना तो जरूरी था ही उसे,

रिन्दों के लिये कुछ कर भी गया ॥५॥

शब्दार्थ—ज़हमत-कष्ट, उन्स-प्रेम, अदू-दुश्मन ।

५—सखुन शनास से मैं चाहता हूँ दादे-सखुन ।

खूशी के वास्ते काफ़ी हैं मुझको वाह फ़क़त ॥१॥

सोसाइटी नहीं मिलती कि जिससे दिल बहले ।

जो कोई मूनि-सो-हमदम है अब तो आह फ़क़त ॥२॥

शब्दार्थ—सखुन शनास-काव्य मर्मज्ञ, दादे सखुन-काव्य की प्रशंसा,
मूनि-स-आराम देने वाला ॥

६—शर्फ़ है जुब्बये-बैरिस्ट्री से जिनको यहां ।

मुक़दमों ही की वो देखते हैं राह फ़क़त ॥३॥

बयाज़े-शेर से मतलब नहीं किलरकों को ।

रजिस्ट्री ही को करते हैं वो स्याह फ़क़त ॥४॥

शब्दार्थ—शर्फ़-मान, जुब्बये बैरिस्ट्री-बैरिस्ट्री की पौशाक, बयाजे शेर
शेर लिखने की कापी ।

७—गुज़र की जब न हो सूरत गुज़र जाना ही बहतर है ।

हुई जब ज़िन्दगी दुश्वार मर जाना ही बहतर है ॥१॥

रहे-इस्लाह में गो तेज़गामी खूब है लेकिन ।

क़दम को लराज़िशें जब हों ठहर जाना ही बहतर है ॥२॥

मवाक़ देख कर इज़हारे-मरदी चाहिये अय दिल ।

डरायें खेल में बच्चे तो डर जाना ही बहतर है ॥३॥

बिठाया है बुतों ने बज़म में जब अपना ही सिक्का ।

जो हैं अल्लाहवाले उनको उठ जाना ही बहतर है ॥४॥

बुलाता है मुझे बुतखाने से शेखे-हरम अकबर ।

न जाना गोकि जा है मगर जाना ही बहतर है ॥५॥

शब्दार्थ—इस्लाह-मुधार, तेज़गामी-तेज़ चाल, लगज़िशें-ठोकरें,

मवाके-अवसर, जायज-ठीक ।

८—ज़वाने-संस्कृत इस वक्ता पण्डित जी से कहती है ।

कि अच्छा है मेरी उल्फत तुम्हारे दिल में रहती है ॥१॥

मैं खुशी हूंगी बिलाशक तुम अगर मुझको जिलावोगे ।

मगर बिसकी पिलावोगे कि गङ्गा-जल पिलावोगे ॥२॥

जिऊंगी मैं कि फिर तुमको मिलाऊँ देवताओं से ।

भिड़ावोगे मुझी को या कि दुनिया का बलाओं से ॥३॥

अगर शौक़े-इबादत है तो मैं मौजूद हूँ अब भी ।

अगर दुनिया का सौदा है तो कब मैं इस से राज़ी थी ॥४॥

शब्दार्थ—इबादत-पूजना ।

९—ज़न ज़मीं ज़र तो है फ़साद का घर ।

लेकिन इतना कहूँगा अय अकबर ॥ १ ॥

ज़न मनकूहा वो शरीफ़ो-ग़रीब ।

क्या अजब है जो करे अमन नसीब ॥ २ ॥

हो जो बस आमदे-ज़रे-तनखाह ।

तो नहीं हाजिते-बकीलो-गवाह ॥ ३ ॥

हो जो थोड़ी सी बाग़ ही की ज़मीं ।

तो कलक्टर का डर ज़ियादह नहीं ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—ज़न-स्त्री, ज़मीं-भूमि, ज़र-द्रव्य, फ़साद-भगड़ा, मन-कूहा-विवाहित ।

१०—निगरानिये-मराहिल कभी ऐसी तो न थी,

तुन्द मौज लबे-साहिल कभी ऐसी तो न थी ।

बदगुमानी तेरी क्रातिल कभी ऐसी तो न थी,

बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी ॥

जसा अब है तेरी महफिल कभी ऐसी तो न थी ॥ १ ॥

करती है खल्क को लैलाये-लिबर्टी^१ मफतू^२,

हिन्द के दिल को लुभा लेता है मिल^३ का ये फसू^४ ।

लाजपत भी हुवे शायद कि असीरो-महजू^५,

पाय-कोबां कोई जिन्दां में नया है मजनू^६ ॥

आती आवाजे सलासिल कभी ऐसी तो न थी ॥ २ ॥

पेशतर इस से तबायअ के न थे ये पहलू,

कहीं स्नान की लहर कहीं मौजे बज्जू ।

अय मिसे-कमसिन माहे--जर्बी वो गुलरू,

तेरी आंखों ने खुदा जाने क्या किया जादू ॥

कि तबियत मेरी मायल कभी ऐसी तो न थी ॥ ३ ॥

शब्दार्थ —निगरानी-देख-रेख, महफिल-मरहला (मञ्जिल) का बहुवचन, लबे साहिल-किनारे पर, खल्क-संसार, लिबर्टी-स्वाधीनता, मफतू-मोहित, मिल-लिबर्टी आदि पुस्तकों के रचयिता इंग्लैंड के प्रसिद्ध दार्शनिक स्टुअर्ट मिल, फसू-जादू, पाय कोबां-पांव काटने वाला, सलासिल-जञ्जार ।

११—गये बिरहमन के पास लेकर,

अपने भगड़े को शीआ सुन्नी ।

बिगड़ के बोला कि जावो भागो,

मलेच्छ तुम भी मलेच्छ वो भी ॥ १ ॥

बढ़ी जो तकरार तो वे लेकर,
 उन्हें फिरङ्गी के पास पहुँचा ।
 वो बोला बस दूर हो यहां से,
 कि तुम भी नेटिव हो वो भी नेटिव ॥ २ ॥

फलक ने आखिर हरेक की सुन कर,
 कहा कि तुम सब हो मस्ते-गफ़लत ।

समझलो इस को कि तुम भी फ़ानी हो,
 वो भी फ़ानी है ये भी फ़ानी ॥ ३ ॥

१२—कालिज में हो चुका जब इस्तहां हमारा ।
 सीखा ज़बां ने कहना हिन्दोस्तां हमारा ॥ १ ॥
 रकबे को कम समझ कर अकबर ये बोले उठे ।
 हिन्दोस्तान कैसा सारा जहां हमारा ॥ २ ॥
 लेकिन ये सब ग़लत है कहना यही है लाज़िम ।
 जो कुछ है सब खुदा का वहमो-गुमां हमारा ॥ ३ ॥

१३—गुल फँके हैं यूरोप की तरफ़ बल्कि समर भी ।
 अय नेचरो-साइन्स भला कुछ तो इधर भी ॥ १ ॥
 अग़ायार तो दुनिया है उठाये हुवे सर पर ।
 हम बैठे हैं इस तरह कि उठता नहीं सर भी ॥ २ ॥
 अग़ायार तो रग रग से हमारी हुवे वाकिफ़ ।
 हम वो हैं कि पाते नहीं उस बुत की कमर भी ॥ ३ ॥

१४—सोचो कि आगे चल कर किस्मत में क्या लिखा है ।
 देखो घरों में क्या था और आज क्या रहा है ॥ १ ॥
 हुशियार रहके पढ़ना इस ज़ाल में न पढ़ना ।
 यूरोप ने ये किया है यूरोप ने वो किया है ॥ २ ॥

१५—आनरो^१—दौलत में खुद वाइज है गर्क ।

दुसरां पर नुकतेचीनी की तो क्या ॥ ३ ॥

बज्जे-साक्री की कहां वो मस्तियां ।

लुप के अकबर ने अगर पी भी तो क्या ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—आनर-मान, वाइज-धर्मोपदेशक, गर्क-डूबा हुआ,
नुकते चीनी-दोषान्वेषण ।

१६—गलत फहमी बहुत है आलमे—अलफाज में अकबर ।

बड़ी मायूसियों के साथ अक्सर काम चलता है ॥ १ ॥

ये रोशन है कि परवाना है उसका आशिके—सादिक ।

मगर कहती है खलकत शमअ से परवाना जलता है ॥ २ ॥

१७—जो हमको बुरा कहते हैं माजूर हैं अकबर ।

हक ये है हम भी उन्हें अच्छा नहीं कहते ॥ १ ॥

हम हज़रते—ईसा का अदब करते हैं बेहद ।

लेकिन उन्हें अल्लाह का बेटा नहीं कहते ॥ २ ॥

शब्दार्थ—माजूर-मजबूर, हक-वास्तविकता ।

१८—या इमीटेशन^२ के सदके चाय दूध और खांड ले ।

या एजीटेशन^३ के बदले तू चला जा मांडले ॥ १ ॥

या क़नाअत और ताअत में बसर कर ज़िन्दगी ।

रिज़क की किश्ती को खे पतवार ले और डांड ले ॥ २ ॥

१९—बुते-सितमगर की कुछ न पूछो,

हसीन भी है ज़ाहीन भी है ।

नहीं है दिल ही पे सिर्फ़ आफ़त,

यहां तो ख़तरे में दीन भी है ॥ १ ॥

हमारे भगवों की कुछ न पूछो,
तमाम दुनिया है और हम ; ।
कि जेब में ज़र है घर में ज़न है,
खिराज पर कुछ ज़मीन भा है ॥२॥

शब्दार्थ—ज़र-रुपया, ज़न-स्त्री ।

२०—जिन्दगी को ज़रूर है एक शगल ।
खैर बिलफेल लीडरा हा सहा ॥१॥
अब तो अकबर बसा है गंगा तीर ।
न हो स्नान दिल्लगी ही सहा ॥२॥

२१—मेरे तरजे-फुगां की बुलहविस तकलाद करते हैं ।
खिज़ल होंगे असर की भी अगर उम्मीद करते हैं ॥१॥
जहां के इनकलाबों के भी क्या क्या रंग होते हैं ।
बशर की क्या हक़ीक़त है फ़रिश्ते दंग होते हैं ॥२॥

शब्दार्थ—तरजे फुगां-रंगे चिल्लाने का दंग, तकलीद-अनुगमन
खिज़ल-लज्जित, इनकलाब-वर्तन, बशर-मनुष्य ।

२२—तआल्ली की नहीं लेते हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं ।
मगर हम जितने हैं बेज़ार दुनिया से कम ऐसे हैं ॥१॥
मेरी हर वक्त की अफ़सुदर्गी है बार यारों पर ।
मगर मैं क्या करूं इसको खुदा शाहिद ग़म ऐसे हैं ॥२॥

शब्दार्थ—तआल्ली की लेना-बढ़ा कर बात कहना, बेज़ार-नाराज़,
अफ़सुदर्गी-आकुलता, बार-ब्रेक । शाहिद-गवाह ।

२३—थूरूप वाले जो चाहें दिल में भर दें ।
जिसके सिर पर चाहें तोहमत धर दें ॥१॥
बचते रहो इनकी तेजियों से अकबर ।
तुम क्या हो खुदा के तीन टुकड़े कर दें ॥२॥

२४—अगरचे आशिक्र बुतों का हूं मैं,

नज़र खुदा से फिरी नहीं है ।

जो आंख रखते हैं जानते हैं,

कि आशिक्री काफ़िरी नहीं है ॥१॥

जमाले-दिलकश का मद्ह्व होना,

नहीं है हरगिज़ ख़िलाफ़े-ताअ़त ।

खुदा की कुदरत की क़द्र करना,

सवाब है काफ़िरी नहीं है ॥२॥

शब्दार्थ—जमाले दिलकश-चित्ताकर्षक सौन्दर्य । मद्ह्व-लवलीन ।

ताअ़त-आशा, सवाब-पुण्य ।

२५—छुत्फ़ चाहो एक बुते-नौख़ोज़ को राज़ी करो ।

नौकरी चाहो किसी अंग्रेज़ को राज़ी करो ॥१॥

लीडरी चाहो लफ़्ज़े-क़ौम है महमांनवाज़ ।

गपनवीसों को और अहले-मेज़ को राज़ी करो ॥२॥

२६—असबाते-खुदा को मन्तिकी उठ न सका ।

खाके-हैरत से ज़हन ही उठ न सका ॥१॥

अल्लाह रे नज़ाकते-वजूदे-बारी ।

साबित होने का बार भी उठ न सका ॥२॥

शब्दार्थ—असबाते खुदा-ईश्वर का अस्तित्व, मन्तिकी-तार्किक, हैरता-

आश्चर्य, वजूदे बारी-ईश्वर का अस्तित्व, बार-बोझ ।

२७—अपनी हस्ती जो हिजाबे-रुख़े-जानां न रहे ।

वां रहें हम कि जहां फिर कोई अरमां न रहे ॥१॥

सूरते-यार जो सौ परदों में पिन्हां न रहे ।

बहस फिर तुझ में ये अय गबरो-मुसल्मां न रहे ॥२॥

२८—जमाने-हाल में अगले फ़साने अमरे-माज़ी हैं ।

जो तलवारें चलाते थे वो अब ठोकर पै राज़ी हैं ॥१॥

शराब उड़ती है पब्लिक में रवा है खून तकवे का ।

मजा है अब तो रिन्दों का न मुफती है न काज़ी हैं ॥२॥

२६—हर गाम पै चन्द आखें निगरां,

हर मोड़ पै एक लैसन्स तलब ।

उस पार्क में आखिर अय अकबर,

मैंने तो टहलना छोड़ दिया ॥१॥

उस दूरे-लका को घर लाये हो,

तुम को मुबारिक अय अकबर ।

लेकिन ये कयामत की तुम ने,

घर से जो निकलना छोड़ दिया ॥२॥

३०—अल्लाह रे इनकलाबे-तरजो-मजाके-मशरिक ।

हाफिज के शेर कैसे सब पढ़ रहे हैं रीडर^१ ॥१॥

लैली का नमज रुखसत स्कूल मिस्टरस^२ है ।

सौदाये-कैस गायब अब वो बने है लीडर^३ ॥२॥

शब्दार्थ—इनकलाब-परिवर्तन, सौदाये कैस-मजनू का पागलपन ।

३१—वो शरारत से मरे शाम आते हैं ।

ये दिखाना है कि गैरों के पयाम आते हैं ॥१॥

बाज़ कालिज में जां कह आते है अक्सर अकबर ।

क्या ये गिरती हुई दीवार को थाम आते हैं ॥२॥

३२—कदम अंग्रेज़ कलकरो से दिल्ली में जो धरते हैं ।

तिजारत खूब की अब देखें शाही कैसी करते हैं ॥

३३—ताकीदे-इबादत पै अब ये कहते हैं लडके ।

पीरी में भी अकबर की ज़राफ़त नहीं जाती ॥

शब्दाथ—पारी-बुढ़ापा । ज़राफत-हास्य ।

३४—हरीफा ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में ।
कि अकबर ज़िक्र करता है खुदा का इस ज़माने में ॥

शब्दार्थ—हरीफ-दुश्मन ।

३५—दिल की बाक़ी नहीं ग्रय दोस्त मज़ामीं कैसे ।
आप मोती के तलबगार हैं दरया भी तो हो ॥
३६—आशिक की तबज़ लाखों ही मौजों में है रवां ।
अलफ़ाज़ कर न सकेंगे उसका मुहासरा ॥

शब्दार्थ—रवां-बढ़ती हुई, मुहासरा-घेरा ।

३७—इन बुतों के बाव में इतनी ही मेरी अज़ है ।
कुफ़ है इनकी परस्तिश प्यार करना फ़ज़ है ॥
३८—कब मैं कहता हूँ अलग हो सारा किस्सा छोड़ कर ।
कर तलब दुनिया मगर साहब का हिस्सा छोड़ कर ॥

शब्दार्थ—तलब-याचना ।

३९—फुरकते-यार में जाने का सहारा क्या था ।
खूब थी मौत सिवा मौत के चारा क्या था ॥
४०—जहाँ सुई घड़ी का होती थी वक्त, उसको कहते थे ।
गई चारी तो हम सबके ज़माना इसका कहते हैं ॥

४१—गोशये-मसाजिद में कारे-शेख़ अब बनता नहीं ।
पेट गो तिस्क़ान पाजाय मगर तनता नहीं ॥
शब्दार्थ—गोशा-कोना, कार-काम, तिस्क़ान-तसल्ली ।

४२—सनद कैसी जमाल उनमें अगर है होगा खुद ज़ाहिर ।
कोई सटिफ़िकेट से खूबसूरत हो नहीं सकता ॥
शब्दार्थ—जमाल-सौन्दर्य ।

४३—बुतों के नाज पर इस अहद में लाज़िम है ख़ामोशी ।
बुरा कहते हैं हम उनको तो दस अब्दा भी कहते हैं ॥

४४—खुला दोवां मेरा तो शोरे-तहसीं बज्म में उट्ठा ।

मगर सब हो गये खामोश जब मतबे का बिल आया ॥

शब्दार्थ— शोरे तहसीं प्रशंसा का शोर, मतबा-प्रेस ।

४५—हम ऐसी कुल किताबें काबिले ज़बती समझते हैं ।

।क जिनको पढ़के लड़के बापको ख़ुबती समझते हैं ॥

४६—दाद दे रफ्तार की सुस्ता पै क्या है मौतरिज ।

आबला है पाव में और आबले में जख्म है ॥

शब्दार्थ—मौतरिज—आक्षेप करने वाला ।

४७—तुम से उस्तादां में मेरी शाइरी बेकार है ।

साथ मरंगी का बुलबुल के लिये दुशवार है ॥

४८—ये परवा जिसमें चन्द अशआर हैं इरसाले-खिदमत है ।

हमारे लख्ते-दिल हैं आप का भाले तिजारत है ॥

शब्दार्थ—इरसाले खिदमत है—सेवा में भेजता हूँ, लख्ते दिल-
दिल के टुकड़े ।

४९—बने बन्दर से हम इन्मा तरक्की इसको कहते हैं ।

तरक्की पर भी नोटिव बदनसीबी इसको कहते हैं ॥

५०—दावत भी बहुत खूब है अहबाब की खातिर ।

लेकिन जो 'एंडाटर' हो तो मज़मून है अच्छा ॥

शब्दार्थ—अहबाब-मित्रगण ।

५१—मवरिख-और सूफी में यही है फर्क अय अकबर ।

कि वो ममरूफे-माज़ी है और इसको हाल आता है ॥

शब्दार्थ—मवरिख-इतिहास-लेखक, माज़ी-भूत, हाल-ईश्वर प्रेम में
तन्मय हो जाना, इस शब्द का अर्थ वर्तमान भी है ।

५२—गुनाहों से न बाज आयगी और बस्ती से भागेगी ।

जहन्नुम से सिवा ताऊन से ये कौम डरती है ॥

५३—वो कभी मुझको जवाबे-नामा लिखता ही नहीं ।

जब गिला करता हूँ कह देता है पहुँचा ही नहीं ॥

शब्दार्थ—जनाबे नामा पत्र का उत्तर, गिला-शिकायत ।

५४—उनके हुस्न अपनी ज़रूरत पै नज़र करते हैं ।

गो खुशामद है बुरी चीज मगर करते हैं ॥

५५—जलवये-रफतार-जानां है नमूना हश्र का ।

हक वजानिब है जो है जाहिद को धड़का हश्र का ॥

५६—किस्मत का नाम लेकर अब भी गिला है जायज़ ।

लेकिन उसी को बी० ए० एम० ए० जो हो चुका हो ॥

५७—ये न पूछो मुझसे ये क्यों है और ऐसा क्यों नहीं ।

शेख ये सोचो तुम्हारे पास पैसा क्यों नहीं ॥

५८—वो मनाने में भा बनाते हैं ।

कहते हैं मान जावो मनसा राम ॥

५९—मैं बहुत अच्छा हूँ जी हां कद्रदानों आपकी ।

गैर पर फिर क्यों है इतनी मेहरबानी आपकी ॥

६०—हम क्या करें अहवाब क्या कारे-नुमायां कर गये ।

बी० ए० हुवे नौकर हुवे पेन्शन मिला फिर मर गये ॥

शब्दार्थ—कारे-नुमाया-उल्लेखनीय कार्य ।

६१—काफी अगरचे लेटने को एक पलंग है ।

उंगड़ाइयों को अरजे-दुनिया भी तंग है ॥

६२—क्योंकर न शेरे-अकबर आये पसन्द सब का ।

ये रंग ही नया है कूचा हाँ दूमरा है ॥

परिशिष्ट ।

/—:०:—

गान्धीनामा ।

दौरे^१-गदू^२ में नया हर रोज़ एक हन्गामा^३ है ।

शाहनामा हो चुका अब दौरे-गांधी नामा है ॥

बहुत से मनुष्य अस्वयं के सिद्धान्त पर चलने में अपनी असमर्थता दिखाते हुवे कहते हैं:—

जाहो^४ जर^५ के रहे इङ्गलिश से हमेशा तालिब^६ ।

अहदे^७ पीरी^८ में बदल सकते हैं क्योंकर क़ालिब^९ ॥

मुश्तहिर^{१०} करदे ये 'हमदम'^{११} में जनाबे-'बालिब'^{१२}

उम्र भर दिल पे रहा इश्क़ मिसों का ग़ालिब ।

आखिरी वक्त में क्या खाक मुसल्मां होंगे ॥१॥

कूचये^{१३}-सरविसे^{१४}-इङ्गलिश में रहे हम साकिन ।

जाहो-ज़र ही की तमन्ना में फटे ज़ीस्त के दिन ॥

वाज़े^{१५}-गान्धी से बदल सकते हैं क्योंकर बातिन ।

१ चक्र २ आकाश ३ भगड़ा ४ फारसी की प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें फारस के बादशाहों का वृत्तान्त है ५ ऐश्वर्य ६ धन ७ इच्छुक ८ समय ९ बुढ़ापा १० शरीर ११ प्रकाशित १२ उर्दू का साप्ताहिक पत्र १३ हमदम सम्पादक

१४ मौहल्ला १५ नौकरी १६ रहने वाले

उम् मारी तो कटी इश्के-बुतां में 'मौमिन' ॥
 आखिरी वक्त, में क्या खाक सुल्मा होंगे ॥२॥
 एक महाशय कहते हैं:—
 ये दाल लबे गङ्ग कभी गल नहीं सकती ।
 कल्लू के पटाखे से बला टल नहीं सकती ॥
 कतिपय सज्जन महात्मा गान्धी के इस उपदेश हर हंसते हैं:—
 न साहब को मारो न साहब से भागो ।।
 मचाते रहो गुल पिटो और मांगो ॥
 कोई कवि कहता है:—
 तहमद् और धोती बहुत तङ्ग आई थी पतलून में ।
 लेकिन अब पतलून ढीली है इसी मज़मून में ॥
 किन्तु सम्भव यह है:—
 अंग्रेज़ कवी^१ भी हैं सरफगज^२ भी है ।
 तदबीरो-इल्मो फ़न मैं मुमताज़^३ भी हैं ॥
 बाबू को नचा दिया जो चाची देकर ।
 इससे ये खुला कि दिल्लगीबाज़ भी हैं ॥
 कुछ लोग असहयोग के सिद्धान्त को व्यर्थ समझते हैं:—
 चश्मे^४—शाइर में बहुत दिलकश^५ है गो वो भी मगर ।
 आपकी आंखों के आगे ज़िक्के—नरगिस^६ क्या करें ॥
 ज़ारे—बाजू जब नहीं है जब नहीं तेगो^७—तुफन्ग^८ ।
 मरनगू^९ खामे ' ' से फिर कागज़ पै घिस क्या करें ॥

१ बलवान, २ सुविख्यात, ३ ऊँचे दर्जे पर, ४ आंख, ५ चित्ता-
 कषक, ६ एक फूल का नाम, ७ तलवार, ८ बन्दक, ९ नीचे कि ये
 हूवे, १० लेग्वनी.

